04 - सभ्य भारत की भरत पीड़ा से उपजे सवाल

05 - राष्ट्र-निर्माताओं की साझा विरासत

A Daily News Magazine
इंदौर
शनिवार, 04 जुलाई, 2026

06 - भारत का पथ आलोकित करती ज्योति

07 - जिले में प्रारंभ हुआ मूंग उपार्जन का कार्य

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 272, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

जब चारों तरफ़ घिरा था अँधेरा
इतना कि हाथ को सूझ नहीं रहा था हाथ

तब ज़रूरी हो गया था
नीम अँधेरे में तलाश का नया प्रकाश
लाना
यानि एक हाथ से दूसरे हाथ को मजबूती
से थामना

जब चारों तरफ़ घिरा था अँधेरा
तब बहुत लाज़मी था
दोनों हाथों की बँधी मुट्ठी से
घने अँधेरे की लौह दीवारों पर लगातार
आक्रमण

मुमक़िन था
और यक़ीनन बहुत मुमक़िन था
बेशक़ टूटेंगी घनघोर अँधेरे की दीवार
एक दिन
दबीं हुईं चीख़ों के खुलासे होंगे
बिलाशक़
आक्रमण से चोटिल
बँधी मुट्ठियों के रिसे रक्त के निशानात
ज़रूर दर्ज होंगे इतिहास में

कि एक वक़्त नीम अँधेरा था
जब सूझ नहीं रहा था हाथ को हाथ
तब एक हाथ ने तलाशा था अपना ही
दूसरा हाथ
कसकर बाँधी थीं मुट्ठियाँ
क़ैद चीख़ों का हुआ था खुलासा

यह काम सबसे पहले उस आदमी ने
किया था
अत्याचार के ख़िलाफ़
जिसने डरना छोड़ दिया था!

– वसंत सकरगाए

प्रसंगवश

क्या हम विकास और विनाश में संतुलन साध पाएंगे?

ललित गर्ग

वेनेजुएला में हाल में आए भीषण भूकम्प ने केवल एक देश को नहीं, बल्कि पूरी मानवता को झकझोर दिया है। मृतकों और लापता लोगों की संख्या समय के साथ बदलती रही हो, लेकिन त्रासदी की भयावहता निर्विवाद है। हजारों परिवार अपने प्रियजनों को खोने की असहनीय पीड़ा से गुजर रहे हैं। ऐसे प्रत्येक अवसर पर पूरी दुनिया संवेदना व्यक्त करती है, राहत सामग्री भेजती है, सहायता अभियान चलाती है, लेकिन एक प्रश्न बार-बार हमारे सामने खड़ा हो जाता है-क्या हम हर बड़ी आपदा से कोई स्थायी सबक सीखते हैं या फिर कुछ दिनों की चर्चा और शोक के बाद सब कुछ भुलाकर पुनः उसी लापरवाह विकास-यात्रा एवं प्रकृति की घोर उपेक्षा पर निकल पड़ते हैं? प्राकृतिक आपदाएं कभी कैलेंडर देखकर नहीं आतीं। वे न देश चुनती हैं, न मौसम और न समय। जब धरती कांपती है, नदियां उफान पर आती हैं, पहाड़ दरकते हैं या समुद्र विकराल रूप धारण कर लेता है, तब विकास के बड़े-बड़े दावे, ऊंची-ऊंची इमारतें और तकनीकी उपलब्धियों का अहंकार कुछ ही क्षणों में धराशायी हो जाता है। ऐसे समय में किसी देश की वास्तविक शक्ति उसकी आर्थिक समृद्धि नहीं, बल्कि उसकी पूर्व तैयारी, संवेदनशील शासन व्यवस्था और जागरूक नागरिक होते हैं।

वेनेजुएला की त्रासदी ने एक सकारात्मक पक्ष भी सामने रखा। आधुनिक तकनीक ने कुछ क्षेत्रों में लोगों को भूकम्प के झटके महसूस होने से कुछ सेकंड पहले चेतावनी दी। सुनने में यह समय बहुत कम प्रतीत होता है, लेकिन आपदा की घड़ी में यही कुछ सेकंड जीवन और मृत्यु के बीच की दूरी तय कर सकते हैं। विज्ञान इस दिशा में निरंतर प्रगति कर रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे प्रारंभिक चेतावनी तंत्र अधिक सटीक, अधिक तेज और अधिक व्यापक बनाए जाएं, ताकि अधिक से अधिक लोगों का जीवन सुरक्षित रह सके। भारत के लिए यह विषय केवल एक अंतरराष्ट्रीय समाचार नहीं है। हमारा देश स्वयं भूकम्प, बाढ़, भूस्खलन, बादल फटने, चक्रवात और सुनामी जैसी अनेक प्राकृतिक आपदाओं का दंश झेलता रहा है। इन सभी घटनाओं का एक ही संदेश है-प्रकृति को कभी हल्के में नहीं लिया जा सकता।

वैज्ञानिक आज भी यह निश्चित रूप से नहीं बता सकते कि किस दिन, किस समय और किस स्थान पर भूकम्प आएगा, लेकिन वे वर्षों से यह चेतावनी अवश्य देते रहे हैं कि भारत का लगभग साठ प्रतिशत भूभाग किसी न किसी स्तर के भूकम्पीय जोखिम वाले क्षेत्र में आता है। हिमालयी क्षेत्र, दिल्ली-एनसीआर, उत्तर-पूर्व, गुजरात और अनेक अन्य क्षेत्र विशेष रूप से संवेदनशील माने जाते हैं। इसका अर्थ स्पष्ट है कि यदि भूकम्प की सटीक भविष्यवाणी संभव नहीं है, तो भी पूर्व तैयारी पूरी तरह संभव है। दुर्भाग्य यह है कि हम तैयारी की अपेक्षा आपदा के बाद राहत और पुनर्वास पर अधिक ध्यान देते हैं। आज देश के लगभग हर शहर में कंक्रीट के विशाल जंगल तेजी से खड़े हो रहे हैं। लेकिन सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या इन भवनों की मजबूती केवल सामान्य परिस्थितियों के लिए है या किसी बड़ी प्राकृतिक आपदा का सामना करने के लिए भी?

भारत में भूकम्परोधी निर्माण के लिए मानक और नियम मौजूद हैं। भारतीय मानक ब्यूरो ने स्पष्ट दिशानिर्देश निर्धारित किए हैं। समस्या नियमों की कमी नहीं, बल्कि उनके अनुपालन की है। क्या प्रत्येक बहुमंजिला इमारत वास्तव में उन्हीं मानकों के अनुरूप निर्मित हो रही है? क्या निर्माण सामग्री की गुणवत्ता की निष्पक्ष जांच होती है? क्या निर्माण के बाद संरचनात्मक सुरक्षा का स्वतंत्र परीक्षण किया जाता है? यदि इन प्रश्नों का उत्तर पूरी तरह संतोषजनक नहीं है, तो चिंता स्वाभाविक है।

निर्माण क्षेत्र में बढ़ती अनियमितताओं और भ्रष्टाचार ने स्थिति को और गंभीर बनाया है। नोएडा में अवैध रूप से निर्मित सुपरटेक ट्विन टावरों को सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर ध्वस्त किया जाना इस बात का प्रतीक है कि किस प्रकार नियमों की अनदेखी कर निर्माण कार्य किए जाते रहे हैं। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि यदि कोई निर्माण अवैध था, तो उसे बनने की अनुमति किसने दी? निर्माण पूरा होने तक प्रशासन मौन क्यों रहा? क्या विकास के नाम पर कुछ लोगों के आर्थिक लाभ के लिए लाखों नागरिकों के जीवन को जोखिम में डाला जा सकता है? यह केवल कानूनी प्रश्न नहीं, बल्कि नैतिक प्रश्न भी है। एक अन्य गंभीर चिंता जलवायु परिवर्तन और प्रकृति के साथ बढ़ती छेड़छाड़ की है। पहाड़ों को काटकर सड़कें बनाना, नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को बाधित करना, जंगलों का अंधाधुंध विनाश, अतिक्रमण, खनन और अनियोजित शहरीकरण ने प्रकृति के संतुलन को गहराई से प्रभावित किया है। परिणामस्वरूप भूस्खलन, अचानक बाढ़, शहरी जलभराव और जंगलों में आग की घटनाएं बढ़ रही हैं। हिमालयी क्षेत्रों में बार-बार आने वाली त्रासदियां हमें चेतावनी दे रही हैं कि विकास का मॉडल प्रकृति-विरोधी नहीं, बल्कि प्रकृति-संगत होना चाहिए। यह मान लेना भी खतरनाक है कि जिस क्षेत्र में पहले कभी बड़ा भूकम्प नहीं आया, वहां भविष्य में भी खतरा नहीं होगा। धरती के भीतर क्या हलचल चल रही है, इसका पूरा रहस्य आज भी मानव नहीं जान पाया है। अत्यधिक वर्षा, शहरी बाढ़, तेज हवाएं, तापमान में वृद्धि और अन्य प्राकृतिक चुनौतियों को भी नगर नियोजन का हिस्सा बनाना होगा। भविष्य के शहरों को बहुस्तरीय सुरक्षा की अवधारणा के आधार पर विकसित करना समय की मांग है। आपदा आने के बाद राहत और पुनर्वास पर हजारों करोड़ रुपये खर्च करने की अपेक्षा पहले से सुरक्षा पर निवेश करना कहीं अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण और मानवीय दृष्टिकोण है। सरकारों के साथ साथ नागरिकों को भी आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूक होना होगा। विद्यालयों, कार्यालयों और आवासीय परिसरों में नियमित मॉक ड्रिल आयोजित की जानी चाहिए। आधुनिक चेतावनी प्रणालियों को गांवों तक पहुंचाया जाना चाहिए।

प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता, लेकिन उनसे होने वाली तबाही को काफी हद तक कम अवश्य किया जा सकता है। इसके लिए वैज्ञानिक अनुसंधान, आधुनिक तकनीक, मजबूत निर्माण मानक, कठोर निगरानी, पारदर्शी प्रशासन और जागरूक नागरिकों का समन्वित प्रयास आवश्यक है। प्रकृति कभी यह नहीं पूछती कि इमारत कितनी महंगी है, किस बिल्डर ने बनाई है या वह किस शहर में खड़ी है। वह केवल उसकी मजबूती और मानव की दूरदर्शिता की परीक्षा लेती है। वेनेजुएला का भूकम्प एक चेतावनी है-विकास की परिभाषा बदलने की। विकसित राष्ट्र वह नहीं होगा जिसके पास सबसे ऊंची इमारतें हों, बल्कि वह होगा जिसके पास सबसे सुरक्षित इमारतें, सबसे जिम्मेदार नगर नियोजन, सबसे संवेदनशील शासन और सबसे सजग नागरिक हों। क्योंकि आपदा आने के बाद राहत देना व्यवस्था की मजबूरी होती है, लेकिन आपदा आने से पहले तैयारी करना एक दूरदर्शी राष्ट्र की संस्कृति और जिम्मेदार शासन की पहचान है।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

उफान पर शिप्रा नदी, रामघाट पर डूबे कई मंदिर

प्रदेश में भारी बारिश का दौर

सहायक सचिव बहा, पांढुर्णा में नदी बहा ले गई कच्चे मकान ,बालाघाट में घरों, बड़वानी में मंदिर में घुसा पानी,हरदा में 12 गांवों का संपर्क टूटा, नर्मदापुरम में सड़कें डूबीं; भोपाल समेत 26 जिलों में बारिश

भोपाल (नप्र)। 9 दिन की देरी से आया मानसून पूरे मध्य प्रदेश में छा गया है। भोपाल में सुबह से रुक-रुककर बारिश हो रही है। उज्जैन और आसपास के इलाकों में बीती रात तेज पानी गिरा। इससे शिप्रा नदी के घाट पर कई मंदिर पानी में डूब गए। वहीं, गांवड़ी लोढ़ा गांव में गुरुवार रात करीब 8 बजे सहायक सचिव सूर्य प्रताप सिंह सोनगरा बाइक समेत खंती में बह गए। उनकी तलाश जारी है। ,बालाघाट घरों, बड़वानी में मंदिर में घुसा पानी,हरदा में 12 गांवों का संपर्क टूट गया।, नर्मदापुरम में सड़कें डूबीं थी, भोपाल समेत 26 जिलों में बारिश का दौर जारी थी।

इससे पहले जगोटी गांव में तेज बहाव के बीच पुलिया पार करने की कोशिश में केशु आंजना मोटरसाइकिल समेत बह गया। हालांकि, कुछ दूर पेड़ की टहनियों को पकड़कर वह पानी से बाहर आ गया। इसका वीडियो भी सामने आया है। इंदौर के अहीरखेड़ी में बुधवार रात को बहे महेश चौहान का शव करीब 36 घंटे बाद सिरपुर तालाब में मिला। उधर, पांढुर्णा में बारिश के चलते नदी किनारे बने 5 कच्चे मकान ढह गए। नदी के तेज बहाव में 3 बकरियों समेत घरेलू सामान बह गया। खरगोन के कसरावद इलाके में शुक्रवार सुबह 2 घंटे तक तेज बारिश हुई। सड़कों और खेतों में पानी भर गया। बालाघाट के 12 से ज्यादा वार्डों में जलभराव की स्थिति बन गई।ग्वालियर में भी शुक्रवार सुबह तेज बारिश हुई। रतलाम में शिवपुर गांव के खेतों में पानी भर गया।

एमपी में अगले 72 घंटे भारी! इन जिलों में तेज आंधी-बारिश मचाएगी तांडव,जारी किया रेड और ऑरेंज अलर्ट

मध्य प्रदेश में दक्षिण-पश्चिम मानसून पूरी तरह सक्रिय हो चुका है, जिसके चलते राज्य के कई हिस्सों में झमाझम बारिश और तेज आंधी का दौर जारी है। मौसम विभाग ने आगामी 72 से 96 घंटों अर्थात् अगले चार दिन के लिए प्रदेश में भारी से अति भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। मौसम के इस बदले मिजाज को देखते हुए राज्यभर में रेड, ओरेंज और येलो अलर्ट जारी कर दिया गया है। जहां एक तरफ इस बारिश से भीषण गर्मी से राहत मिली है और किसानों के चेहरे खिल उठे हैं, वहीं दूसरी तरफ आकाशीय बिजली गिरने और तेज हवाओं से जनजीवन प्रभावित होने की आशंका बढ़ गई है।

19 जिलों में हैवी रेन का अनुमान- मौसम विभाग के मुताबिक, आज खंडवा और हरदा में अति भारी बारिश का रेड अलर्ट है जबकि धार, बड़वानी, खरगोन, देवास, बुरहानपुर और बैतूल में अति भारी बारिश हो सकती है। अगले 24 घंटे में यहां 4 से 8 इंच तक पानी गिरने का अनुमान है।

टीकमगढ़ में बाइक सवार पानी से भरे गड्ढे में गिरा

टीकमगढ़ में पिछले 24 घंटे के दौरान 45 मिलीमीटर यानी डेढ़ इंच से ज्यादा बारिश हो गई।इस दौरान एक युवक निर्माणाधीन सड़क के गड्ढे में बाइक सहित गिर गया। आसपास मौजूद लोगों ने उसे बाहर निकाला।

बालाघाट में गढ़ी-चिल्पी स्टेट हाईवे पर पुलिया क्षतिग्रस्त, ट्रैफिक रोका

बालाघाट में बारिश के कारण कान्हा टाइगर रिजर्व के कोर जोन अंतर्गत गढ़ी-चिल्पी स्टेट हाईवे पर पुरानी पुलिया क्षतिग्रस्त हो गई है।प्रशासन ने इस रोड से चार पहिया वाहनों के गुजरने पर अगले आदेश तक प्रतिबंध लगा दिया है।

किसानों से सीधे संवाद के लिए राजधानी से लेकर मैदानी स्तर तक किये जायें कार्यक्रम आयोजित : मुख्यमंत्री

खेती की लागत कम करना और किसानों की आय बढ़ाना हमारी प्राथमिकता

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि किसानों का कल्याण राज्य सरकार का कर्तव्य है। खेती की लागत कम करने और किसानों की आय बढ़ाने के लिए गतिविधियों को प्राथमिकता पर लिया जाना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष घोषित किया गया है। कृषकों के हित संवर्धन के लिए लागू कार्यक्रमों और योजनाओं का क्रियान्वयन मिशन मोड में किया जाए। किसानों से सीधे संवाद के लिए राजधानी से लेकर मैदानी स्तर तक कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। दुग्ध उत्पादन किसानों की आय बढ़ाने के लिए विशेष रूप से सहायक है। किसानों को उन्नत नस्ल की गाय उपलब्ध कराने में निजी संस्थाओं का सहयोग भी लिया जाए।

सहकारी समितियों की प्रक्रियाओं का डिजिटलाइजेशन हो

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसानों को कम पानी और अल्प अवधि की फसलों के लिए जागरूक किया जाए। फसल चक्र में परिवर्तन और प्राकृतिक व जैविक खेती के प्रोत्साहन के लिए वातावरण बनाना आवश्यक है। खेती-किसानी से जुड़े स्थानीय पर्व और त्यौहारों तथा फसल चक्र के अनुसार किसानों से संवाद स्थापित किया जाए। सुगमता और सरलता सुनिश्चित करते हुए सहकारी समितियों की प्रक्रियाओं का डिजिटलाइजेशन किया जाए।

सभी जिलों में बलराम कृषि महोत्सव और संभागीय मुख्यालयों पर होंगे फूड फेस्टिवल

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में हुई बैठक में जानकारी दी गई कि ऑनलाईन किसान क्रेडिट कार्ड पोर्टल और किसानों के लिए ई-पासबुक सुविधा का शुभारंभ जुलाई माह में ही किया जाएगा। राज्य स्तरीय सहकारिता सम्मेलन का आयोजन भी होगा। उत्कृष्ट कार्य करने वाले मैदानी कार्यकर्ताओं तथा पशुपालकों को पुरस्कृत और सम्मानित करने के लिए उज्जैन में राज्य स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन होगा। प्रदेश के सभी जिलों में बलराम कृषि महोत्सव आयोजित किए जाएंगे।

अब पंजाब कांग्रेस में बगावत, टूट संभव

- चन्नी गुट बोला-राजा वड़िंग प्रधान मंजूर नहीं
- हाईकमान दोबारा सोचे,एक सांसद शाह से मिले

लुधियाना (एजेंसी)। बंगाल की तृणमूल कांग्रेस के बाद अब पंजाब कांग्रेस में टूट के आसार हैं। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष न बनाए जाने से नाराज पूर्व सीएम और जालंधर सांसद चरणजीत सिंह चन्नी ने मोर्चा खोल दिया है। उन्होंने अपने घर मोरिंडा में कांग्रेस नेताओं के साथ इमरजेंसी मीटिंग की। इसमें 3 मौजूदा विधायक समेत 50 नेता शामिल हुए। मीटिंग के बाद एमएलए तृप्त राजिंदर बाजवा ने कहा कि सभी ने चन्नी से कहा कि वो हाईकमान से बात करें। वो चाहते हैं पंजाब में कांग्रेस की सरकार बने। हाईकमान से कोई लड़ाई नहीं है। जो फैसला लिया गया है उससे नाराजगी है।

मोदी सरकार में होगी बिहार से कुछ नए मंत्रियों की एंट्री

अब मिलेगा विवेक ठाकुर और मनन मिश्रा को मौका!

पटना (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कैबिनेट की सूरत पूरी तरह नहीं पर बदलने वाली है। पीएम मोदी के आसपास बैठने वाले कुछ चेहरे हटेंगे तो कुछ नए चेहरे आयेंगे। पर इस बदलाव में कौन नया चेहरा मंत्रिपरिषद में शामिल होगा और कौन नामचीन चेहरा मंत्रिपरिषद से बाहर होगा, यह कहना उतना आसान नहीं, जितनी रिपोर्ट मीडिया का स्पेस ले रही हैं। इस चर्चा में बिहार भी शामिल है।

बिहार से फेर बदल की गुंजाइश कम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के कार्य करने के तरीकों पर नजर डाले तो इस बार मंत्रिमंडल विस्तार को ले कर बिहार को लेकर किसी फेरबदल की गुंजाइश काफी कम है।बिहार से कुल आठ मंत्री में चार मंत्री तो गठबंधन दल के हैं।तीन तो पार्टी के बड़े चेहरे हैं। यहां पीएम नरेंद्र मोदी कुछ नहीं थोप पाएंगे।ऐसे में जदयू के केंद्रीय मंत्री ललन सिंह और रामनाथ ठाकुर के मंत्रिपरिषद से हटने का खतरा नहीं है। नीतिश कुमार के केंद्रीय मंत्री बनने को ले कर जो चर्चा का बाजार गर्म है ,उसमें कोई तार्किक बात निकल कर सामने नहीं आई।वैसे भी मुख्यमंत्री पद पर लगातार बने रहने का रिकॉर्ड इनके नाम हैं।वैसे में केंद्रीय मंत्री का पद उनकी राजनीतिक कद के मुताबिक तो नहीं ही है।

सरकारी कामकाज को लेकर एक्शन में थलपति विजय

- विभागवार समीक्षा बैठक कर अधिकारियों से मांगा प्लान

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री थलपति विजय सरकार के कामकाज को लेकर एक्शन मोड में हैं।सीएम विजय ने विभाग-वार समीक्षा बैठकों की एक बड़ी सीरीज शुरू की है।इसका मकसद शॉर्ट-टर्म और लॉन्ग-टर्म गवर्नेंस रणनीतियां तैयार करना है।अधिकारियों को हर विभाग के लिए एक साल, तीन साल और पांच साल के व्यापक ऐक्शन प्लान बनाने का काम सौंपा गया है।22 जुलाई तक चलने वाली इस समीक्षा प्रक्रिया में मुख्य सरकारी विभागों के कामकाज का आकलन करने, लागू करने में आने वाली चुनौतियों की पहचान करने और आने वाले वर्षों में सर्विस डिलीवरी को बेहतर बनाने के लिए मापने योग्य लक्ष्य तय करने की उम्मीद है।दिन की पहली बैठक कोऑपरेशन, फूड और कंज्यूमर प्रोटेक्शन डिपार्टमेंट पर केंद्रित थी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शनिवार, 04 जुलाई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

दोषियों को कड़ी सजा मिले, करोड़ों भक्तों का भरोसा बचाना जरूरी

● राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले में आ गया आरएसएस का पहला बयान ● दत्तात्रेय होसबाले बोले-अभी जो उलझन और अनिश्चितता है वह दूर हो

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने शुक्रवार को पहली बार बयान दिया। सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने कहा- रामलला मंदिर में रखे दानपात्रों में जमा राशि की चोरी दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे रामभक्तों की भावनाओं और श्रद्धा को आघात पहुंचा है। उनका भरोसा बचाना जरूरी है। स्पेशल इन्वेस्टीगेशन टीम जांच में जो भी दोषी पाए जाएंगे, उन्हें कठोर दंड मिलना चाहिए। दत्तात्रेय होसबाले ने कहा कि करोड़ों रामभक्तों के समर्पण, त्याग और बलिदान से भव्य राम मंदिर बना है। ट्रस्ट

मंदिर के प्रबंधन और संचालन व्यवस्था में मौजूद सभी कमियों को दूर करने के लिए प्रभावी कदम उठाए। करोड़ों रामभक्तों की आस्था और विश्वास को बनाए रखने के लिए वित्तीय प्रबंधन,संचालन प्रणाली और व्यवस्था पूरी तरह पारदर्शी होनी चाहिए।

● **कटियार बोले-जेल जा सकते हैं चंपत राय-अनिल मिश्रा -** अयोध्या राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले को लेकर भाजपा नेता विनय कटियार ने शुक्रवार को कहा कि यह साफ है कि पैसों का गबन हुआ है। ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय, ट्रस्टी डॉ. अनिल मिश्रा और आमंत्रित ट्रस्ट सदस्य गोपाल राव किसी कारण से बच गए, जेल नहीं गए। हो सकता है कि आगे जेल जाएं। उन्होंने अयोध्या में न्यूज एजेंसी से कहा- मामले को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से रात 2 बजे बात हुई। पीएम ने पूछा- अरे भाई, क्या-क्या होगा अब। मैंने उनसे कहा- कुछ नहीं, सब ठीक हो जाएगा। इधर, स्पेशल इन्वेस्टीगेशन टीम दूसरे दिन जांच के लिए मंदिर पहुंच गई है। सूत्रों के मुताबिक, टीम गोपाल राव से पूछताछ कर रही है। वहीं, आरोपी अविनाश शुक्ला को पुलिस ने कस्टडी में ले लिया है।

संक्षिप्त समाचार

तीसरे शख्स को पता थी केतन अग्रवाल के मर्डर की प्लानिंग

● पुणे हत्याकांड में दावा-सिया-चेतन ने उसे बताया था

पुणे (एजेंसी)। पुणे के केतन अग्रवाल हत्याकांड में नया खुलासा हुआ है। सूत्रों के मुताबिक, पुलिस ने बीड से एक युवक को हिरासत में लिया है। यह

युवक बालेवाड़ी की एक कंपनी में काम करता है। दावा है कि तीसरा शख्स सिया या केतन में किसी एक का दोस्त है। दोनों ने उससे केतन के मर्डर की प्लानिंग शेयर की थी। हालांकि युवक का नाम अभी तक सामने नहीं आया है। पुलिस युवक को गवाह भी बना सकती है।

जनगणना ड्यूटी निभाने वाले शिक्षकों ने मांगा अधिकार, कार्रवाई नहीं हुई तो आंदोलन की चेतावनी

बैतूल। जनगणना के प्रथम चरण का कार्य ग्रीष्मावकाश में पूरा करने वाले प्रगणकों एवं सुपरवाइजरों (शिक्षकों) ने अपने वैधानिक अधिकारों को लेकर आवाज बुलंद कर दी है। मध्यप्रदेश राज्य कर्मचारी संघ के जिला अध्यक्ष सचिन राय के नेतृत्व में कर्मचारियों ने चिचोली तहसीलदार के नाम ज्ञापन सौंपकर अर्जित अवकाश सेवा पुस्तिका में दर्ज करने, लंबित मानदेय का शीघ्र भुगतान कराने तथा जनगणना कार्य पूरा होने तक स्थानांतरण पर रोक लगाने की मांग की। ज्ञापन में बताया गया कि मध्यप्रदेश शासन एवं भारत सरकार के प्रावधानों के अनुसार ग्रीष्मावकाश के दौरान जनगणना कार्य करने वाले प्रगणकों एवं सुपरवाइजरों को नियमानुसार अर्जित अवकाश (अर्न्ड लीव) का लाभ दिया जाना है, लेकिन अब तक संबंधित कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं में इसका उल्लेख नहीं किया गया है। इसके अलावा जनगणना के प्रथम चरण का कार्य पूर्ण होने के बावजूद अब तक देय मानदेय का भुगतान भी लंबित है। कर्मचारियों ने यह मांग भी उठाई कि जिन प्रगणकों एवं सुपरवाइजरों को जनगणना कार्य का दायित्व सौंपा गया है, उनके स्थानांतरण आदेश जारी होने की स्थिति में भी उन्हें कार्य से मुक्त नहीं किया जाए तथा जनगणना का कार्य पूर्ण होने तक उनके स्थानांतरण पर रोक लगाई जाए। संगठन का कहना है कि राष्ट्रीय महत्व के इस कार्य के दौरान कर्मचारियों के तबादले से कार्य की निरंतरता और गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

10वीं की छात्रा ने सल्फास खाकर जान दी

परिजन बोले- पढ़ाई में कमजोर होने के कारण तनाव में थी

छतरपुर (नप्र)। छतरपुर जिले में 15 वर्षीय एक नाबालिग छात्रा ने जहरीला पदार्थ सल्फास खाकर आत्महत्या कर ली। परिजन उसे गंभीर हालत में जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जानकारी में परिजनों ने पढ़ाई के दबाव और मानसिक तनाव को इसका कारण बताया है, हालांकि मौत के वास्तविक कारणों की पुष्टि जांच के बाद ही होगी। मृतका की पहचान नंदिनी अहिरवार (15) पिता बालादीन अहिरवार के रूप में हुई, जो ग्राम गुरैया, थाना सिविल लाइन की निवासी थी। वह गांव के सरकारी स्कूल में कक्षा 10वीं की छात्रा थी। बताया गया है कि उसने घर में रखा सल्फास खा लिया, इसके बाद उसकी तबीयत बिगड़ गई। परिजन उसे तत्काल जिला अस्पताल ले गए, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मामले की जांच कर रहे सिविल लाइन थाना के एएसआई सीताराम अहिरवार ने बताया कि मृतका की मां के अनुसार, नंदिनी पढ़ाई में कमजोर थी। परिवार पढ़ाई पर ध्यान देने के लिए समझाता था, इससे वह मानसिक तनाव में रहती थी। आशंका है कि इसी के चलते उसने यह कदम उठाया। पुलिस ने शुक्रवार को महिला डॉक्टर की मौजूदगी में पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया है।

हिमाचल से एमपी तक 'झमाझम' शुरुआत

उज्जैन में क्षिप्रा में बाढ़, किन्नौर में लैंडस्लाइड

गुजरात में बच्चे पानी में बहे, कई गाड़ियां दबीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के किन्नौर में गुरुवार रात भारी बारिश हुई। किन्नौर के चोलिंग में बारिश के बाद मलबा नेशनल हाईवे पर आ गया। दो गाड़ियां दब गई। राज्य में 49 सड़कें बंद हैं। इधर, यूपी में शुक्रवार सुबह 3 बजे लखनऊ, बाराबंकी, उन्नाव, जालौन समेत 5 शहरों में बारिश हुई। उन्नाव में पानी घरों में घुस गया। गुजरात के वलसाड में सड़कें पानी में डूब गईं, गाड़ियां चलते-चलते बंद हो गईं। जामनगर में दो बच्चे पानी में बह गए, स्थानीय लोगों ने उन्हें बचाया। मध्य प्रदेश में मानसून 9 दिन में ही पूरे प्रदेश में छा गया। धार, बड़वानी, खरगोन और देवास में अगले 24 घंटे में 4 से 8 इंच तक बारिश का अनुमान है। उज्जैन में क्षिप्रा नदी का जलस्तर बढ़ने से राम घाट के पास मंदिर डूब गए।

● **राजस्थान में तेज हवा के साथ झमाझम बारिश-** बिहार में 50-60 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से तेज आंधी चल सकती है। मध्य प्रदेश, ओडिशा, पूर्वी राजस्थान और तमिलनाडु समेत कई राज्यों में तेज हवा चलेगी। राजस्थान में 30-40 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से तेज हवाओं के साथ बारिश का अनुमान है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में हीटवेव जारी रहेगी। मध्य प्रदेश में बारिश का दौर जारी रहेगा। शुक्रवार को खंडवा और हरदा में भारी बारिश का रेड अलर्ट है जबकि धार, बड़वानी, खरगोन में ग्रीन अलर्ट है।

मानसून 3 दिन देरी से आया, पूरा देश कवर करेगा

मानसून ने 1 जून की जगह 3 दिन लेट 4 जून को भारत में एंट्री ली थी। इस दौरान कई राज्यों में मानसून की रफ्तार धीमी पड़ गई थी। बीच-बीच में ब्रेक मानसून जैसी स्थिति बनने से यह आशंका जताई जाने लगी थी कि इस बार मानसून पूरे देश को सामान्य समय से देर से कवर करेगा। हालांकि, जुलाई की शुरुआत में बंगाल की खाड़ी में बने मौसम तंत्र और अनुकूल परिस्थितियों के कारण मानसून ने फिर रफ्तार पकड़ ली। मौसम विभाग के अनुसार, 5 जुलाई तक मानसून पूरे देश को कवर कर लेगा।

अमरनाथ यात्रा शुरू

● पहले दिन 9 हजार ने किए दर्शन, हर 2 किमी पर ऑक्सीजन बूथ ● बालटाल रूट पर 12 जगह वाटरप्रूफ डोम बनाए, चार जगह स्क्रीन

जम्मू (एजेंसी) 57 दिन की अमरनाथ यात्रा शुक्रवार से शुरू हो गई। यात्रा का पहला जत्था गांदरबल जिले के बालटाल और अनंतनाग जिले के पहलगाम (नुनवान) बेस कैंप से बाबा बर्फानी के दर्शन के लिए रवाना हुआ। इस जत्थे में 4,822 श्रद्धालु शामिल हैं। ये सभी श्रद्धालु गुरुवार को बेस कैंप में पहुंचे थे। जम्मू-कश्मीर प्रशासन के मुताबिक, पहले जत्थे के श्रद्धालुओं के साथ जवान सहित कुल 9 हजार लोगों ने दर्शन किया।

● **दूसरा जत्था आज सुबह रवाना होगा-** अमरनाथ यात्रा के दूसरे जत्थे के 3,865 श्रद्धालु शुक्रवार देर शाम कश्मीर पहुंचेंगे। इनमें 1,735 श्रद्धालु 115 वाहनों से बालटाल बेस कैंप जा रहे हैं, जबकि 2,130 श्रद्धालु 86 वाहनों से पारंपरिक पहलगाम मार्ग की ओर रवाना हुए।

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय में शिक्षा संवाद का सफल आयोजन

भोपाल। बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल में उच्च शिक्षा के समग्र विकास, गुणवत्ता संवर्धन एवं छात्र हितों से जुड़े विभिन्न विषयों पर केंद्रित 'शिक्षा संवाद' कार्यक्रम का गरिमामय आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश शासन के उच्च शिक्षा मंत्री माननीय श्री इंदर सिंह परमार थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. विवेक शर्मा ने की। कार्यक्रम में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री चेतस सुखाड़िया विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

अपने उद्बोधन में माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति- के प्रभावी क्रियान्वयन के माध्यम से विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण, रोजगारोन्मुख एवं नवाचार आधारित शिक्षा उपलब्ध कराना राज्य शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। भारतीय ज्ञान एवं संस्कृति का विज्ञान से सीधा संबंध जोड़ते हुए मैंने मंत्री जी ने अपने विचार रखें उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए उनके सुझाव एवं विचार सुने तथा उच्च शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी एवं भविष्य उन्मुख बनाने पर बल दिया। विश्वविद्यालय के एवं शिक्षा क्षेत्र से विभिन्न विषयों पर शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों ,शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के सर गर्वित और सकारात्मक समाधान किया गयाद्य

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलगुरु प्रो. विवेक शर्मा ने कहा कि बरकतउल्ला विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, अनुसंधान, नवाचार एवं अकादमिक उत्कृष्टता के लिए सतत प्रतिबद्ध है। उन्होंने शिक्षा संवाद जैसे कार्यक्रमों को विद्यार्थियों एवं शासन के मध्य सार्थक संवाद का प्रभावी माध्यम बताया।

विशिष्ट अतिथि श्री चेतस सुखाड़िया ने विद्यार्थियों को राष्ट्र निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान करते हुए शिक्षा, संस्कार एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. नीरज गौर थे, जबकि आयोजन समिति के सदस्यों में प्रो. रागिनी रागिनी गोथलवाल एवं प्रोफेसर पवन मिश्रा शामिल थे। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री राहुल सिंह परिहार द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अधिष्ठातागण, विभागाध्यक्ष, प्राध्यापकगण, अधिकारी, कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन कुलसचिव डॉ. समर बहादुर सिंह द्वारा व्यक्त किए गए आभार प्रदर्शन के साथ हुआ।

प्रश्न सही होगा तो जवाब भी सटीक आयेगा - तोमर

भोपाल। प्रश्नकाल में सभी सदस्यों से यह अपेक्षा की जाती है कि कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन प्रश्नकाल को स्थगित नहीं करना चाहिए। कई बार प्रश्नकाल में पूरक प्रश्न में एक-दो मिनट तो भाषण में ही निकाल देते हैं। इससे समय भी जाया होता है और प्रश्न भी कई बार घूम जाता है। जब प्रश्न घूम जाता है तो सरकार का जवाब भी घूम जाता है। अगर सरकार से ठीक जवाब लेना है या सरकार को कटघरे में खड़ा करना है तो पूरक प्रश्न सटीक होना चाहिए। इसके लिए निश्चित रूप से विधायकों को प्रश्न के बारे में अध्ययन करना चाहिए। प्रश्न की सार्थकता विधायक की प्रतिष्ठा भी है। इसलिए प्रश्न संक्षिप्त और सार्थक हो। प्रश्न सार्थक होगा और पूरक प्रश्न सीधा व सटीक होगा तो जवाब भी सटीक आएगा और अगर सरकार के पास जवाब नहीं होगा तो सरकार निरुत्तर होगी। अगर सार्थक जवाब आएगा तो आपके कार्य की प्रशंसा होगी। इसलिए प्रश्नकाल का उपयोग हम सब लोगों को बहुत ही ध्यान पूर्वक और अच्छे तरीके से करना चाहिए। यह बात मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने कही। वे पश्चिम बंगाल विधानसभा में नए विधायकों का प्रबोधन कार्यक्रम में सरकार की जवाबदेही तय करने के लिए संसदीय प्रश्न एवं अन्य संसदीय उपकरणों की महत्ता विषय पर बोल रहे थे। कार्यक्रम में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश एवं विभिन्न राज्यों से आए पीठासीन अधिकारी, लोकसभा व विधानसभाओं के अधिकारी उपस्थित थे।

विधानसभा की कार्यवाही में भागीदारी के संबध में चर्चा करते हुए तोमर ने कहा कि विधानसभा का सत्र प्रारंभ होने के पहले क्षेत्र में भ्रमण भी होना चाहिए। अगर क्षेत्र में भ्रमण करेंगे तो समस्या से सही रूप में रूबरू होंगे। कई बार लोग हमको प्रश्न बना कर दे देते हैं। हमको भी लगता है कि प्रश्न लगाना है और बने बनाए प्रश्न मिल गए हैं तो क्यों मेहनत करें? लेकिन प्रश्न को हमें अपने हाथ से लिखना चाहिए। किसी ने चाहे कितना भी अच्छा प्रश्न लिख कर दिया हो प्रश्न हम अपने हाथ से लिखेंगे तो उसे प्रश्न के प्राण, उस की आत्मा को समझ पाएंगे। यह भी समझ आएगा कि प्रश्न किसी गलत दृष्टिकोण के आधार पर ड्राफ्ट किया गया है तो आप या तो उसे पूछोगे नहीं या उसको सही करके लगाओगे। यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि प्रश्न व्यक्ति विशेष पर केंद्रित न हो। जब व्यक्ति विशेष पर प्रश्न केंद्रित होता है तो फिर उसके गलत अर्थ भी निकलते हैं। गलत अर्थ पर जब चर्चा होती है तो विधायक की प्रतिष्ठा धूमिल होती है।

हिंदू, मुस्लिम सिख, ईसाई...

खामेनेई को भारत ने पेश की खिराज-ए-अकीदत

ईरान दे रहा अपने सुप्रीम लीडर को आखिरी विदाई

तेहरान (एजेंसी)। ईरान अपने मारे गए सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई को श्रद्धांजलि देने के लिए हफ्ते पर चलने वाला अंतिम संस्कार कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। इसमें लाखों लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। अंतिम संस्कार कार्यक्रम कल 4 जुलाई को शुरू होगा, जो 9 जुलाई को पवित्र शहर मशहद में उन्हें दफनाने के साथ पूरा होगा। मशहद खामेनेई का गृह नगर भी है। इसके पहले शुक्रवार को अली खामेनेई और उनके परिवार के कई सदस्यों के शवों को इमाम खुमैनी ग्रैड मोसाला मस्जिद में लाया गया, जहां लोगों को उन्हें श्रद्धांजलि देते देखा गया। **भारत से पहुंचे धर्मगुरुओं ने दी श्रद्धांजलि-** शुक्रवार को भारत से पहुंचे धर्म गुरुओं ने भी ईरान के सुप्रीम लीडर की श्रद्धांजलि दी। भारत में स्थित ईरानी दूतावास ने इसकी तस्वीर सोशल मीडिया पर पोस्ट की है। इसमें भगवाधारी हिंदू, पगड़ीधारी सिख धर्म गुरु श्रद्धांजलि देते नजर आए। धार्मिक नेताओं के अलावा राजनेता और सिविल सोसाइटी के प्रतिनिधिमंडल ने भी खामेनेई को श्रद्धांजलि दी। जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती और कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद ने भी खिराज-ए-अकीदत पेश की। उनके साथ ईसाई और हिंदू धर्म गुरु भी नजर आए। तीन दशक से ज्यादा समय तक ईरान के सुप्रीम लीडर रहे अयातुल्ला अली खामेनेई 28 फरवरी को ईरान के खिलाफ अमेरिका-इजरायल के हमले के पहले ही दिन मारे गए थे, जिसके बाद क्षेत्र में एक बड़ा संघर्ष छिड़ गया था।

ईरान में कार्यक्रम को लेकर भव्य तैयारी

इसे भव्य बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी गई है। ईरानी मीडिया में 10 से ज्यादा दिनों से इसकी जोर शोर से तैयारी चल रही थी। ईरान ने कार्यक्रम की शुरुआत के लिए जिस दिन को चुना है, उसे अमेरिका के लिए संकेत के रूप में देखा जा रहा है। 4 जुलाई को अमेरिका अपना स्वतंत्रता दिवस मनाता है। ईरानी मीडिया रिपोर्ट के अनुसार दिवंगत नेता के अंतिम संस्कार के लिए होने वाले 6 दिनों के कार्यक्रम में 1.5 से 2 करोड़ लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। भारी भीड़ की संभावना को देखते हुए अधिकारियों ने हाई अलर्ट जारी किया है।

सूने मकान में सेंध लगाने वाला धराया

इंदौर। अन्नपूर्णा पुलिस ने सूने मकान में नकबजनी की वारदात का खुलासा करते हुए शातिर आरोपी गौरव भलसे (22) और उसके एक नाबालिग साथी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से करीब 2 लाख रुपये कीमत के चोरी गए चांदी के आभूषण, सिक्के, चांदी का बिस्किट और वारदात में प्रयुक्त मोटरसाइकिल जब्त की है। पुलिस के अनुसार, सुदामा नगर निवासी रूपेश साहू परिवार सहित शहर से बाहर गए थे। इसी दौरान बदमाशों ने सूने मकान का ताला तोड़कर चोरी की वारदात को अंजाम दिया। मामले में अपराध दर्ज कर पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज, तकनीकी साक्ष्यों और मुखबिर तंत्र की मदद से आरोपियों की पहचान कर उन्हें दबोच लिया। पूछताछ में दोनों ने चोरी करना स्वीकार कर लिया। जांच में सामने आया कि वारदात के लिए आरोपी ने परिचित से मोटरसाइकिल लेकर उसका इस्तेमाल किया था। पुलिस के मुताबिक, मुख्य आरोपी गौरव भलसे के खिलाफ इंदौर के विभिन्न थानों में पहले से भी चोरी और संपत्ति संबंधी कई मामले दर्ज हैं।

3 किमी दौड़कर बदमाश को दबोचा

इंदौर। अवैध हथियारों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत राऊ थाना पुलिस ने करीब तीन किलोमीटर तक पीछा कर एक शातिर बदमाश को गिरफ्तार किया। आरोपी के कब्जे से मैगजीन में लोड दो जिंदा कारतूस और एक अवैध देशी पिस्टल बरामद की गई है। पुलिस के अनुसार सिलिकॉन सिटी क्षेत्र में गश्त और संदिग्धों की चेकिंग के दौरान जैन मंदिर के पीछे खाली मैदान में एक युवक संदिग्ध अवस्था में खड़ा दिखाई दिया। पुलिस वाहन को देखते ही वह मैदान की ओर भाग निकला। इस पर पुलिस टीम ने बिना देर किए उसका पीछा किया और करीब तीन किलोमीटर दौड़ने के बाद घेराबंदी कर उसे पकड़ लिया। तलाशी में आरोपी के पास से लोडेड देशी पिस्टल और दो जिंदा कारतूस मिले। आरोपी के खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर पूछताछ की जा रही है। पुलिस उसके आपराधिक रिकॉर्ड और हथियार के स्रोत की भी जांच कर रही है।

पहचान छिपाकर युवती से संबंध बनाए

इंदौर। बाणगंगा थाना क्षेत्र में पहचान छिपाकर युवती से संबंध बनाने के आरोप का मामला सामने आया। युवती की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी राहुल उर्फ मोहम्मद को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस आरोपी के पहचान संबंधी दस्तावेजों का सत्यापन कर रही है और मामले की हर पहलू से जांच की जा रही है। पुलिस के अनुसार, पीड़िता मूल रूप से बाली की रहने वाली है। उसकी मुलाकात पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी में काम करने के दौरान आरोपी से हुई थी। युवती का आरोप है कि आरोपी ने अपनी वास्तविक पहचान छिपाकर उससे संबंध बनाए। बाद में जब उसकी असली पहचान सामने आई तो विवाद शुरू हो गया। शिकायत में युवती ने यह भी आरोप लगाया कि आरोपी उसके साथ मारपीट करता था। शिकायत के आधार पर बाणगंगा थाना पुलिस ने संबंधित धाराओं में प्रकरण दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अब आरोपी के पास मिले दस्तावेजों की जांच कर रही है, ताकि उसकी वास्तविक पहचान की पुष्टि की जा सके। साथ ही यह भी पता लगाया जा रहा है कि क्या आरोपी ने इसी तरह किसी अन्य युवती के साथ भी धोखाधड़ी की है। एडिशनल डीसीपी अमरेंद्र सिंह ने बताया कि मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है। दस्तावेजों के सत्यापन और साक्ष्यों के आधार पर आगे की वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

नाबालिग से हरकत, 5 साल की सजा

इंदौर। 7 वर्षीय बच्ची के साथ अनुचित व्यवहार करने के मामले में स्पेशल पॉक्सो कोर्ट ने आरोपी दुकानदार को दोषी ठहराते हुए 5 वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। अदालत ने आरोपी पर 15 हजार रुपए का अर्थदंड भी लगाया। यह बच्ची घर के पास स्थित दुकान पर आती थी। यह फैसला 21वें अपर सत्र न्यायाधीश एवं विशेष न्यायालय (पोक्सो अधिनियम) की न्यायाधीश शिप्रा पटेल ने 25 जून को सुनाया, जिसकी जानकारी गुरुवार को दी गई। कोर्ट ने आरोपी सुमित जैन (28) को पॉक्सो अधिनियम की धारा 9(एम)/10 तथा भारतीय दंड संहिता की धारा 354 के तहत दोषी पाया। शासन की ओर से सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी सतीश वर्मा ने पक्ष रखा। पीड़िता की मां ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी कि उनकी 7 वर्षीय बेटी घर के पास स्थित एक दुकान पर सामान लेने जाती थी। बच्ची ने परिजनों को बताया कि दुकानदार उसके साथ अनुचित व्यवहार करता था और किसी को बताने पर डांट पड़ने की बात कहकर डराता था। परिजनों को जानकारी मिलने के बाद उन्होंने पुलिस से शिकायत की, जिसके आधार पर मामला दर्ज किया गया।

चार तस्कर पकड़े गए, माल जब्त

इंदौर। नशे के काले कारोबार के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान में क्राइम ब्रांच को बड़ी सफलता मिली है। पुलिस ने दस्तूर डिलाइट गार्डन के पीछे स्कीम नंबर-134 क्षेत्र में घेराबंदी कर ब्लैक एंड व्हाइट महिंद्रा थार को रोकते हुए उसमें सवार चार युवकों को गिरफ्तार किया। तलाशी के दौरान वाहन से 23.73 ग्राम अवैध एमडी ड्रग्स बरामद हुई,जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत करीब 2.30 लाख रुपए बताई गई है। सूचना मिली थी कि आरोपी शहर के पॉश इलाकों में युवाओं तक ड्रग्स पहुंचाने की फिराक में घूम रहे हैं। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने तस्करी में प्रयुक्त करीब 19 लाख रुपए कीमत की महिंद्रा थार भी जब्त कर ली। इस तरह कुल 21.30 लाख रुपए का मशरूका बरामद हुआ। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर ड्रग्स नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की तलाश में जुटी है।

दो दिन में 5 इंच बारिश से इंदौर बेहाल अधूरे निर्माण कार्यों से लोग मुश्किल में

इंदौर। जुलाई की शुरुआत में मानसून ने इंदौर में जोरदार दस्तक दी है। बुधवार को करीब ढाई इंच बारिश के बाद गुरुवार सुबह से आसमान में बादल छाए रहे और दिनभर मौसम बदला-बदला रहा। रात करीब 9 बजे शहर के कई इलाकों में फिर बारिश शुरू हुई, जो रुक-रुक कर देर रात तक जारी रही। इस दौरान भी करीब ढाई इंच बारिश दर्ज की गई। लगातार दो दिनों में लगभग 5 इंच बारिश होने से शहर के कई हिस्सों में जलभराव और आवागमन की समस्या खड़ी हो गई। शुक्रवार सुबह भी बादल छाए रहे और मौसम विभाग ने आज भी बारिश की संभावना जताई है। मौसम विभाग ने प्रदेश में 6 जुलाई तक भारी से अति भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। अगले 2 दिनों के लिए रेड अलर्ट घोषित किया गया है। इस मानसून सीजन में पहली बार इतनी गंभीर चेतावनी जारी की गई है।

कई सड़कों पर पानी भराया

रात की बारिश के बाद एमबी रोड और रिंग रोड पर बड़े जाम की स्थिति तो नहीं बनी, लेकिन कई सड़कों पर पानी भर गया। शहर में ड्रेनेज, स्टॉर्म वॉटर लाइन और पेयजल पाइपलाइन बिछाने के लिए की गई खुदाई के बाद समय पर सड़कें दुरुस्त नहीं होने से हालात और खराब हो गए हैं। कई जगह केवल मिट्टी और गिट्टी डालकर काम छोड़ दिया गया था, जो बारिश के बाद दलदल में बदल गया। इसका सीधा असर आम लोगों पर पड़ रहा है। नेहरू नगर रोड नंबर 9 स्थित अटल द्वार के पास सड़क पर काफी पानी भर गया, जिससे लोगों को आवागमन में परेशानी हुई। वहीं सत्य साईं चौराहे के पास बारिश के दौरान पेड़ की एक बड़ी डाल गिर गई। घटना में एक व्यक्ति बाल-बाल बच गया। एमआर-11 मार्ग पर निर्माण कार्य के चलते देवास नाका की ओर बनाए गए डायवर्शन मार्ग भी बारिश के बाद खतरनाक हो गए हैं। निपानिया चौराहे पर खुदाई के बाद सड़क की ठीक से मरम्मत नहीं की गई। पानी भरने से गड्ढे दिखाई नहीं देते, जिससे खासकर दोपहिया वाहन चालक दुर्घटना का शिकार हो रहे हैं।

जलभराव, उखड़ी सड़कें और खराब डायवर्सन बने परेशानी की वजह

पहली बारिश में सड़क उखड़ी

मानसरोवर क्षेत्र में हाल ही में बनी नई सड़क पहली ही बारिश में उखड़ने लगी है। कई स्थानों पर गिट्टियां बाहर आ गई हैं और सड़क धंसने लगी है। महालक्ष्मी नगर मेन रोड से निपानिया तक बनी सीमेंटेड सड़क भी कई जगह क्षतिग्रस्त हो चुकी है। सड़क किनारे पक्के फुटपाथ या पेवर ब्लॉक नहीं होने से पूरा इलाका कीचड़ और दलदल में तब्दील हो गया है। स्टार चौराहे पर घंटों तक पानी जमा रहा। स्थानीय लोगों का कहना है कि हाल ही में डाली गई स्टॉर्म वॉटर लाइन बारिश के पानी का दबाव नहीं झेल सकी। वहीं जमजम चौराहे तक चल रहे सड़क निर्माण कार्य की धीमी रफ्तार ने भी लोगों की परेशानी बढ़ा दी है। रेडिसन चौराहे से रोबोट चौराहे के बीच मेट्रो प्रोजेक्ट के चलते मुख्य सड़क पहले से ही संकरी हो गई है। सर्विस रोड की खराब स्थिति और मेट्रो कॉर्पोरेशन तथा नगर निगम के बीच समन्वय की कमी के कारण इस क्षेत्र में ट्रैफिक और आवागमन लगातार प्रभावित हो रहा है।

जलभराव की समस्या

द्वारकापुरी क्षेत्र में जलभराव की समस्या इस बारिश में भी बनी रही। लगातार घरों में पानी घुसने की आशंका के चलते कई रहवासियों ने अपने मुख्य दरवाजों के सामने सीमेंट की छोटी-छोटी दीवार बना ली हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि करीब दो दशक से यह समस्या बनी हुई है, लेकिन अब तक इसका स्थायी समाधान नहीं हो सका है। जंजीरवाला चौराहे के पास रॉयल पार्क मल्टी के सामने खुदाई के बाद छोड़े गए गड्ढे और मिट्टी के ढेर भी बारिश में परेशानी का कारण बन रहे हैं। सड़क काटने के बाद मरम्मत अधूरी छोड़ देने से हर बारिश में यहां पानी भर जाता है। रहवासियों का कहना है कि जिम्मेदार एजेंसियों के बीच तालमेल की कमी का खामियाजा आम जनता को भुगतना पड़ रहा है।

सोनम की जमानत पर सुप्रीम कोर्ट में हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी गई

इंदौर। राजा रघुवंशी हत्याकांड की मुख्य आरोपित सोनम रघुवंशी को मिली जमानत के खिलाफ मेघालय सरकार ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। सरकार ने मेघालय हाई कोर्ट के उस फैसले को चुनौती दी है, जिसमें सोनम को जमानत पर रिहा रखने के ट्रायल कोर्ट के आदेश को बरकरार रखा गया था। इस मामले में शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होगी। गुरुवार को मेघालय सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस शील नागू की पीठ के समक्ष मामले का उल्लेख करते हुए तत्काल सुनवाई की मांग की। उन्होंने कहा कि हाई कोर्ट ने मामले की मुख्य आरोपी को जमानत देकर गंभीर त्रुटि की है और इस आदेश पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। सुनवाई के दौरान तुषार मेहता ने कहा कि हाई कोर्ट ने यह मानते हुए सोनम को जमानत दी कि गिरफ्तारी के समय उसे गिरफ्तारी के आधारों की पूरी जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई थी। उन्होंने अदालत को बताया कि संबंधित दस्तावेज उपलब्ध नहीं कराने का मुद्दा एक ऐसे प्रावधान से जुड़ा है, जिसका उल्लेख टाइपिंग की गलती के कारण गलत तरीके से दर्ज हो गया था।

फरारी की आशंका का हवाला देते हुए जमानत निरस्ती की मांग

फरार होने की आशंका

मेघालय सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में यह भी दलील दी कि यदि सोनम रघुवंशी जमानत पर बाहर रहती है तो उसके फरार होने की आशंका बनी हुई है। सरकार ने इसी आधार पर उसकी जमानत निरस्त करने का अनुरोध किया है। पीठ ने मामले को शुक्रवार को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने पर सहमति दे दी। उल्लेखनीय है कि गत 29 जून को मेघालय हाई कोर्ट ने ट्रायल कोर्ट के उस आदेश को बरकरार रखा था, जिसके तहत सोनम रघुवंशी को जमानत प्रदान की गई थी।

पति की हत्या का मामला

यह मामला पिछले वर्ष जून का है। नवविवाहित दंपती राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी हनीमून मनाने के लिए मेघालय गए थे। 23 मई, 2025 को दोनों सोहरा क्षेत्र से लापता हो गए थे। इसके बाद 2 जून, 2025 को राजा रघुवंशी का शव एक गहरी खाई से बरामद हुआ था। पुलिस के अनुसार, सोनम रघुवंशी ने अपने प्रेमी और कुछ अन्य लोगों के साथ मिलकर पति राजा रघुवंशी की हत्या की साजिश रची थी। इसी मामले में उसे गिरफ्तार किया गया था और फिलहाल उसकी जमानत को लेकर कानूनी लड़ाई सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गई है।

बारिश से पहले निगम का एक्शन जर्जर भवन पर चला बुलडोजर

दो हजार वर्गफीट के खतरनाक हिस्से को हटाया गया

इंदौर। मानसून की दस्तक और लगातार हो रही बारिश के बीच नगर निगम ने लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए जर्जर भवनों के खिलाफ अभियान तेज कर दिया है। शुक्रवार को परदेसीपुरा क्षेत्र में स्थित एक खतरनाक भवन के जर्जर हिस्से को बुलडोजर और मशीनों की मदद से हटाया गया।

कार्रवाई के दौरान सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए और एहतियातन आसपास के क्षेत्र में आवाजाही भी सीमित रखी गई। नगर निगम के रिमूवल अधिकारी अंकेश बिरथरे ने बताया कि भवन का पिछला हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुका था और उसके कभी भी ढहने की आशंका थी। ऐसे में नगर निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल के निर्देश पर टीम ने मौके पर पहुंचकर कार्रवाई की। करीब 2 हजार वर्गफीट क्षेत्र में बने इस पुराने भवन को वर्ष 2021 में भी हटाने के लिए नोटिस जारी किया गया था। लेकिन, भवन मालिक द्वारा आवश्यक कार्रवाई नहीं की गई। इसके बाद दोबारा नोटिस और कानूनी प्रक्रिया पूरी कर निगम ने जर्जर हिस्से को ध्वस्त कर दिया। निगम अधिकारियों का कहना है कि बारिश के मौसम में जर्जर इमारतें जान-माल के लिए बड़ा खतरा बन जाती हैं। इसी को देखते हुए शहरभर में ऐसे भवनों की पहचान कर चरणबद्ध तरीके से कार्रवाई की जा रही है, ताकि किसी भी संभावित हादसे को समय रहते रोका जा सके।

ब्रिज पर तेज रफ्तार कार ने बाइक पर बैठी महिला को घसीटा, मौत

घर लौट रही महिला को कार से टक्कर, 200 फीट घसीटा

इंदौर। शहर के एमआर-10 ब्रिज पर गुरुवार रात तेज रफ्तार कार की टक्कर से एक महिला की दर्दनाक मौत हो गई। महिला फैक्ट्री से काम खत्म कर रेपिडो बाइक से घर लौट रही थी। इसी दौरान पीछे से आई कार ने बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार हादसे के बाद महिला कार के अगले हिस्से में फंस गई और चालक उसे करीब 200 फीट तक घसीटता हुआ ले गया।

इस दुर्घटना में रेपिडो बाइक चालक को मामूली चोटें आई हैं। हीरानगर थाना पुलिस के मुताबिक मृतका की पहचान 40 वर्षीय रचना शर्मा, पत्नी रविंद्र शर्मा, निवासी नंदानगर, सांवेर रोड के रूप में हुई है। गुरुवार रात करीब 9 बजे वह फैक्ट्री से काम समाप्त कर रेपिडो बाइक के जरिए अपने घर लौट रही थीं। एमआर-10 ब्रिज पर पीछे से तेज रफ्तार कार ने बाइक को टक्कर मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गईं। हादसे के बाद राहगीरों की मदद से रचना शर्मा को तत्काल एमवाय अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उपचार के दौरान देर रात उनकी मौत हो गई। प्रत्यक्षदर्शी ईशान, जिन्होंने घायल महिला को अस्पताल पहुंचाया, ने पुलिस को बताया कि टक्कर के बाद रचना कार के अगले हिस्से में फंस गई थीं। इसके बावजूद चालक ने वाहन नहीं रोका और कार चलाता रहा, जिससे महिला काफी दूरी तक सड़क पर घिसटती रही। बाद में राहगीरों ने पीछा कर कार को रुकवाने का प्रयास किया, लेकिन चालक वाहन लेकर वहां से फरार हो गया। हादसे की सूचना मिलते ही हीरानगर थाना पुलिस और बीट के जवान मौके पर पहुंच गए। प्रत्यक्षदर्शियों ने पुलिस को बताया कि कार चालक विजयनगर की ओर भागा है। इसके बाद पुलिस ने करीब 4 किलोमीटर तक पीछा कर कार को रोक लिया और चालक जितेश सोलंकी, निवासी बाबू मुराई कॉलोनी, को हिरासत में ले लिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

महंगे शौक ने बनाया चोर, ज्वेलर्स से सोना उड़ाने वाला पकड़ा गया

इंदौर। कनाड़िया पुलिस ने दिनदहाड़े ज्वेलरी शॉप से सोने के आभूषण चोरी करने वाले शातिर आरोपी को गिरफ्तार कर वारदात का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी गई एक सोने की चेन, दो सोने की अंगूठियां और वारदात में इस्तेमाल की गई बिना नंबर की शाइन मोटरसाइकिल बरामद की है। जब्त मशरूका की कुल कीमत करीब 2.50 लाख रुपए आंकी गई है। पुलिस के मुताबिक 22 जून की शाम करीब 5 बजे वैभव नगर स्थित चंद्रिका ज्वेलर्स पर एक युवक मास्क और लाल टोपी पहनकर ग्राहक बनकर पहुंचा। उसने सोने के आभूषण देखने के बहाने दुकानदार शिव शंकर विजयवर्गीय का ध्यान भटकाया और मौका मिलते ही एक सोने की चेन व दो अंगूठियां चोरी कर बाइक से फरार हो गया।

शिकायत मिलने पर कनाड़िया थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। जांच के दौरान पुलिस ने घटनास्थल और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले। तकनीकी साक्ष्यों और मुखबिर तंत्र की मदद से पुलिस आरोपी मुन्ना बारिया (25), निवासी ग्राम बोराली जिला बड़वानी एवं वर्तमान निवासी कनाड़िया तक पहुंची। पूछताछ में आरोपी ने चोरी की वारदात कबूल करते हुए बताया कि उसने अपने महंगे शौक पूरे करने के लिए यह अपराध किया था। पुलिस ने आरोपी से चोरी की पूरी ज्वेलरी और घटना में प्रयुक्त मोटरसाइकिल जब्त कर ली है। अब उससे अन्य चोरी की वारदातों के संबंध में भी पूछताछ की जा रही है। कार्रवाई में थाना प्रभारी सहर्ष यादव के नेतृत्व में कनाड़िया थाना पुलिस और साइबर सेल जोन-2 की टीम की अहम भूमिका रही।

ज्वेलर्स का ध्यान भटकाकर ढाई लाख के जेवर उड़ाए

गवाही के बाद हत्या के केस के गवाह को धमकी, महिला वकील को भी चेतावनी दी

इंदौर। इंदौर में जान से मारने की धमकी के दो अलग-अलग मामलों में पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एक मामले में हत्या के केस के गवाह को जिला न्यायालय में बयान देने के कुछ घंटे बाद फोन कर गवाही बदलने का दबाव बनाया गया, जबकि दूसरे मामले में एक महिला वकील ने एसिड फेंकने और गोली मारने की धमकी दिए जाने की शिकायत दर्ज कराई है। पहला मामला रावजी बाजार थाना क्षेत्र का है। गाड़ी अड्डा निवासी करण धीमान ने पुलिस को बताया कि वह सेल्समैन है और 1 जनवरी 2025 को अपने दोस्त राज कुशवाह की हत्या के मामले में गवाह है। इस हत्या के मामले में प्रतीक धीमान, शुभम फुलेरिया और रोहन वर्मा आरोपी हैं। करण के अनुसार बुधवार को उसने जिला न्यायालय में इस मामले में गवाही दी थी। शाम को उसके मोबाइल पर एक कॉल आया। कॉल करने वाले ने खुद को आरोपी प्रतीक धीमान का भाई अर्पित धीमान बताया और कहा कि उसने उसके भाई के खिलाफ कोर्ट में बयान दिया है।

दो अलग-अलग मामलों में दर्ज की एफआईआर, गवाही बदलने का दबाव

गवाही बदलने का दबाव

करण ने घबराकर कॉल काट दिया, लेकिन कुछ देर बाद फिर कॉल आया। आरोप है कि इस दौरान उसे और उसके एक अन्य दोस्त को जान से मारने की धमकी दी गई। साथ ही उस पर गवाही बदलने का दबाव भी बनाया गया। इसके बाद करण रावजी बाजार थाने पहुंचा और शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने अर्पित धीमान के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। दूसरा मामला गांधी नगर थाना क्षेत्र का है। यहां महिला वकील विनीता गुर्जर ने पप्पू सौदागर, ललिता सौदागर, करण और हर्ष बंजारा के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है।

आरोपियों से पारिवारिक विवाद

विनीता गुर्जर ने पुलिस को बताया कि आरोपियों से उनका पारिवारिक विवाद चल रहा है और ललिता सौदागर आए दिन विवाद करती थी। बुधवार दोपहर वह अपने पति के साथ थीं, तभी करण वहां पहुंचा और उनके पति से विवाद करने लगा। विरोध करने पर आरोपियों ने मारपीट की तथा एसिड फेंकने और गोली मारने की धमकी दी। घटना के बाद विनीता गुर्जर अपने पति के साथ वहां से चली गईं और गांधी नगर थाने में लिखित शिकायत दी। पुलिस ने बुधवार रात चारों आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

संपादकीय

हमारी कूटनीति पर सवाल

यूं तो ईरान-अमेरिका संघर्ष के बीच भारत की विदेश नीति पर सवाल पहले भी उठते रहे हैं, लेकिन हाल में दो साल पहले तक अंतरराष्ट्रीय राजनीति में लगभग हाशिए पर चल रहा पाकिस्तान ऑपरेशन सिंदूर के बाद अब फ्रंट फुट पर खेल रहा है। यूं तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दबाव में काम करने का आरोप विपक्ष पहले ही लगा रहा था, लेकिन अब बदले हालात में पाकिस्तान ने जिस तरह एक दूसरे के दुश्मन अमेरिका और ईरान को कुशलता से साधा है, वह न सिर्फ चौंकाने वाला है, बल्कि कूटनीतिक जगत में यह सवाल भी पूछा जा रहा है कि जब पाकिस्तान ऐसा कर सकता है तो भारत क्यों नहीं कर सकता? खासकर इसलिए हमारे दोनों देशों से अच्छे सम्बंध रहे हैं और ईरान के साथ तो सदियों पुराने सांस्कृतिक, सामाजिक रिश्ते हैं। फिलहाल जो हो रहा है, उसका साफ संदेश यह है कि भार की कूटनीति इजराइल और अमेरिका के पक्ष में झुकी है। इस दृष्टिकोण को इस बात से भी बल मिला कि ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह खेमेनेई के अंतिम संस्कार में बुलावे के बाद भी प्रधानमंत्री अथवा कोई शीर्ष नेता को न भेजा जाकर बिहार के राज्यपाल सैयद अता हसनैन की अगुवाई में दो सदस्यीय दल को भेजा जा रहा है। दूसरे सदस्य पवित्र मार्गरीटा केन्द्रीय राज्य मंत्री हैं। ईरान के सर्वोच्च नेता रहे अयातुल्लाह अली खेमेनेई का अंतिम संस्कार 9 जुलाई को है। ईरान इसे एक भव्य आयोजन का रूप दे रहा है। भारतीय प्रधानमंत्री के अलावा उसने भारत के कुछ अन्य नेताओं को भी व्यक्तिगत रूप से आमंत्रित किया है। जबकि पाकिस्तान की ओर से वहां के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के अंतिम संस्कार में शामिल होने की खबर है। उल्लेखनीय है कि ईरान में इस्लामिक क्रांति के बाद वहां के तत्कालीन सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह रुहोल्लाह खुमैनी के अंतिम संस्कार में शामिल होने पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति गुलाम इसहाक़ खान गए थे। हालांकि तब भी भारत की तरफ़ से प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति शामिल नहीं हुए थे। भारत से इस बार भी कोई शीर्ष का नेता नहीं जाएगा। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि अयातुल्लाह किसी संवैधानिक पद पर नहीं थे, इसलिए कोई बड़ा नेता उनके अंतिम संस्कार में नहीं जा रहा है। लेकिन इसी संदर्भ में पाकिस्तान की भूमिका का महत्व इसलिए है, क्योंकि तब भी पाकिस्तान शीत युद्ध वाले अमेरिकी खेमे में था और अमेरिका-ईरान के इस्लामिक शासन के खिलाफ़ था। और उस वक्त भी अमेरिका और ईरान दोनों का भरोसेमंद साथी था। यही नहीं पाकिस्तान ऐतिहासिक रूप से सऊदी अरब के क़रीब रहते हुए भी ईरान से क़रीबी बनाए रखने में कामयाब रहा है। पाकिस्तान एक साथ ईरान और अमेरिका दोनों का भरोसा जीतने में कामयाब रहा है जबकि तेहरान और वॉशिंगटन दोनों एक-दूसरे को फूटी आंखों नहीं सुहाते हैं। पाकिस्तान के फील्ड मार्शल जनरल आसिम मुनीर की ईरान भी तारीफ़ करते हैं और अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप भी उन्हें पसंद करते हैं, भले ही इसके पीछे कारण जो हों। यह सही है कि दुनिया में पाकिस्तान को रणनीतिक रूप से एक अहम देश के रूप में देखा जाता है। उसकी भौगोलिक स्थिति उसे ऐसी रणनीतिक प्रासंगिकता देती है, जो अमेरिका के साथ तनावपूर्ण दौर में भी बनी रहती है। लिहाजा इस्लामाबाद ने इसराइल के साथ अपने रिश्तों पर कोई रियायत दिए बिना खुद को एक बड़े कूटनीतिक घटनाक्रम के केंद्र में ला खड़ा किया है। पाकिस्तान इसराइल के अस्तित्व को नकारता है फिर भी अमेरिका का उसके प्रति भरोसा कम नहीं हुआ। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि भारत विदेश नीति के मोर्चे पर कहीं चूक गया?

नजरिया

डॉ. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

सभ्य भारत की भरत पीड़ा से उपजे सवाल

सभ्य समाज की सबसे बड़ी पहचान यह नहीं कि वह अपराधियों से कठोरता से निपटे, उसकी पहचान यह है कि वह सबसे बड़े अपराधी को भी न्यायालय के दरवाज़े तक पहुँचने का अवसर दे। संविधान भी निर्दोषों की रक्षा करता है, वह आरोपित व्यक्ति को भी निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार देता है। यही लोकतंत्र और जंगलराज के बीच सबसे बारीक, किंतु सबसे निर्णायक रेखा है जिसे स्टेट को समझना अब भी बाकी है। आज के समय में एक खतरनाक प्रवृत्ति जन्म ले चुकी है। लंबी न्यायिक प्रक्रिया से ऊब चुका समाज कभी-कभी त्वरित दंड को ही न्याय मान बैठता है जो की सर्वथा गलत है। स्टेट के साथ कार्यरत अदालत की जगह मुठभेड़, एनकाउंटर, बुल्डोज करना समाधान समझने लगे हैं। यह भावना न्याय नहीं है। यह एक अराजक सोच है। कोई संविधान दोषी या निर्दोष को समझने, सुधरने के लिए स्पेश देता है। अराजकता जीवन छीनती है। संविधान सम्मत यही है कि शासन व प्रशासन अब यह समझ बनाए कि दोष और निर्दोष का निर्णय केवल न्यायालय करता है, उसको हमें यह निर्णय लेने देना चाहिए।

बिहार में भोजपुर के बिलौटी गाँव की अशांति पूरे भारत में पीड़ा दे गई। कभी-कभी किसी मनुष्य को उसकी उपलब्धियों से नहीं, उसकी शहादत उसे अमर कर देती है। कुछ मृत्यु शोक नहीं, प्रश्न बन जाती हैं। वे केवल किसी परिवार का दुःख नहीं रहतीं, वे राष्ट्र के हर संवेदनशील व्यक्ति को झकझोरने वाली घटनाएँ बन जाती हैं। भरत तिवारी के साथ हुई घटना भी आज उसी तरह महसूस होती है। पुलिस का दावा और परिवार के साथ अनेक भरत तिवारी के सोशल मीडिया लाइव देखकर समर्थन में सामाजिक स्वर कई ऐसे सवाल खड़ा कर रहे हैं जिस पर स्टेट घिरता हुआ नज़र आ रहा है। निष्पक्ष जाँच की माँग और न्याय की मांग कर रहे लोग न जाने किस नतीजे पर पहुंचेंगे, यह कहना मुश्किल है। सत्य का अंतिम निर्णय तो न्यायिक प्रक्रिया करेगी। किंतु प्रश्न यह है कि क्या लोकतंत्र का धर्म केवल गोली चलाना है, या सत्य तक पहुँचना भी है?

कहा जाता है कि राज्य की सबसे बड़ी शक्ति उसकी सेना या पुलिस नहीं होती, बल्कि उसके नागरिकों का विश्वास होता है। जब यह विश्वास डगमगाता है, तब कानून व संविधान की बातें भी लोगों के मन में सुरक्षा का भाव पैदा नहीं कर पातीं। भरत तिवारी प्रकरण ने इसी विश्वास को चुनौती दी है। भरत तिवारी के साथ हुई पुलिसिया कार्रवाई के बाद समाज दो खेमों में बँट चुका है। बौद्धिक समाज अब कह रहा है की यह केवल एक व्यक्ति नहीं मरा, व्यवस्था की विश्वसनीयता भी कठघरे में खड़ी हो गई है।

सभ्य समाज की सबसे बड़ी पहचान यह नहीं कि वह अपराधियों से कठोरता से निपटे, उसकी पहचान यह है कि वह सबसे बड़े अपराधी को भी न्यायालय के दरवाज़े तक पहुँचने का अवसर दे। संविधान भी निर्दोषों की रक्षा करता है, वह आरोपित व्यक्ति को भी निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार देता है। यही लोकतंत्र और जंगलराज के बीच सबसे बारीक, किंतु सबसे निर्णायक रेखा है जिसे स्टेट को समझना अब भी बाकी है। आज के समय में एक खतरनाक प्रवृत्ति जन्म ले चुकी है। लंबी न्यायिक प्रक्रिया से ऊब चुका समाज कभी-कभी त्वरित दंड को ही न्याय मान बैठता है जो की सर्वथा गलत है। स्टेट के साथ कार्यरत अदालत की जगह मुठभेड़, एनकाउंटर, बुल्डोज करना समाधान समझने लगे हैं। यह भावना न्याय नहीं है। यह एक अराजक सोच है। कोई संविधान दोषी या निर्दोष को समझने, सुधरने के लिए स्पेश देता है। अराजकता जीवन छीनती है। संविधान सम्मत यही है कि शासन व प्रशासन अब यह समझ बनाए कि दोष और निर्दोष का निर्णय केवल न्यायालय करता है, उसको हमें यह निर्णय लेने देना चाहिए।

भरत तिवारी के मामले में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि उनके साथ क्या हुआ। इसका ज़वाब आज सरकार के पास नहीं है. यदि पुलिस की कार्रवाई कानून के अनुरूप थी, तो निष्पक्ष जाँच उसे प्रमाणित करेगी, इस पर भी अब आशंका जताया जा रहा है। यदि जाँच में यह सामने आए कि प्रक्रिया का उल्लंघन हुआ, तो लोकतंत्र क्या कोई भरत तिवारी को जीवित कर सकेगा? क्या असली दोषी को जेल होगी? क्या उसको भारतीय न्याय संहिता के अनुसार उचित दंड दिया जाएगा? एक डीएसपी को प्रोन्नत करके सरकार खुद को प्रश्नांकित करने लगी है।

न्याय का अर्थ किसी एक पक्ष का समर्थन नहीं, बल्कि सत्य का सम्मान होता है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 केवल एक कानूनी प्रावधान नहीं, बल्कि सभ्यता का घोषणापत्र है। इसमें प्रावधान है कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन और विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अनुसार न्याय का अधिकार है। यही अनुच्छेद सभी को समान सुरक्षा देता है। यदि किसी एक व्यक्ति से यह अधिकार छीन लिया जाता है, तो यह अन्याय है। भरत तिवारी के साथ कुछ ऐसा ही हुआ है। उसने हथियार सौंपकर शरणागत होने की बात की। उसने भरोसा किया। उसके भरोसे की हत्या हो गयी। भरत के पूर्व के सोशल मीडिया पोस्ट यह बताते हैं की उसके सवाल उस भारत के सवाल थे जो स्वयं को विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र कहता है और भ्रष्टाचार को शिष्टाचार बना लेता है। लोकतंत्र कई स्तर पर परखा जाता है. राज्य के पास शक्ति का दुरुपयोग करने का ऐसे में कोई हक नहीं है और नागरिक के पास केवल अधिकार जीने का नहीं होता उसे प्रश्न करने का भी अधिकार है। यदि शक्ति अधिकार पर भारी पड़ जाए, तो लोकतंत्र धीरे-धीरे केवल एक औपचारिक शब्द बनकर रह जाता है, भोजपुर में भरत तिवारी का प्रकरण कुछ ऐसा ही लगता है।

इतिहास हमें सिखाता है कि राज्य की सबसे बड़ी परीक्षा युद्ध में नहीं, न्याय में होती है। युद्ध में विजय शक्ति से मिलती है; न्याय में विजय संयम से। संदेह जितना लंबा जीवित रहता है, संस्थाओं का विश्वास उतना ही कमज़ोर होता जाता है। बिहार में संदेह के बीज बोये जा रहे हैं। इस पूरे प्रकरण में सबसे अधिक पीड़ादायक बात यह है कि समाज का बड़ा हिस्सा सत्य को लेकर आश्वस्त नहीं है, संदेह से भर चुका है। लोकतंत्र में संदेह का समाधान चाहिए। जाँच होती है तो बयान नहीं, प्रमाण बोलते हैं। शक्ति नहीं, सत्य टिकता है। एक सत्य यह भी है कि जवईनियां बिलौटी के प्रत्येक नागरिक एक सिरे से ख़ारिज कर रहे हैं कि भरत तिवारी किसी भी तरह से अपराधी प्रवृत्ति का युवक था वह उनका मसीहा था। यह कहते हुए बूढी औरतें, युवा महिलाएं एवं बुजुर्ग सभी रो दे रहे हैं। तेरहवीं तक पूरा गाँव बिना नमक हल्दी तेल के भोजन करने लगा। यह थी उस युवक की कमाई जिसे वह जीते जी सबमें स्वयं को मौजूद रखा और मृत्यु के बाद भी आँखों के आंसू के रूप में बह रहा है।

भरत तिवारी को लेकर समाज के भीतर जो छवियाँ मौजूद हैं वह सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हुई हैं। न्याय केवल साक्ष्य देखता है। इसलिए पहले जाँच और न्यायिक प्रक्रिया की प्रतीक्षा करना ही संवैधानिक दृष्टि से अब उचित है। आवश्यकता इस बात की है कि जांचकर्ता भी सिद्धांत की रक्षा करें जिसके कारण भारत लोकतंत्र कहलाता है। कानून और न्याय का अर्थ ही यह है कि राज्य भी नियमों व संविधान से बँधा रहे। हमारी न्याय-व्यवस्था, हमारी लोकतांत्रिक परिपक्वता में है। प्रश्न केवल इतना नहीं कि एक व्यक्ति कैसे मरा, प्रश्न यह भी है कि क्या हम सत्य कहने का सहस रखते हैं?

भरत तिवारी का जीवन इतिहास किस रूप में याद रखेगा, यह समय तय करेगा, लेकिन उनकी मृत्यु ने भारतीय लोकतंत्र से जो प्रश्न पूछा है, वह बहुत बड़ा है। किसी भी राष्ट्र की सभ्यता इस बात से आँकी जाती कि उसने न्याय की लौ को कितनी देर तक जलाए रखा। न्याय ही वह शक्ति है जो इतिहास को सम्मान देता है। भरत भूषण तिवारी के बहाने उत्तर प्रदेश में भी वर्षों से चल रहे एनकाउंटर, बुलडोजर कल्चर एवं जातीय हिंसा पर बहस तेज हुई है. लेकिन राज्य की क्रूरता पर जो सवाल उठ रहे हैं वह इतिहास भविष्य में आंकलन किए जाएंगे तो निंदा ही होगी इसे सराहना तो नहीं मिलेगी। एक 28 वर्ष का युवा अपने पीछे लाखों जुबान पर प्रश्न छोड़ गया है अब लाखों सवालों का ज़वाब कहाँ से क्रूर राज्य ढूंढेंगे?

साइबर शील्ड

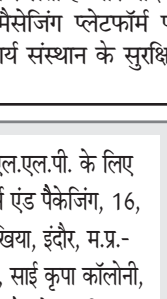

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

सुरक्षित डिजिटल परिधि से मजबूत होगा भारत

डिजिटल युग ने जीवन को जितना सरल बनाया है, उतना ही जटिल भी। आज सरकारी कार्यालयों, बैंकों, बिजली संयंत्रों, रेलवे, हवाई अड्डों और रक्षा प्रतिष्ठानों का अधिकांश कार्य डिजिटल नेटवर्क पर निर्भर है। इन संस्थानों में अत्याधुनिक साइबर सुरक्षा व्यवस्था तो होती है, लेकिन एक ऐसा कमजोर पक्ष भी मौजूद है, जिस पर अक्सर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। यह कमजोर कड़ी कर्मचारियों, ठेकेदारों और आगंतुकों के निजी मोबाइल फोन तथा अन्य व्यक्तिगत डिजिटल उपकरण हैं। यही उपकरण कई बार सुरक्षित नेटवर्क और सार्वजनिक इंटरनेट के बीच एक अनदेखे पुल का काम करने लगते हैं।

कुछ समय पहले देश में कई बड़े बैंकिंग संस्थानों और सरकारी वेबसाइटों पर साइबर हमलों की खबरें चर्चा का विषय बनीं। इसी प्रकार विश्व के अनेक देशों में बिजली ग्रिड, अस्पतालों और परिवहन तंत्र पर हुए साइबर हमलों ने यह स्पष्ट कर दिया कि आज युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं, बल्कि डिजिटल दुनिया में भी लड़े जा रहे हैं। भारत तेज़ी से पाँच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। ऐसे समय में केवल डेटा की सुरक्षा ही नहीं, बल्कि उस अदृश्य डिजिटल ट्रैफिक की निगरानी भी आवश्यक हो गई है, जो हमारे महत्वपूर्ण संस्थानों के भीतर और बाहर लगातार प्रवाहित हो रहा है। यही वह चुनौती है, जिस पर अब गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

डिजिटल युग ने जीवन को जितना सरल बनाया है, उतना ही जटिल भी। आज सरकारी कार्यालयों, बैंकों, बिजली संयंत्रों, रेलवे, हवाई अड्डों और रक्षा प्रतिष्ठानों का अधिकांश कार्य डिजिटल नेटवर्क पर निर्भर है। इन संस्थानों में अत्याधुनिक साइबर सुरक्षा व्यवस्था तो होती है, लेकिन एक ऐसा कमजोर पक्ष भी मौजूद है, जिस पर अक्सर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। यह कमजोर कड़ी कर्मचारियों, ठेकेदारों और आगंतुकों के निजी मोबाइल फोन तथा अन्य व्यक्तिगत डिजिटल उपकरण हैं। यही उपकरण कई बार सुरक्षित नेटवर्क और सार्वजनिक इंटरनेट के बीच एक अनदेखे पुल का काम करने लगते हैं।

साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ इसे 'क्रॉस-मीडियम सिक्योरिटी' की समस्या मानते हैं। मान लीजिए कि किसी बैंक या बिजली संयंत्र में कार्यरत कर्मचारी अपने कंप्यूटर की गोपनीय जानकारी का स्क्रीनशॉट लेकर अपने निजी मोबाइल में सुरक्षित कर लेता है और बाद में किसी निजी क्लाउड सेवा या मैसेजिंग प्लेटफॉर्म पर अपलोड कर देता है। यह पूरा कार्य संस्थान के सुरक्षित नेटवर्क से बाहर होता है, इसलिए अधिकांश सुरक्षा प्रणालियाँ इसे पहचान ही नहीं पातीं। परिणामस्वरूप अत्यंत संवेदनशील जानकारी बिना किसी तकनीकी अलार्म के बाहर चली जाती है। आज साइबर अपराधियों की रणनीति भी बदल चुकी है। पहले वे सीधे कंप्यूटर नेटवर्क में सेंध लगाने का प्रयास करते थे, लेकिन अब वे इंसानों और उनके निजी उपकरणों को निशाना बना रहे हैं। फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग, नकली मोबाइल ऐप और क्लाउड सेवाओं के माध्यम से गोपनीय सूचनाएँ आसानी से चुराई जा रही हैं। ऐसे हमले किसी भी संस्था के लिए आर्थिक, प्रशासनिक और राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी गंभीर संकट पैदा कर सकते हैं।

यह समस्या केवल डेटा चोरी तक सीमित नहीं है। यदि किसी बिजली ग्रिड, रेलवे नेटवर्क, रक्षा परियोजना या बैंकिंग प्रणाली से जुड़ी गोपनीय जानकारी गलत हाथों में पहुँच जाए, तो उसका प्रभाव पूरे देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है। उत्पादन रुक सकता है, वित्तीय लेन-देन बाधित हो सकते हैं, जनता का विश्वास डगमगा सकता है और विदेशी निवेशकों का भरोसा भी कमजोर पड़ सकता है। इसलिए डिजिटल सुरक्षा अब केवल सूचना प्रौद्योगिकी का विषय नहीं रही, बल्कि आर्थिक विकास और राष्ट्रीय संप्रभुता का महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है।

हालाँकि इस विषय का दूसरा पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। प्रत्येक नागरिक को निजता का अधिकार प्राप्त है, जिसे भारतीय संविधान और डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण कानून ने भी मान्यता दी है। इसलिए सुरक्षा के नाम पर कर्मचारियों के निजी जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप उचित नहीं माना जा सकता। यही कारण है कि डिजिटल सुरक्षा और व्यक्तिगत गोपनीयता के बीच संतुलन बनाना आज सबसे बड़ी चुनौती बन गया है।

अगर हम इसके समाधान की बात करें तो वह अंधाधुंध निगरानी नहीं, बल्कि बुद्धिमत्तापूर्ण तकनीकी व्यवस्था में छिपा है। विशेषज्ञों का सुझाव है कि महत्वपूर्ण संस्थानों के भीतर व्यक्तिगत मोबाइल उपकरणों के लिए अलग और नियंत्रित वायरलेस नेटवर्क उपलब्ध कराया जाए। इस व्यवस्था में कर्मचारियों की निजी बातचीत, संदेश या तस्वीरों की निगरानी नहीं होगी, बल्कि केवल यह देखा जाएगा कि कोई उपकरण किसी संदिग्ध विदेशी सर्वर या खतरनाक वेबसाइट से संपर्क तो नहीं कर रहा। यदि ऐसा प्रयास होता है, तो सुरक्षा प्रणाली तुरंत उस कनेक्शन को रोक सकती है और संबंधित अधिकारियों को सतर्क कर सकती है। इससे व्यक्ति की निजता भी सुरक्षित रहती है और संस्थान की सुरक्षा भी मजबूत होती है। दुनिया के अनेक विकसित देशों में ऐसी तकनीकों का उपयोग पहले से किया जा रहा है। रक्षा प्रतिष्ठानों, परमाणु संयंत्रों और संवेदनशील अनुसंधान संस्थानों में व्यक्तिगत उपकरणों के उपयोग को नियंत्रित किया जाता है। भारत में भी अब इस दिशा में व्यापक नीति बनाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

विशेष रूप से ऊर्जा, बैंकिंग, दूरसंचार, परिवहन, अंतरिक्ष, रक्षा और डिजिटल भुगतान जैसे क्षेत्रों में ऐसी व्यवस्थाएँ भविष्य की अनिवार्यता बन सकती हैं। हम देखते हैं कि इसका एक महत्वपूर्ण आर्थिक पक्ष भी है। आज विदेशी निवेशक केवल बाजार का आकार नहीं देखते, बल्कि यह भी परखते हैं कि किसी देश का डिजिटल ढाँचा कितना सुरक्षित है। यदि भारत अपनी महत्वपूर्ण डिजिटल अवसंरचना को अधिक सुरक्षित बनाता है, तो इससे विदेशी निवेशकों का विश्वास बढ़ेगा। वैश्विक कंपनियाँ अपने अनुसंधान केंद्र, डेटा सेंटर और विनिर्माण इकाइयाँ भारत में स्थापित करने के लिए अधिक उत्साहित होंगी। इस प्रकार साइबर सुरक्षा प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में भी योगदान दे सकती है।

सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल सुरक्षा को मजबूत बनाने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल (CERT-In), राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति, डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम और विभिन्न साइबर सुरक्षा दिशानिर्देश इसी दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास हैं। फिर भी बदलती तकनीक के साथ नीतियों और कानूनों को लगातार अद्यतन करने की आवश्यकता बनी रहेगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्लाउड कंप्यूटिंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी नई तकनीकों के विस्तार के साथ साइबर जोखिम भी लगातार बढ़ रहे हैं। इसके साथ ही केवल तकनीकी उपाय पर्याप्त नहीं होंगे। कर्मचारियों को नियमित साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण देना, सुरक्षित डिजिटल व्यवहार अपनाना, मजबूत पासवर्ड का उपयोग करना, संदिग्ध लिंक और ऐप से बचना तथा डेटा साझा करने के नियमों का पालन करना भी उतना ही आवश्यक है। अधिकांश साइबर घटनाएँ तकनीकी कमजोरी से अधिक मानवीय लापरवाही का परिणाम होती हैं। इसलिए जागरूकता ही सबसे प्रभावी सुरक्षा कवच है।

आज डिजिटल दुनिया में बहने वाला अदृश्य डेटा भी उतना ही मूल्यवान है जितना किसी देश का प्राकृतिक संसाधन या आर्थिक पूंजी। यदि इस अदृश्य डिजिटल ट्रैफिक की समय रहते निगरानी और सुरक्षा नहीं की गई, तो इसका दुष्प्रभाव राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास और नागरिकों के विश्वास, तीनों पर पड़ सकता है। इसलिए आवश्यकता ऐसी संतुलित नीति की है, जो एक ओर व्यक्तिगत गोपनीयता का सम्मान करे और दूसरी ओर महत्वपूर्ण डिजिटल अवसंरचना को मजबूत सुरक्षा प्रदान करे। सुरक्षित डिजिटल सीमाएँ ही भविष्य के आत्मनिर्भर, समृद्ध और वैश्विक भारत की वास्तविक आधारशिला बनेंगी।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

अतुल चतुर्वेदी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

मैनेजमेंट का हिस्सा बनाया जाना चाहिए चंदा वसूली

चंदा उगाही की परम्परा पुरानी है। अंतर बस इतना आया है कि पहले चंदा उगाही परमार्थ के कारण होती थी और अब स्वार्थ साधन के छुपे उद्देश्यों को लेकर होती है। हमारे मोहल्ले के युवा और बेरोजगार लड़के (शब्द दुरुपयोग के लिए माफ़ी। युवा हैं तो अधिकतर बेरोजगार ही होंगे) इस कुटीर उद्योग का शटर साल में दो तीन बार खोलते हैं। शटर उठाने का तो सबको पता चल जाता है गिरता कब है और उसके नेपथ्य में क्या होता है यह रहस्यवाद का हिस्सा है। होली पर, अनंत चतुर्दशी के जुलूस के मौके पर और नवरात्र में भगवती जागरण पर तीन महत्वपूर्ण धार्मिक अवसरों पर उनकी तरुणाई अंगड़ाई लेती है और चंदा कलेक्शन को कारवां निकल पड़ता है। कभी लोकमान्य तिलक जी ने और महात्मा गांधी जी तक ने देश की आजादी के लिए धन संग्रह किया था उनके लक्ष्य महान थे, पुनीत थे। लक्ष्य तो इनके भी महान हैं लेकिन उस महानता की पगडंडी स्वविकास के गंतव्य पर जा कर ठहर जाती है।

चंदा संग्रह के लिए जिगर बड़ा रखना पड़ता है और छोटे मोटे मान अपमान के गरल को हँसते हुए पीना पड़ता है। जरूरी नहीं आप जो उम्मीदें लेकर जा रहे हों वो पूरी हो। कई बार शेर को सवा शेर मिल जाता है और निराशा हाथ लगती है। हमारे यहाँ गुप्त दान का भारी महत्व है, दानवीर पलट कर नहीं देखते। वे कोई रसीद नहीं मांगते। इसमें भावना ही रसीद है और अति उत्साह ही प्रमाण है। लेकिन इधर क्या है दुनिया प्रेक्टिकल हो गई है और दिए गए चंदे का हिसाब मांगने लगी है। कुछ चंदा चोरों ने चंदाई के पवित्र और निष्काम कर्म को कलंकित कर दिया है। वे मंदिर और मस्जिद के हेतु एकत्र चंदे को भी खा जाते हैं। इससे धर्म की बड़ी हानि तो होती ही है आस्था के चूल भी काँपने लगते हैं। कई लोग इसे स्वीकार ही नहीं कर पाते और कई शिव शिव कर आँखें मूँद लेते हैं। कलियुग में आँखें मूँदने से बड़ा कोई सुख नहीं है।

आँखें मूँदने से न अन्याय का बुलडोजर दिखता है और न महँगाई का फन फैलाता अजगर। काया निर्मल रहती है, मन चन्दा उगाही को तत्पर। चंदा उगाही कोई सरल काम नहीं है इस हेतु मन को वज्र कठोर बनाना पड़ता है और बेशर्मी के कवच को धारण कर मुस्कुराहट का मुखौटा बाक़ायदा पहनना पड़ता है। डेढ़ इंच मुस्कान और सामने वाले की दरियादिली की निर्बाध सच्ची झूठी प्रशंसा ही वो अमोघ अस्त्र है जिससे आप चंदे की सम्मानित रकम वसूल सकते हैं।

एकबार अच्छी धनराशि अथक प्रयत्नों और निरंतर परिश्रम से प्राप्त हो जाये फिर आपकी पौ बारह। आप चार छह महीनों तक चैन की बंशी बजाइये। इस आर्यावर्त में सबको पता है चंदा उगाही कौन लोग करते हैं और उसके बाद उसकी कितनी रकम का सदुपयोग होता है। इसलिए चंदा उगाही को कोई भी हेय दृष्टि से नहीं देखता और कोई देखता भी है या प्रश्न करता है तो उसे शेष परंपरावादी झिड़क देते हैं, लानत भेजते हैं। चंदा उगाही और वसूली में बारीक अंतर है। उगाही में जहाँ बल प्रयोग का अभाव दिखता है वहाँ वसूली में आग्रह भाव और भय की मात्रा अधिक रहती है। चंदा न देने के दुष्परिणामों की एक स्लाइड भी प्रकारांतर से दानवीर को समझा दी जाती है। इस दृष्टि से चंदा वसूली उन्नत कर्म है। माफिया गिरोह और राजनीतिक पार्टियां जो सत्ता में होती हैं चंदा वसूली को प्रमुखता देती हैं। चुनाव आदि लड़ने के लिए लिए गए चंदे की रकम नेति नेति होती है। उसका कोई हिसाब किताब न देय होता है न अपेक्षित। उसे दानदाता भी डूबत खाते में लिख फिर उधर झाँकता ही नहीं है। इसी में उसके सुखद भविष्य का रहस्य छुपा है।

चंदा उगाही के कई रूप पाये जाते हैं अतीत में इसे चौथ वसूली और सुरक्षा कर भी कहते थे। आजकल इसे हफ़्ता वसूली या फिरौती भी कह सकते हैं। वैसे तो यह काफ़ी प्राचीन संगठित उद्योग है लेकिन समय समय पर इसमें ज्वार भाटे आते रहते हैं। चंदा दाता को हमारे यहाँ मुँह खोलने का नैतिक विधान नहीं है लेकिन फिर भी कुछ लोग जिनको ईमान की अपच है ऐसी ऐसी डकारें लेते हैं कि सच झीने परदे से झाँकने लगता है। धर्मावलंबी और भक्त जनों की इससे भावनाएं आहत होती हैं वे सवाल करते हैं तरह-तरह के। दान का हिसाब क्यों माँगना? जिसको दिया अब वो उसकी संपत्ति हो गई वो चाहे जो करे। रसीद कौन माँगता है और कौन देता है ? चंदे का तात्पर्य ही हैं खुर्द बुर्द और यदि आप उसे खुर्दबीन लगाकर खोजोगे तो दर्द तो उठेगा ही और दर्द उठेगा तो आह दूर तलक जाएगी भी।

चंदा उगाही के क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। इसे मैनजमेंट का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। संस्थाएं और राजनीतिक दल इस क्षेत्र में निष्णात लोगों को ही कोषाध्यक्ष का पदभार संभलाती हैं। चंदा बटोरना कला भी है और प्रविधि भी जो कला से पार नहीं पाता है वो तकनीक को अपनाता है और तकनीकी सहायता के लिए बहुत झटके हैं व्यवस्था के पास चार सौ चालीस वोल्ट के देने को। इसलिए हे चन्दालुओं चंदा करो और पूरे गर्व से करो शर्माने की कोई जरूरत नहीं तुमने वही किया जो वक़्त की माँग थी।

जार्ज वाशिंगटन से गांधी तक

अरुण कुमार डनायक

लेखक समाजसेवी हैं।

राष्ट्र-निर्माताओं की साझा विरासत

1787 के संवैधानिक सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए वाशिंगटन ने नए संविधान को वैधता दी और कमजोर परिसंघ से मजबूत संघीय गणराज्य की ओर संक्रमण संभव बनाया। नई अमेरिकी सरकार में राष्ट्रपति की उपाधि को लेकर विवाद हुआ। कुछ सीनेटर 'हिज हाइनेस' जैसी राजसी उपाधि चाहते थे, किंतु लोकतांत्रिक भावना के अनुरूप वाशिंगटन ने 'मिस्टर प्रेसिडेंट' स्वीकार किया, जो अमेरिकी गणराज्य और नागरिक समानता का प्रतीक बन गया। वाशिंगटन की सबसे बड़ी चिंता यह थी कि राज्यों की अनियंत्रित संप्रभुता अमेरिका को कमजोर कर देगी। संघीय संधि पत्र की कमजोरियों और शेज़ विद्रोह जैसी घटनाओं ने उन्हें 'संघीय राष्ट्रवाद' की अवधारणा की ओर प्रेरित किया। यात्राओं, समारोहों और राष्ट्रीय प्रतीकों के माध्यम से वाशिंगटन ने बिखरे राज्यों को साझा राष्ट्रीय चेतना से जोड़ा।

4 जुलाई को अमेरिकी स्वतंत्रता की 250वीं वर्षगाँठ पर जॉर्ज वाशिंगटन की पहचान पहले राष्ट्रपति से बढ़कर एक राष्ट्र-निर्माता की होगी। उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष में जॉर्ज वाशिंगटन केवल सैन्य विजेता नहीं थे, बल्कि ऐसे राष्ट्र-निर्माता थे जिन्होंने बिखरी अमेरिकी कॉलोनियों को साझा राष्ट्रीय चेतना से जोड़ने का प्रयास किया। अमेरिकी क्रांति की वास्तविक सफलता केवल ब्रिटेन से स्वतंत्रता प्राप्त करने में नहीं, बल्कि उसे स्थायी और संगठित राजनीतिक व्यवस्था में बदलने में थी, जिसमें वाशिंगटन की केंद्रीय भूमिका रही।

1787 के संवैधानिक सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए वाशिंगटन ने नए संविधान को वैधता दी और कमजोर परिसंघ से मजबूत संघीय गणराज्य की ओर संक्रमण संभव बनाया। नई अमेरिकी सरकार में राष्ट्रपति की उपाधि को लेकर विवाद हुआ। कुछ सीनेटर 'हिज हाइनेस' जैसी राजसी उपाधि चाहते थे, किंतु लोकतांत्रिक भावना के अनुरूप वाशिंगटन ने 'मिस्टर प्रेसिडेंट' स्वीकार किया, जो अमेरिकी गणराज्य और नागरिक समानता का प्रतीक बन गया। वाशिंगटन की सबसे बड़ी चिंता यह थी कि राज्यों की अनियंत्रित संप्रभुता अमेरिका को कमजोर कर देगी। संघीय संधि पत्र की कमजोरियों और शेज़ विद्रोह जैसी घटनाओं ने उन्हें 'संघीय राष्ट्रवाद' की अवधारणा की ओर प्रेरित किया। यात्राओं, समारोहों और राष्ट्रीय प्रतीकों के माध्यम से वाशिंगटन ने बिखरे राज्यों को साझा राष्ट्रीय चेतना से जोड़ा। सादगी, आत्मसंयम और 1796 में स्वेच्छा से पद त्यागकर उन्होंने लोकतांत्रिक मर्यादाओं तथा शांतिपूर्ण सत्ता-हस्तांतरण की वह परंपरा स्थापित की, जो अमेरिकी लोकतंत्र की नींव बनी।

वाशिंगटन मानते थे कि सम्मान उपाधियों और अलंकरणों से नहीं, बल्कि चरित्र से अर्जित होता है। आत्मसंयम, निष्पक्षता और मितभाषिता ने उन्हें केवल नेता नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विश्वास और नैतिक अधिकार का प्रतीक बना दिया। संकट के क्षणों में यही संयम उनकी सबसे बड़ी शक्ति और विश्वसनीयता का आधार था।

वाशिंगटन केवल कृषक नेता नहीं थे, बल्कि आर्थिक स्वतंत्रता के भी चिंतक थे। वे ब्रिटिश आयातों पर निर्भरता को अधूरी स्वतंत्रता मानते थे और देश में उद्योग, तकनीक तथा विनिर्माण के विकास पर बल देते थे। यात्राओं में वे स्थानीय उद्योगों और कपड़ा उत्पादन की संभावनाएँ देखते थे तथा समझते थे कि केवल घरेलू कताई-बुनाई पर्याप्त नहीं है। नदियों और नहरों को वे 'बॉन्ड्स ऑफ यूनियन' कहते थे, क्योंकि वे व्यापार और संपर्क के माध्यम से राज्यों को जोड़ती थीं। विदेशी वस्तुओं के स्थान पर अमेरिकी उत्पादों के उपयोग पर उनका जोर गांधी के स्वदेशी आंदोलन की याद दिलाता है, यद्यपि गांधी कुटीर उद्योग के पक्षधर थे, जबकि वाशिंगटन बड़े पैमाने पर औद्योगिक विकास के समर्थक थे। उनकी यह दृष्टि आधुनिक आर्थिक राष्ट्रवाद का प्रारंभिक रूप कही जा सकती है।

वाशिंगटन लोकतंत्र में प्रेस की भूमिका को स्वीकार करते थे, किंतु राष्ट्रीय एकता के लिए जनता से प्रत्यक्ष संवाद को अधिक प्रभावी मानते थे। वे महिलाओं की सार्वजनिक उपस्थिति को सभ्यता और स्थिरता का प्रतीक मानते थे तथा वस्त्र उद्योग और घरेलू उत्पादन में उनकी भूमिका को राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता से जोड़ते थे। औपचारिक मताधिकार के बिना भी महिलाएँ राष्ट्र-निर्माण की महत्वपूर्ण किंतु मौन सहभागी थीं। वाशिंगटन की धार्मिक नीति समावेशी थी। वे धार्मिक स्वतंत्रता को जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे, कट्टरता के विरोधी थे और विविधता को राष्ट्र की शक्ति समझते थे।

वाशिंगटन अनुशासन और न्यायप्रियता के प्रतीक होते हुए भी दासप्रथा पर व्यवहारिक राजनीति अपनाते रहे। फ़िलाडेल्फ़िया में उन्होंने दासों को स्वतंत्र होने से रोकने हेतु वर्जीनिया भेजा। तत्कालीन दासों की अनेक कहानियाँ बताती हैं कि स्वतंत्र मनुष्य के रूप में जीना ही उनकी मूल

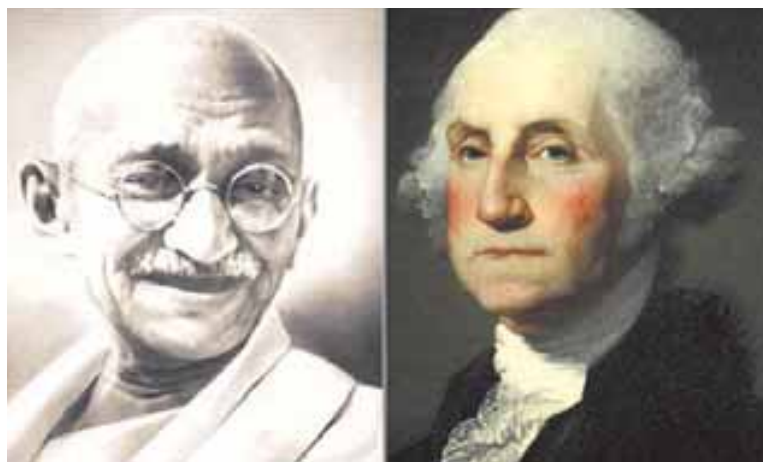

आकांक्षा थी। यूरोपीय उपनिवेशवादियों द्वारा अनेक अमेरिकी मूल निवासी जनजातियों का विस्थापन और दमन वाशिंगटन से बहुत पहले शुरू हो चुका था। राष्ट्रपति बनने के बाद भी पश्चिमी विस्तार और सैन्य अभियानों की उनकी नीतियाँ इस प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से रोक नहीं सकीं; परिणामस्वरूप अनेक मूल निवासी समुदाय अपने पारंपरिक भूभाग और जीवन से लगातार वंचित होते गए।

1789 में राष्ट्रपति पद ग्रहण करने से ठीक पहले वाशिंगटन जिस स्थिति का सामना कर रहे थे, उसकी तुलना आधुनिक क्रांतिकारी नेताओं–जैसे नेल्सन मंडेला और महात्मा गांधी–से की जा सकती है। इन दोनों महान नेताओं ने समझा था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यदि आंतरिक प्रतिद्वंद्विताएँ बढ़ीं, तो लोगों की आशाएँ टूट सकती हैं। जॉर्ज वाशिंगटन और महात्मा गांधी दोनों ही अपनेअपने राष्ट्रों के लिए नैतिक अधिकार और साझा राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक बने। गांधीजी ने विकेंद्रीकृत स्वराज, कुटीर उद्योग, स्त्री अधिकार और सामाजिक समानता पर बल दिया। उनकी सादगी की अवधारणा में छोटे शासन ढाँचे, सीमित सुविधाएँ और पंचायतों के माध्यम से लोकतंत्र को सशक्त बनाने का विचार शामिल था। स्वतंत्र भारत ने उनकी अनेक प्रेरणाओं को अपनाया किंतु सार्वजनिक जीवन में सादगी, लोकसेवकों के लिए आचार संहिता और जवाबदेही संबंधी उनके आदर्श व्यापक रूप से संस्थागत रूप नहीं ले सके। सार्वजनिक जीवन का वैभव आज भी गांधी के सादगी-आदर्श से दूर दिखाई देता है। इस प्रकार वाशिंगटन और गांधी दोनों ने राष्ट्रीय विखंडन को चुनौती दी, पर उनकी दृष्टि अलग रही। वाशिंगटन जहाँ संघीय राज्य को सर्वोपरि मानते थे और मूल निवासियों तथा अश्वेत दासों के प्रश्न पर निर्णायक हस्तक्षेप नहीं कर सके, वहीं गांधी आदिवासियों सहित हर प्रकार के उत्पीड़ित और वंचित समुदाय के प्रति नैतिक संवेदना, सामाजिक समानता और विकेंद्रीकरण को राष्ट्र-निर्माण का अनिवार्य आधार मानते थे। नेल्सन मंडेला ने स्वतंत्रता के बाद प्रतिशोध नहीं, बल्कि मेल-मिलाप का मार्ग चुना। इसी कारण दक्षिण अफ्रीका नस्लभेद से मुक्त हुआ और सत्ता परिवर्तन के बाद भी श्वेत नए लोकतांत्रिक राष्ट्र का हिस्सा बने रहे। वाशिंगटन और गांधी की भाँति मंडेला ने भी राजनीतिक विजय को राष्ट्रीय एकता का माध्यम बनाया। स्वतंत्रता के बाद संस्थाओं के निर्माण और आधुनिक राज्य की आधारशिला रखने के कारण नेहरू की भूमिका भारत में वैसी ही थी जैसी अमेरिका में वाशिंगटन की। उपनिवेशी शासन से मुक्त भारत के नव निर्माण का अवसर पाकर उन्होंने महात्मा गांधी के शिष्य होते हुए भी अपनी स्वतंत्र दृष्टि अपनाई। एक ओर उन्होंने बड़े उद्योगों और सार्वजनिक क्षेत्र की नींव रखी, वहीं मिश्रित अर्थव्यवस्था के अंतर्गत निजी उद्योगों, लघु उद्योगों और कृषि को भी समान महत्व दिया। इस नीति ने भारत को आधुनिक औद्योगिक विकास और ग्रामीण आत्मनिर्भरता, दोनों की दिशा दी।

वाशिंगटन, गांधी, मंडेला और नेहरू केवल राजनेता नहीं थे, बल्कि वे राष्ट्रवाद, देश की एकता और लोकतांत्रिक परंपराओं के शिल्पी थे। इन महान नेताओं ने नैतिक अधिकार, सार्वजनिक विश्वास और राष्ट्रीय प्रतीकों से समाज को साझा राष्ट्र में रूपांतरित किया। आज जब दुनिया के अनेक लोकतंत्र ध्रुवीकरण, व्यक्तिपूजा और संस्थागत क्षरण की चुनौतियों से जूझ रहे हैं, तब इन नेताओं की विरासत हमें याद दिलाती है कि राष्ट्र केवल संविधान, सेनाओं या अर्थव्यवस्थाओं से नहीं बनते; वे नैतिक नेतृत्व, सार्वजनिक विश्वास और लोकतांत्रिक परंपराओं के सतत संरक्षण से निर्मित होते हैं।

दुर्गेश्वर राय

(लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संयोजक हैं)

लोहगढ़ किले का अद्भुत स्थापत्य और नैसर्गिक अभेद्यता

महाराष्ट्र के पुणे जिले में लोनावला के पास स्थित लोहगढ़ किला इन दिनों एक गंभीर आपराधिक घटना के कारण चर्चा में है। 18 जून 2026 को इस किले की 350 फीट ऊँची चट्टान से गिरकर केतन अग्रवाल नामक एक 26 वर्षीय व्यापारी की मौत हो गई थी। शुरुआत में इसे एक दुर्घटना माना गया था। जाँच के पुलिस ने केतन की मंगेतर सिया गोयल और उसके मित्र चेतन चौधरी को हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया। जाँच के अनुसार दोनों ने मिलकर केतन को किले की पहाड़ी से नीचे धकेल दिया था। इस घटना के बाद से सोशल मीडिया पर लोग उस स्थान को 'सिया पॉइंट' कहने लगे हैं।

इस घटना ने पर्यटकों और आम जनमानस का ध्यान इस दुर्ग की तरफ खींचा है, लेकिन इस अभेद्य किले का वास्तविक परिचय इस हालिया त्रासदी से कहीं अधिक विशाल, गौरवशाली और महत्वपूर्ण है। यह किला भारत के समृद्ध सैन्य इतिहास, अद्वितीय वास्तुकला और भौगोलिक श्रेष्ठता का गवाह रहा है। लोहगढ़, जिसका शाब्दिक अर्थ ही 'लोहे का किला' है, अपने नाम को सार्थक करते हुए सदियों तक अजेय रहा और आज भी अपनी पूरी भव्यता के साथ इतिहास प्रेमियों को आकर्षित करता है। इतिहासकार इस बात पर जरुर चिंता जता रहे हैं कि एक ऐतिहासिक धरोहर की पहचान एक अपराध स्थल के रूप में होने लगी है।

लोहगढ़ किसी एक कालखंड में बनकर तैयार नहीं हुआ, बल्कि यह विभिन्न राजवंशों के संरक्षण में लगातार विकसित और मजबूत होता गया। इस पहाड़ी पर शुरुआती बसावट और निर्माण कार्य ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में सातवाहन राजवंश के काल में शुरू हुआ था। सातवाहन शासकों ने इस स्थान की अद्वितीय भौगोलिक स्थिति को भाँपते हुए यहाँ बुनियादी सैन्य चौकियाँ और पानी के टैंक बनवाए थे। इसके बाद चालुक्य, राष्ट्रकूट, यादव और बहमनी सुल्तानों ने समय-समय पर इसके रणनीतिक महत्व को देखते हुए इसमें नए बुर्ज, दीवारें और फाटकों का विस्तार किया। यह एक ऐसा दुर्ग है जिसे प्रकृति ने स्वयं एक अभेद्य रूप दिया था और मानव श्रम ने उसमें सुरक्षा की परतें जोड़ीं। सदियों के इस क्रमिक निर्माण में हज़ारों स्थानीय शिल्पकारों, पत्थरों को तराशने वाले मजदूरों और सैनिकों ने अपना पसीना बहाया होगा, तब जाकर यह चट्टानी चोटी एक अजेय किले में तब्दील हो सकी।

लोहगढ़ की भौगोलिक अवस्थिति इतनी महत्वपूर्ण थी कि यहाँ से कोंकण और दक्कन के पठार को जोड़ने वाले प्राचीन व्यापारिक मार्ग 'भोर घाट' पर पूरी तरह से नज़र रखी जा सकती थी। उस दौर में जो भी शासक इस व्यापार मार्ग पर नियंत्रण चाहता था, उसके लिए लोहगढ़ पर अधिकार करना अनिवार्य था। साथ ही, समुद्र तल से लगभग 3412 फीट की ऊंचाई पर स्थित होने के कारण यहाँ से मीलों दूर तक आने वाले दुश्मनों की गतिविधियों को आसानी से देखा जा सकता था। यह किला न केवल एक सैन्य छावनी था, बल्कि आसपास के क्षेत्रों के राजस्व और खजाने को सुरक्षित रखने का एक सबसे भरोसेमंद माध्यम भी था। इसकी इसी अभेद्यता और सुरक्षा क्षमता के कारण ही आगे चलकर यह मराठा साम्राज्य के सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक बना।

इस किले के इतिहास का सबसे स्वर्णिम अध्याय छत्रपति शिवाजी महाराज के काल में लिखा गया। शिवाजी महाराज

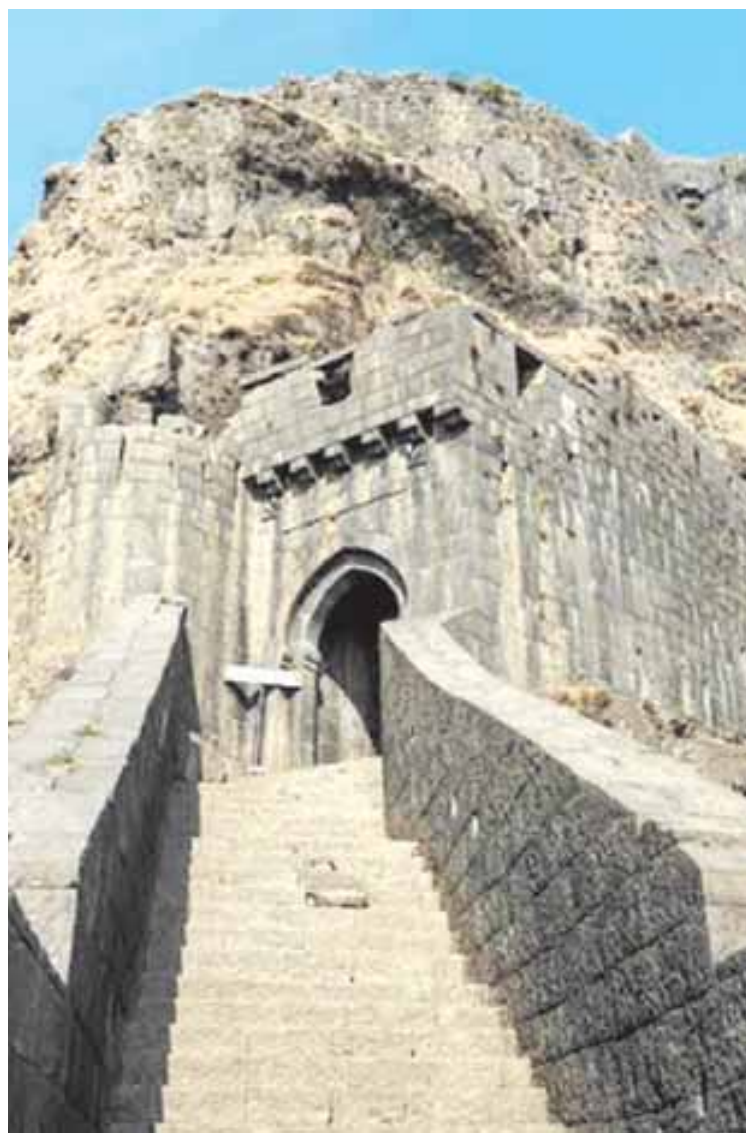

ने 1648 ई. में इस किले पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। हालांकि, 1665 ई. में मुगलों के साथ हुई प्रसिद्ध 'पुरंदर की संधि' के तहत शिवाजी महाराज को यह किला औरंगज़ेब को सौंपना पड़ा था। लेकिन शिवाजी महाराज ने1760 ई. में मुगलों को शिकस्त देकर लोहगढ़ पर दुबारा भगवा परचम लहरा दिया। मराठा साम्राज्य के दौरान इस किले का उपयोग छत्रपति शिवाजी महाराज ने सूरत से जीते गए अपार खजाने को सुरक्षित रखने के लिए किया था। शिवाजी महाराज के बाद पेशवाओं के काल में भी यह किला बेहद महत्वपूर्ण बना रहा। नाना फड़नवीस ने इस किले को अपना निवास स्थान बनाया और इसके भीतर कई नए निर्माण कार्य करवाए, जिनमें एक बड़ा तालाब और एक बावड़ी शामिल थी। आखिरकार, 1818 ई. में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने कड़े संघर्ष के बाद इस किले पर अपना अधिकार कर लिया और इसके सामरिक महत्व को कम करने के लिए इसके कुछ हिस्सों को क्षतिग्रस्त कर दिया।

यह प्राचीन भारतीय दुर्ग वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस किले की सबसे बड़ी विशेषता इसकी प्राकृतिक बनावट है, जिसे 'विशापुर किले' की जुड़वां पहाड़ी के रूप में देखा जाता है। किले में प्रवेश करने के लिए चार विशाल और कलात्मक द्वार बनाए गए हैं, जिन्हें 'गणेश दरवाजा', 'नारायण दरवाजा', 'हनुमान दरवाजा' और 'महा दरवाजा' कहा जाता है। ये दरवाजे आज भी वास्तुकला के बेजोड़ नमूने हैं, जिन्हें हाथी के हमलों से बचाने के लिए लोहे की बड़ी-बड़ी कीलों से सुसज्जित किया गया था। महा दरवाजा के पास स्थित नक्काशी और प्राचीन शिलालेख इसके ऐतिहासिक कालक्रम को दर्शाते हैं। किले का सबसे आकर्षक और भौगोलिक रूप से अद्भुत हिस्सा इसकी पश्चिमी दिशा में फैला एक लंबा और संकरा चट्टानी हिस्सा है, जिसे 'विंचू काटा' या 'बिच्छू का डंक' कहा जाता है। यह संरचना बिल्कुल बिच्छू के डंक जैसी लगती है और इस प्राकृतिक ढाल के कारण दुश्मन के लिए इस तरफ से किले पर हमला करना पूरी तरह असंभव था। इसके अलावा, किले के भीतर चट्टानों को काटकर बनाए गए पानी के विशाल टैंक और गुफाएं हैं, जो सातवाहन काल की जल प्रबंधन प्रणाली की समझ को प्रदर्शित करती हैं।

स्वतंत्रता के बाद, भारत सरकार और पुरातत्व विभाग ने इस राष्ट्रीय धरोहर के महत्व को समझा। लोहागढ़ को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा एक संरक्षित स्मारक घोषित किया गया। आज यह किला यूनेस्को की संभावित विश्व धरोहर सूची में शामिल 'मराठा मिलिट्री लैंडस्केप' का एक बेहद महत्वपूर्ण हिस्सा है। आज के समय में इस प्राचीन विरासत का संरक्षण एक बड़ी चुनौती बन गया है। सरकार और विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा समय-समय पर इसकी प्राचीर की मरम्मत, कचरा प्रबंधन और पर्यटकों की सुरक्षा के लिए रेलिंग लगाने जैसे कार्य किए जाते हैं। हालांकि, हालिया आपराधिक घटना ने इस ऐतिहासिक स्थल की सुरक्षा व्यवस्था और यहाँ आने वाले पर्यटकों की गतिविधियों पर नज़र रखने की आवश्यकता को एक बार फिर रेखांकित किया है। इतिहासकारों और पर्यावरणविदों का मानना है कि ऐसे गौरवशाली स्थलों की पहचान उनके ऐतिहासिक शौर्य और वास्तुकला से होनी चाहिए, न कि किसी अवांछित घटना से। लोहगढ़ किला आज भी सह्याद्री की पहाड़ियों पर सीना ताने खड़ा है, जो हमें याद दिलाता है कि समय बदल सकता है, घटनाएं आ-जा सकती हैं, लेकिन पत्थरों में कैद इतिहास की महान गाथाएं हमेशा अमर रहती हैं।

दृष्टिकोण

राजेन्द्र जोशी

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

पंचमहाभूत, और मनुष्य का भविष्य

भारतीय संस्कृति ने हजारों वर्ष पहले जिस सत्य को समझ लिया था, उसे आज आधुनिक विज्ञान भी स्वीकार कर रहा है। हमारे ऋषियों ने कहा था कि यह सम्पूर्ण सृष्टि और स्वयं मनुष्य पंचमहाभूत–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से निर्मित हैं। ये पाँच तत्व केवल दार्शनिक कल्पना नहीं हैं, बल्कि जीवन के पाँच आधार हैं। यदि इनमें से किसी एक का संतुलन भी बिगड़ जाए, तो जीवन संकट में पड़ जाता है।आज जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन, जल संकट, जंगलों के विनाश और भूमि के क्षरण जैसी समस्याओं से जूझ रही है, तब पंचमहाभूत की यह प्राचीन अवधारणा पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गई है। दुर्भाग्य यह है कि विकास की अंधी दौड़ में मनुष्य उन्हीं तत्वों को नष्ट कर रहा है, जिनसे उसका अपना अस्तित्व बना है।

भारतीय परंपरा में जल को देवता माना गया है। नदियों को माता का सम्मान दिया गया। नर्मदा, गंगा, यमुना, गोदावरी और कावेरी केवल जलधाराएँ नहीं, बल्कि जीवनधाराएँ थीं। आज वही नदियाँ बाँधों, प्रदूषण, रेत खनन और औद्योगिक कचरे से कराह रही हैं। भूजल लगातार नीचे जा रहा है। गाँवों के कुएँ सूख रहे हैं। शहरों में पानी बिकने वाली वस्तु बन गया है। जिस जल के बिना मनुष्य तीन दिन भी जीवित नहीं रह सकता, उसी जल को हमने सबसे अधिक संकट में डाल दिया है। यदि जल समाप्त होगा तो केवल प्यास नहीं बढ़ेगी, बल्कि कृषि, पशुधन, वनस्पति और सम्पूर्ण जीवनरूचक्र प्रभावित होगा।

जंगल केवल लकड़ी का भंडार नहीं हैं। वे वर्षा के निर्माता हैं, नदियों के संरक्षक हैं, मिट्टी के रक्षक हैं और पृथ्वी के फेफड़े हैं।

जब जंगल काटे जाते हैं, तब केवल पेड़ नहीं गिरते, बल्कि हजारों पक्षियों के घर उजड़ते हैं, वन्यजीवों का जीवन समाप्त होता है और प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाता है।आदिवासी समाज सदियों से जंगल को माँ मानकर जीता आया है। उसने जंगल से उतना ही लिया, जितनी आवश्यकता थी। लेकिन आधुनिक विकास मॉडल ने जंगल को केवल खनिज, लकड़ी और भूमि के रूप में देखा।आज मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड और देश के अनेक वन क्षेत्रों में विकास के नाम पर जंगल लगातार कम हो रहे हैं। परिणामस्वरूप तापमान बढ़ रहा है, वर्षा का चक्र बदल रहा है और प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ती जा रही हैं। पृथ्वी तत्व मनुष्य के शरीर की स्थिरता का प्रतीक है। यही तत्व हमारी खेती, भोजन और आवास का आधार है।लेकिन आज यही धरती सबसे अधिक घायल है। कहीं अंधाधुंध खनन हो रहा है, कहीं उपजाऊ भूमि पर कंक्रीट के जंगल खड़े हो रहे हैं, तो कहीं रासायनिक खेती ने मिट्टी की उर्वरता समाप्त कर दी है।धरती का सीना खोदकर हम खनिज तो निकाल रहे हैं, लेकिन यह भूल रहे हैं कि प्रकृति का प्रत्येक संसाधन सीमित है। यदि धरती की सहनशक्ति समाप्त हो गई, तो मानव सभ्यता

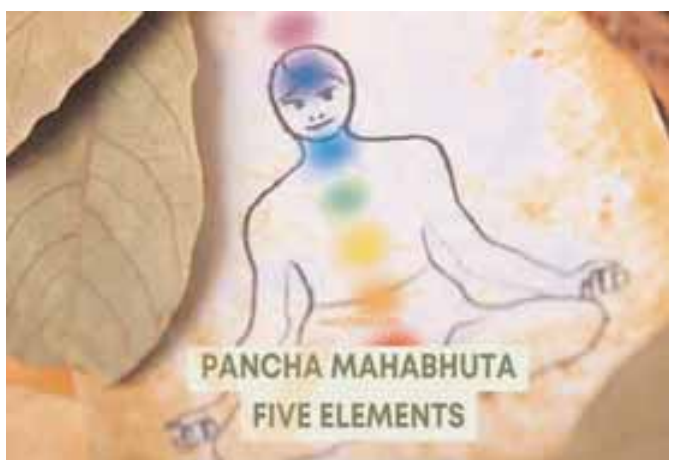

की नींव भी हिल जाएगी। अग्नि जीवन देती भी है और विनाश भी करती है। शरीर में यही अग्नि पाचन शक्ति है, तो प्रकृति में यही सूर्य की ऊर्जा है।आज मनुष्य ने इस अग्नि का संतुलन बिगाड़ दिया है। जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग, उद्योगों से निकलती गैसें और जंगलों की कटाई ने पृथ्वी का तापमान बढ़ा दिया है।आज हीट वेव, जंगलों की आग, सूखा और बाढ़ जैसी घटनाएँ इसी असंतुलन की चेतावनी हैं। वायु दिखाई नहीं देती, लेकिन उसके बिना जीवन कुछ मिनटों का ही मेहमान है।आज महानगरों की हवा जहर बन चुकी है। बच्चों के फेफड़े कमजोर हो रहे हैं, बुजुर्गों को साँस लेने में कठिनाई हो रही है।आकाश तत्व केवल खाली स्थान नहीं, बल्कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड का विस्तार है। यही प्राकृतिक संतुलन का आधार है। वायुमंडल में बढ़ती ग्रीनहाउस गैसें इसी आकाशीय संतुलन को बिगाड़ रही हैं।

यदि हम ध्यान से देखें तो पंचमहाभूत की अवधारणा आज के पर्यावरणीय विमर्श में जल, जंगल और ज़मीन के रूप में दिखाई देती है। जल, जीवन का आधार है। जंगल, वायु और वर्षा का आधार हैं।ज़मीन, भोजन और अस्तित्व का आधार है। इन तीनों की रक्षा किए बिना पंचमहाभूत का संतुलन संभव नहीं। नर्मदा केवल एक नदी नहीं, बल्कि मध्य भारत की जीवनरेखा है। उसके किनारे बसे गाँव, खेत, जंगल और आदिवासी संस्कृति सदियों से प्रकृति के साथ संतुलित जीवन का उदाहरण रहे हैं।लेकिन बड़े बाँधों, अंधाधुंध रेत खनन, औद्योगिक प्रदूषण और वनों की कटाई ने इस पूरे क्षेत्र के प्राकृतिक संतुलन को प्रभावित किया है।

जब नदी का प्राकृतिक प्रवाह रुकता है, तब केवल पानी नहीं रुकता; मछलियाँ, खेती, जैव विविधता और संस्कृति भी प्रभावित होती है।नर्मदा हमें यह सिखाती है कि विकास और प्रकृति का संतुलन बनाए बिना कोई भी समाज स्थायी नहीं रह सकता। भारतीय दर्शन मनुष्य को प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका एक अंग मानता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का अर्थ केवल मनुष्यों का परिवार नहीं, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि का परिवार है।जब हम किसी नदी को प्रदूषित करते हैं, जंगल काटते हैं या भूमि को बंजर बनाते हैं, तब वास्तव में हम अपने ही परिवार को नुकसान पहुँचा रहे होते हैं। आज आवश्यकता केवल कानूनों की नहीं, बल्कि चेतना की है। जब तक मनुष्य यह नहीं समझेगा कि प्रकृति पर किया गया हर आघात अंततः उसी पर लौटकर आता है, तब तक पर्यावरण संरक्षण अधूरा रहेगा।

पंचमहाभूत हमें सिखाते हैं कि जीवन परस्पर निर्भरता का नाम है। यदि जल बचेगा तो जीवन बचेगा; यदि जंगल बचेंगे तो वायु बचेगी; यदि धरती बचेगी तो अन्न बचेगा; यदि आकाश और अग्नि का संतुलन बना रहेगा तो प्रकृति मुस्कुराएगी। इसलिए अब समय आ गया है कि विकास की परिभाषा बदली जाए। ऐसी प्रगति, जो जल, जंगल और ज़मीन को नष्ट कर दे, वह अंततः मनुष्य का भी विनाश करती है।

प्रकृति को बचाना कोई दान नहीं है; यह आत्मरक्षा का सबसे बड़ा उपाय है।

क्योंकि मनुष्य पंचमहाभूत से बना है, और पंचमहाभूत प्रकृति में बसते हैं। यदि प्रकृति बचेगी, तभी मनुष्य बचेगा।

स्वामी विवेकानंद पुण्यतिथि

भारत का पथ आलोकित करती ज्योति

अमित राव पवार
युवा लेखक

4 जुलाई 1902 को बेलूर मठ में एक युवा संन्यासी ने ध्यानावस्था में अपनी अंतिम सांस ली और महासमाधि को प्राप्त हुए। उनकी आयु मात्र उनतालीस वर्ष थी,किंतु उस अल्प जीवन में उन्होंने जो वैचारिक ज्योति प्रज्वलित की,वह आज भी भारत के पथ को आलोकित कर रही है। इसलिए स्वामी विवेकानंद जी की पुण्यतिथि केवल श्रद्धांजलि का अवसर नहीं,बल्कि आत्ममंथन का दिवस है।यह स्वयं से पूछने का दिन है कि क्या हम उस भारत के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं,जिसका स्वप्न स्वामी जी ने देखा था। महापुरुषों का जाना शून्य अवश्य छोड़ता है,किंतु यदि उनके विचार जीवित रहें तो वह शून्य निराशा नहीं बनता,प्रेरणा बन जाता है। स्वामी विवेकानंद भी ऐसे ही युगपुरुष थे। उनका शरीर 4 जुलाई 1902 को शांत हुआ,पर उनकी वाणी,उनका आत्मविश्वास और उनका राष्ट्रदर्शन आज भी करोड़ों भारतीयों के मन में धड़कता है। यही कारण है कि उनकी पुण्यतिथि दुःख का नहीं, संकल्प का दिवस है।

अपने जीवन के अंतिम दिन भी उन्होंने विश्राम को नहीं, बल्कि कर्म को चुना। उन्होंने शिष्यों के साथ वेद, संस्कृत और शिक्षा पर चर्चा की,मठ के भावी कार्यों पर विचार किया और भारत के उज्ज्वल भविष्य के प्रति अपना अटूट विश्वास व्यक्त किया। इसके बाद संध्या के समय ध्यान में लीन होकर उन्होंने महासमाधि ग्रहण की। यह दृश्य केवल एक संन्यासी के जीवन का अंत नहीं था, यह कर्म,ज्ञान और अध्यात्म के अद्भुत समन्वय का अंतिम संदेश था। उन्होंने अपने जीवन से मानो यह कह दिया कि मनुष्य का मूल्य उसके जीवन की अवधि से नहीं,बल्कि उसके जीवन की दिशा से निर्धारित होता है।आज जब उनकी पुण्यतिथि पर हम उन्हें स्मरण करते हैं,तो सबसे पहले उनके उस आग्रह को याद करना चाहिए कि भारत का पुनर्निर्माण केवल भवनों, उद्योगों और योजनाओं से नहीं होगा,वह जागृत मनुष्य से होगा। उनका विश्वास था कि यदि प्रत्येक भारतीय अपने भीतर निहित शक्ति को पहचान ले,तो भारत को विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक सकता।उन्होंने बार-बार कहा कि प्रत्येक आत्मा दिव्य है। यही विचार भारतीय आत्मविश्वास का सबसे बड़ा आधार है।

आज का भारत निस्संदेह अनेक उपलब्धियों के साथ आगे बढ़ रहा है। विज्ञान,अंतरिक्ष,डिजिटल तकनीक, चिकित्सा, नवाचार और वैश्विक कूटनीति के क्षेत्र में देश ने उल्लेखनीय प्रगति की है। यह गर्व का विषय है। किंतु स्वामी विवेकानंद शायद आज भी यही प्रश्न पूछते,क्या हमारी संवेदनाएँ भी उतनी ही विकसित हुई हैं,जितनी हमारी तकनीक? क्या हमारी प्रगति के केंद्र में मनुष्य है? क्या समाज में बढ़ती कटुता,वैमनस्य और असहिष्णुता उस भारत की पहचान हो सकती है जिसकी कल्पना उन्होंने की थी?

विवेकानंद ने धर्म को कभी विभाजन का माध्यम नहीं माना। उनके लिए धर्म का अर्थ था मनुष्य के भीतर निहित श्रेष्ठता का जागरण। उन्होंने सेवा को साधना बनाया और करुणा को आध्यात्मिकता का सर्वोच्च रूप बताया। वे कहते थे कि जिस समाज में भूख,अशिक्षा और अभाव हो, वहाँ सबसे बड़ी पूजा पीड़ित मनुष्य की सेवा है। इसलिए उनकी पुण्यतिथि पर यदि हम केवल औपचारिक श्रद्धांजलि तक सीमित रह जाएँ और समाज के कमजोर वर्गों के प्रति अपने दायित्व को भूल जाएँ,तो यह उनके विचारों के साथ न्याय नहीं होगा। उनके अंतिम वर्षों में एक चिंता बार-बार दिखाई देती है।भारत का भविष्य उसके युवाओं के हाथों में है। वे चाहते थे कि युवा केवल रोजगार की तलाश करने वाले न बनें,बल्कि राष्ट्र के चरित्र- निर्माता बनें आत्मविश्वास, अनुशासन, निःस्वार्थ सेवा और निर्भीकता यही उनके संदेश का सार था। आज जब युवा पीढ़ी अभूतपूर्व अवसरों और जटिल चुनौतियों के बीच खड़ी है,तब विवेकानंद जी की वाणी पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक प्रतीत होती है। उनका विश्वास था कि शक्तिशाली राष्ट्र वही बनता है,जिसके नागरिक चरित्रवान हों।पुण्यतिथि का वास्तविक अर्थ यही है कि हम महापुरुष के अधूरे कार्यों को अपना दायित्व मानें। यदि हम केवल पुष्प अर्पित कर लौट आएँ,तो स्मरण अधूरा रह जाएगा। किंतु यदि हम अपने जीवन में ईमानदारी,सेवा, आत्मानुशासन और राष्ट्रहित को स्थान दें,तो वही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। महापुरुषों को सबसे अधिक सम्मान शब्दों से नहीं,आचरण से मिलता है।

4 जुलाई हमें यह भी सिखाती है कि मृत्यु महापुरुषों की यात्रा का अंत नहीं होती। दीपक बुझ सकता है,पर उसकी लौ असंख्य दीपों में जीवित रहती है। स्वामी विवेकानंद की लौ आज भी हर उस शिक्षक में जलती है जो शिक्षा को संस्कार से जोड़ता है,हर उस युवा में जो विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता,हर उस सैनिक, किसान,वैज्ञानिक,चिकित्सक और श्रमिक में जो अपने कर्म को राष्ट्रसेवा का माध्यम मानता है। वे हर उस भारतीय में जीवित हैं जो अपने अधिकारों से पहले अपने कर्तव्यों का स्मरण करता है।

स्वामी विवेकानंद जी की पुण्यतिथि हमें शोकाकुल नहीं,उत्तरदायी बनाती है। यह हमें स्मरण कराती है कि भारत का भविष्य केवल सरकारों या नीतियों से नहीं बनेगा,वह तब बनेगा जब प्रत्येक भारतीय अपने भीतर सोई हुई चेतना को जगाएगा। जिस दिन सेवा हमारे स्वभाव का हिस्सा होगी,चरित्र हमारी पहचान होगा और राष्ट्रहित हमारे निर्णयों का आधार बनेगा,उसी दिन विवेकानंद के स्वप्नों का भारत साकार होने लगेगा।

शिक्षा सत्र शुरू, लेकिन शिक्षक नहीं, मुलताई के स्कूलों को 166 अतिथि शिक्षकों का इंतजार

एक माह तक शिक्षकों की कमी से जूझेंगे विद्यालय; संदीपनि विद्यालय में भी पद रिक्त

बैतूल/मुलताई। प्रदेश सरकार शासकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए लगातार प्रयास कर रही है, लेकिन जमीनी स्तर पर व्यवस्थाएं इन दावों पर सवाल खड़े कर रही हैं। इसका ताजा उदाहरण शैक्षणिक सत्र 2026-27 में अतिथि शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया में देखा जा सकता है। नया शिक्षा सत्र 16 जून से प्रारंभ हो चुका है जबकि अतिथि शिक्षकों की ऑनलाइन नियुक्ति प्रक्रिया 30 जून से शुरू की गई। ऐसे में मुलताई विकासखंड के विद्यालयों में लगभग 166 शैक्षणिक पद लंबे समय तक रिक्त रहेंगे और विद्यार्थियों को शिक्षकों की कमी का सामना करना पड़ेगा। शिक्षा क्षेत्र से जुड़े जानकारों का कहना है कि वर्तमान में केवल शैक्षणिक अतिथि शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया शुरू हुई है। वहीं डांस, संगीत, कंप्यूटर और खेल जैसे विषयों के गैर-शैक्षणिक अतिथि शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया अब तक प्रारंभ नहीं हुई है। ऐसे में इन विषयों की पढ़ाई भी प्रभावित होने की आशंका है।

सांदीपनि विद्यालय भी शिक्षकों के अभाव से प्रभावित- विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रदेश सरकार ने सांदीपनि विद्यालय परियोजना प्रारंभ की थी। मुलताई सांदीपनि विद्यालय में गत वर्ष 10 अतिथि शिक्षक कार्यरत थे, लेकिन नए सत्र में अब तक उनकी नियुक्ति नहीं हो सकी है। इसके अलावा दो गैर-शैक्षणिक अतिथि शिक्षकों की नियुक्ति भी लंबित है। इस वर्ष की स्थानांतरण नीति के तहत सांदीपनि विद्यालय से चार शिक्षकों का स्थानांतरण हो चुका है। उनके स्थान पर किन शिक्षकों की पदस्थापना होगी, इसकी जानकारी भी अभी उपलब्ध नहीं है। ऐसे में विद्यालय में शिक्षण व्यवस्था प्रभावित होने की आशंका बनी हुई है। शिक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि यह स्थिति केवल इस वर्ष की नहीं है। लगभग हर वर्ष शिक्षा सत्र शुरू होने के कई सप्ताह बाद तक अतिथि शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया चलती रहती है, जिसका सीधा असर शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पढ़ाई पर पड़ता है।

गर्मी की छुट्टियों में पूरी हो सकती थी नियुक्ति प्रक्रिया - जानकारों का मानना है कि अब अतिथि शिक्षकों की नियुक्ति प्रक्रिया पूरी तरह ऑनलाइन हो चुकी है, इसलिए इसे ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान ही पूरा किया जा सकता था। पिछला शैक्षणिक सत्र 30 मार्च को समाप्त हुआ था तथा इसके बाद लगभग डेढ़ माह का अवकाश रहा। यदि इसी अवधि में ऑनलाइन प्रक्रिया पूरी कर ली जाती तो नए सत्र के पहले दिन से ही अतिथि शिक्षक विद्यालयों में अपनी सेवाएं दे सकते थे।

30 जून से शुरू हुई ऑनलाइन प्रक्रिया- मध्यप्रदेश शिक्षा विभाग के एजुकेशन पोर्टल 3.0 के माध्यम से 30 जून से ऑनलाइन अतिथि शिक्षक नियुक्ति प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। विभागीय निर्देशों के अनुसार पूर्व में कार्य कर चुके अतिथि शिक्षकों को प्राथमिकता दी जाएगी। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आवेदन प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद विद्यालय प्रभारियों द्वारा चयनित अतिथि शिक्षकों को कार्यभार सौंपा जाएगा। साथ ही शाला प्रभारियों को केवल रिक्त पदों का प्रमाणीकरण करने के बजाय वास्तविक आवश्यकता के अनुसार रिक्तियों की प्रविष्टि करने के निर्देश दिए गए हैं।

सहकारी बैंक किसानों को सशक्त बनाने का प्रमुख माध्यम, योजनाओं का लाभ अंतिम छोर तक पहुँचाना हमारा ध्येय : महेन्द्रसिंह यादव

देश के निर्माण में किसानों का योगदान सर्वोपरि है : केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर

धार। मध्यप्रदेश राज्य सहकारी बैंक मर्यादित, भोपाल (अपेक्स बैंक) के प्रशासक महेन्द्रसिंह यादव ने 3 जुलाई को धार जिले के प्रवास के दौरान जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित, धार के तत्वावधान में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर जिले की सहकारी संरचना और विकास कार्यों की समीक्षा की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अपेक्स बैंक प्रशासक महेन्द्रसिंह यादव ने केंद्र एवं राज्य प्रशासन की योजनाओं द्वारा किसानों के लिए किए गए कार्य व उपलब्धियों के बारे में बताया। बैंक के अधिकारी-कर्मचारियों को संबोधित करते हुए स्पष्ट निर्देश दिए कि सहकारिता के मूल उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए किसानों से सीधा और निरंतर संपर्क बनाए रखना अनिवार्य है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि हम सभी का यह नैतिक एवं प्रशासनिक दायित्व है कि शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं को पूरी पारदर्शिता के साथ अंतिम पंक्ति में खड़े किसान तक पहुँचाने का कार्य करें, ताकि कृषि विकास की राह में कोई बाधा न आए। समारोह में उपस्थित केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर ने 'जय जवान, जय किसान' के उद्घोष के साथ अपने संबोधन में कहा कि देश के निर्माण में किसानों का योगदान सर्वोपरि है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए कई ऐतिहासिक निर्णय लिए गए हैं। उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश शासन द्वारा किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर उपलब्ध कराए जाने वाले अल्पावधि फसल ऋण की समय-सीमा को बढ़ाकर एक वर्ष कर दिया गया है, जो पूर्व में 6 माह थी। शासन की योजनाओं को अधिक पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से अब मजदूरों के खातों में सहायता राशि सीधे अंतरित की जाएगी। मंत्री ने शासन की विभिन्न योजनाओं की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और 'जी-राम' (संवाद और जन-सुविधा) संबंधी पहल की जानकारी दी। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशासक श्री यादव ने किसानों को बचत खातों, नए सदस्यों को अंश प्रमाण-पत्र तथा किसान क्रेडिट कार्ड वितरित किए। साथ ही, बैंक परिसर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया । इस दौरान धार विधायक नीना वर्मा, धरमपुरी विधायक कालुसिंह ठाकुर, जिला भाजपा अध्यक्ष निलेश भारती, कलेक्टर राजीव रंजन मीना, बैंक प्रशासक एवं उपायुक्त सुश्री वर्षा श्रीवास, बैंक सीईओ के के रायकवार , वरिष्ठ भाजपा नेता दिलीप पटोंदिया सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार एवं मोटिवेशनल स्पीकर राजेश शर्मा ने किया।

अपेक्स बैंक प्रशासक महेंद्र सिंह यादव भाजपा कार्यालय पहुंचे, कार्यकर्ताओं ने किया भव्य स्वागत

श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे की जन्म भूमि सहयोग और समर्पण की भूमि है: महेंद्र सिंह यादव

धार। मध्यप्रदेश राज्य सहकारी बैंक मर्या. अपेक्स बैंक के प्रशासक महेंद्र सिंह यादव शुक्रवार को धार जिले के दौरे पर रहे। सुबह भोजशाला दर्शन पूजन कार्यक्रम में शामिल होने के बाद भाजपा जिला कार्यालय पंहुचे वहा भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती के नेतृत्व में भाजपा नेता और कार्यकर्ताओं ने गर्मजोशी से श्री यादव का स्वागत किया। इस दौरान विधायक नीना विक्रम वर्मा, भाजपा किसान मोर्चा पूर्व प्रदेश महामंत्री दिलीप पटोंदिया,जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा व महेंद्र सिंह चाचू बना मंचासीन रहें। भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती ने अपेक्स बैंक के प्रशासक महेंद्र सिंह यादव का माँ वांग्देवी का प्रतीक चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया। अपेक्स बैंक के प्रशासक महेंद्र सिंह यादव ने कहा, 'आज पीएम सम्मान निधि से लेकर तीन लाख तक का बिना ब्याज के ऋण, सहकारिता के माध्यम से दिलाने के सारे काम भारतीय जनता पार्टी की सरकारों ने, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, गृह मंत्री अमित शाह जी के नेतृत्व में, और हमारे मध्यप्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व में किए हैं। ये सरकार गाँव, गरीब और किसानों के लिए काम करने वाली सरकार है। सारी योजनाओं को नीचे तक पहुँचाने का काम इन सरकारों ने किया है। श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे जी की धार जन्म भूमि है, श्रद्धेय ठाकरे का जीवन अनुशासन और अटूट समर्पण की एक मिसाल है। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को शुरुआत से ही एक मजबूत संगठन बनाने में अहम भूमिका निभाई थी। यह भूमि सहयोग और समर्पण की भुमि है। हमारे संगठन विचार से जुड़े लोगों को आगे लाना चाहिए, किसी भी समाज या राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है जब राष्ट्र निर्माण की सकारात्मक सोच रखने वाले व्यक्तियों को नेतृत्व करने और आगे बढ़ने का अवसर मिले।

श्री महेंद्रसिंह यादव वरिष्ठ नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री विक्रम वर्मा जी और भाजपा किसान मोर्चा पूर्व प्रदेश महामंत्री दिलीप पटोंदिया के निवास पर उनसे शिष्टाचार भेंट भी की। इस अवसर पर भाजपा जिला महामंत्री देवेंद्र सोनोने, भाजपा नेता शेखर यादव मंडल अध्यक्ष जयराज देवड़ा और विशाल निगम भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा,किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष रविंद्र पाटीदार अनुसूचित जाति मोर्चा जिलाध्यक्ष राकेश चौहान दिनेश गिरवार महेंद्र शक्तावत श्याम नायक मनीष प्रधान कन्हैयालाल पटेल विक्रम पटेल लाखन सिंह नवासा जसप्रीत सिंह डंग लव प्रजापति नवदीप सिंह चौहान सहित भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे। संचालन युवा मोर्चा जिला महामंत्री अंकित भावसार ने किया। जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने दी।

सहकारिता से समृद्धि के तहत प्रदेश का प्रथम सहकार समृद्धि सुपर बाजार धामनोद में प्रारंभ

धार। सहकारिता से समृद्धि के स्वर्णिम 5 वर्ष पूर्ण होने पर प्रदेश भर में चलाए जा रहे हैं सहकारी सप्ताह के अंतर्गत धामनोद में बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि साख सहकारी संस्था बी पेक्स धामनोद के नवनिर्मित प्रदेश के प्रथम सहकार समृद्धि सुपर बाजार का शुभारंभ आज हुआ। मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री महिला एवं बाल विकास सावित्री ठाकुर एवं मध्य प्रदेश राज्य सहकारी बैंक के प्रशासक महेंद्र सिंह यादव तथा विशिष्ट अतिथि धरमपुरी क्षेत्र के विधायक कालूसिंह ठाकुर रहे। अतिथियों को सहकारी ध्वज से सम्मान के साथ सभा स्थल लाया गया जहां अतिथियों द्वारा सहकार समृद्धि सुपर बाजार का लोकार्पण कर शुभारंभ किया। उपायुक्त सहकारिता सुश्री वर्षा श्रीवास एवं सीसीबी बैंक महाप्रबंधक के के रायकवार, अंकित परमार,सोनिया लाड , प्रशासक रमेश पेंढारकर ,संजय लुहाड़िया, भूपतसिंह चौहान वीरेंद्र कानूनगो,नारायण चोयल, हिम्मत चोहान जफरखान,अजय पाटीदार ने स्वागत किया ।शब्दों से स्वागत के के रायकवार महाप्रबंधक सी सी बी धार ने किया। जिले में सहकारिता से समृद्धि के तहत हो रहे कार्यों की जानकारी व सुपर बाजार के संबंध उपायुक्त सहकारिता सुश्री वर्षा श्रीवास ने बताया विधायक द्वारा अपने उद्बोधन ने कहा कि मुझे गर्व है कि प्रदेश का पहला सहकारी सुपर बाजार मेरे क्षेत्र में प्रारंभ हुआ ।

नरवाई एवं बाढ़ आपदा प्रबंधन बैठक को अनुविभागीय अधिकारी डॉ. बबीता राठौर ने संबोधित किया

सोहागपुर। जनपद पंचायत सभागार में सोहागपुर अनुभाग में नवागत अनुविभागीय अधिकारी राजस्व डॉ. बबिता राठौर ने नरवाई प्रबंधन एवं बाढ़ आपदा प्रबंधन की अध्यक्षता की इस आयोजित बैठक में जनपद पंचायत अध्यक्ष जालम सिंह पटेल,जनपद पंचायत उपाध्यक्ष राघवेंद्र सिंह पटेल भी मंचासीन थे।

इस अवसर पर नवांगत डॉ. बबीता राठौर ने नरवाई प्रबंधन के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश देकर कहा कि फसल कटाई के बाद खेत में बचे हुए डंठल और अवशेषों को बिना जलाए, उनका सही और वैज्ञानिक तरीके से उपयोग निपटान करने की सलाह किसानों को दी जाए। ताकि पर्यावरण को कोई नुक़सान नहीं पहुंचे तथा मिट्टी की उपजाऊ शक्ति बनी रहे ।। इससे किसानों को आर्थिक लाभ पहुंच सकें। आपने इसी के साथ ही आगामी वर्षा ऋतु को दृष्टिगत रखते हुए बाढ़ आपदा से निपटने की तैयारियों की विस्तृत समीक्षा करते निर्देश दिए कि विगत वर्षों के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में संभावित बाढ़ की स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटने हेतु सभी आवश्यक व्यवस्थाएं समय रहते सुनिश्चित की जाएं। विशेष रूप से कहा कि अनुभाग सोहागपुर के अनेक ग्राम के तटीय क्षेत्र में स्थित हैं, इसलिए संवेदनशील गांवों की पहचान कर राहत एवं बचाव कार्यों की पूर्व तैयारी, आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता तथा संबंधित विभागों के बीच समन्वय बनाए रखा जाए। जिससे किसी भी आपात स्थिति में त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके। इस अवसर अन्य वक्ताओं ने भी सारगर्भित उद्बोधन देकर नरवाई प्रबंधन एवं आपदा प्रबंधन पर प्रकाश डाला। जनपद पंचायत सभागार में विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी ग्राम पंचायतों के सचिव, रोजगार सहायक, नगर पंचायत परिषद के कर्मचारी, वार्ड प्रभारी एवं सोहृत हसील कार्यालय के पटवारी आदि उपस्थित थे। नोट कृपया चित्र को उचित स्थान देने का कष्ट करेंगे।

सोहागपुर पुलिस ने सायबर फ्रॉड के आरोपी को राउरकेला उड़ीसा से किया गिरफ्तार

सोहागपुर। सोहागपुर पुलिस ने दिनांक 22.09.25 के सायबर फ्रॉड मामले के आरोपी को कान्हा पिता श्रीकांत नाग राउरकेला उड़ीसा से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने बताया कि वर्ष 2025 सितम्बर 22 को फरियादी हरीश महेश्वरी पिता कैलाश माहेश्वरी उम्र 46 निवासी सेमरीहरचंद ने थाना सोहागपुर में शिकायत कि उपभोगता फोरम में धान बिक्री के संबंध में दर्ज शिकायत के नाम पर कागजात अपलोड करने हेतु लिंक भेजकर आईएमपीएस के माध्यम से फरियादी के मोबाईल नंबर से लिंक बैंक खाते से 8 लाख 50 हजार रूपये की राशि आहरित कर ली गई थी। जिसमें सोहागपुर पुलिस थाने में

अज्ञात के विरूद्ध अपराध कं0 542/25 धारा 318 (4) बीएनएस, 66 (सी) आईटी एक्ट का पंजीवद्ध किया गया था। प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए पुलिस पुलिस अधीक्षक नर्मदापुरम श्री साईकृष्णा

एस. थोटा (आईपीएस), अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, श्री अभिषेक राजन (रा. पु.से.) नर्मदापुरम के निर्देशन में एवं अनुविभागीय अधिकारी पुलिस सोहागपुर श्री संजू चौहान (रा. पु.से.) के मार्गदर्शन में प्रकरण की विवेचना के दौरान फरियादी की खाते की जानकारी प्राप्त की गई । जिसमें फरियादी के खाते से कुल 8 लाख 50 हजार रू संदेही नेहासिंह के खाता क. 750010110014889 में ट्रांसफर हुए। जिसमें से 4 लाख 50 हाजार रू फरियादी के खाते में वापस करवाए गए ।शेष राशि में से तीन लाख पचास हजार रूपये अभियुक्त कान्हा पिता श्रीकांत नाग उम्र 26 साल निवासी ए-92 सेक्टर 15 राउरकेला उड़िसा ने बंधन बैंक शाखा राउरकेला के खाता कं0 20200114404507 में ट्रांसफर कर लिया गया। जिसे अभियुक्त ने एटीएम के माध्यम से निकाल लिया गया था।इस प्रकरण में आरोपी कान्हा पिता श्रीकांत नाग उम्र 26 साल निवासी ए-92 सेक्टर 15 राउरकेला उड़िसा को गिरफ्तार किया गया हैं। आरोपी को न्यायालय पेश किया जाना शेष है। इस सायबर फ्रॉड मामले में नगर निरीक्षक गिरीश त्रिपाठी, उप निरीक्षक विवेक यादव, शहादत अली सहायक उपनिरीक्षक गणेश राय, आरक्षक अभिलाष भिलाला, प्रकाश, नंदकिशोर रजक एवं आरक्षक अजमेर आदि ने उल्लेखनीय योगदान दिया

संक्षिप्त समाचार

मेरा युवा भारत रायसेन द्वारा युवा पंजीयन एवं जागरूकता अभियान के तहत युवाओं को किया गया प्रेरित

रायसेन (निप्र)। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत संचालित मेरा युवा भारत जिला रायसेन द्वारा 1 जुलाई से 15 अगस्त 2026 तक चलाए जा रहे गहन युवा पंजीयन एवं जागरूकता अभियान के अंतर्गत आज उपनिदेशक श्रीमती मोनिका चौधरी ने जिले के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों का भ्रमण कर युवाओं को माई भारत पोर्टल पर पंजीयन कराने एवं राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता के लिए प्रेरित किया।भ्रमण के दौरान उपनिदेशक ने शासकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय रायसेन, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान रायसेन तथा स्वामी विवेकानंद उत्कृष्ट शासकीय महाविद्यालय, रायसेन में संबंधित संस्थानों के प्राचार्यों एवं अधिकारियों से भेंट कर युवा पंजीयन अभियान को व्यापक स्तर पर संचालित करने हेतु सहयोग का आग्रह किया। श्रीमती मोनिका चौधरी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि मेरा युवा भारत युवाओं को स्वयंसेवा, कौशल विकास, नेतृत्व विकास एवं राष्ट्र निर्माण से जुड़ने का सशक्त मंच प्रदान करता है। उन्होंने सभी पात्र युवाओं से माई भारत पोर्टल पर पंजीयन कर विभिन्न सामाजिक एवं राष्ट्रीय गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया। उन्होंने महाविद्यालय प्रशासन से भी अनुरोध किया कि अधिक से अधिक विद्यार्थियों को इस अभियान से जोड़ते हुए पंजीयन कराएं, जिससे जिले के युवाओं को केंद्र सरकार की विभिन्न युवा उन्मुख योजनाओं एवं अवसरों का लाभ प्राप्त हो सके। मेरा युवा भारत, जिला रायसेन द्वारा जिले के सभी विकासखण्डों में युवा पंजीयन एवं जागरूकता अभियान निरंतर संचालित किया जा रहा है।

वीसी के माध्यम से अपर कलेक्टर उपाध्याय ने की राजस्व प्रकरणों तथा सीएम हेल्पलाईन की समीक्षा

रायसेन (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बुधवार को आयोजित समीक्षा बैठक में अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय द्वारा राजस्व प्रकरणों, सीएम हेल्पलाईन, फार्मर रजिस्ट्री और जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों के निराकरण की तहसील और विकासखण्डवार समीक्षा की। उन्होंने नामांतरण, सीमांकन, बंटवारा आदि राजस्व प्रकरणों की समीक्षा करते हुए सभी एसडीएम और तहसीलदारों को समयाविध में निराकरण हेतु निर्देशित किया। इसी प्रकार सीएम हेल्पलाईन शिकायतों की भी समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि शिकायत प्राप्त होते ही नियमानुसार निराकरण की कार्यवाही की जाए। कोई भी शिकायत अधिक समय तक लंबित ना रहे। उन्होंने सभी एसडीएम से उन्हें भेजे गए जनसुनवाई के आवेदनों के निराकरण की कार्यवाही की जानकारी लेते हुए कहा कि जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों का गंभीरता से अंतिम निराकरण कराएं। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में डिप्टी कलेक्टर और संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। विकासखण्डों से एसडीएम, जनपद सीईओ और सीएमओ वीसी के माध्यम से बैठक में उपस्थित रहे।

कौशल, मेहनत और लगन ने दिलाई आत्मनिर्भरता की राह

विदिशा (निप्र)। मेरा नाम योगेश लोधी है। मैं शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान , विदिशा से वर्ष 2023-25 में इलेक्ट्रीशियन ट्रेड का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुका हूँ। बचपन से ही मेरी रुचि विद्युत उपकरणों एवं तकनीकी कार्यों में रही है। इसी रुचि को अपने करियर का आधार बनाते हुए मैंने आई.टी.आई. में प्रवेश लिया। प्रशिक्षण के दौरान मुझे विद्युत वायरिंग, घरेलू एवं औद्योगिक विद्युत स्थापना, मोटर इंस्टॉलेशन, ट्रांसफार्मर का परिचय, विद्युत सुरक्षा नियम, अर्थिंग, मीटरिंग सिस्टम, विद्युत दोषों की पहचान एवं उनके समाधान जैसे विषयों का व्यावहारिक एवं तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। संस्थान के अनुभवी प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन और आधुनिक प्रयोगशालाओं में नियमित अभ्यास से मेरे तकनीकी कौशल में निरंतर निखार आया। आई.टी.आई. में अध्ययन के दौरान केवल तकनीकी ज्ञान ही नहीं मिला, बल्कि अनुशासन, समय प्रबंधन, टीमवर्क, कार्य के प्रति जिम्मेदारी तथा समस्या समाधान जैसे महत्वपूर्ण गुण भी विकसित हुए। विभिन्न प्रायोगिक कार्यों एवं परियोजनाओं में सक्रिय भागीदारी से मेरा आत्मविश्वास और अधिक मजबूत हुआ। प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद मैंने रोजगार प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास किए। मेरे तकनीकी ज्ञान, मेहनत और आई.टी.आई. से प्राप्त कौशल के आधार पर मुझे मध्य प्रदेश विद्युत वितरण कंपनी, विदिशा में मीटर रीडर के पद पर कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। वर्तमान में मैं पूरी ईमानदारी, निष्ठा और जिम्मेदारी के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहा हूँ तथा 16,000 प्रतिमाह का वेतन प्राप्त कर रहा हूँ। आज मैं अपने परिवार की आर्थिक सहायता करने के साथ-साथ आत्मनिर्भर जीवन जी रहा हूँ।

विकसित औद्योगिक हब के रूप में आकर ले रहा है नर्मदापुरम जिला : प्रभारी मंत्री राकेश सिंह

प्रभारी मंत्री ने की जिला विकास सलाहकार समिति की बैठक में विकास कार्यों, प्राकृतिक खेती, सड़क, आपदा प्रबंधन, उद्योग एवं उपार्जन की विस्तृत समीक्षा क्षेत्र से जुड़ी समस्याओं का प्राथमिकता से किया जाए निराकरण

नर्मदापुरम (निप्र)। लोक निर्माण विभाग मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री श्री राकेश सिंह की अध्यक्षता में मंगलवार को जिला विकास सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन कलेक्टर कार्यालय के रेवासभा कक्षा में किया गया। प्रभारी मंत्री श्री सिंह ने जिले में संचालित विभिन्न विकास कार्यों एवं शासन की योजनाओं सहित कृषि, उद्योग, सड़क, आपदा प्रबंधन, उपार्जन, खाद वितरण सहित विभिन्न विभागों की प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की। प्रभारी मंत्री श्री सिंह ने उद्योग विभाग एवं एमपीआईडीसी द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में नर्मदापुरम को औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित करने की दिशा में प्रभावी प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आने वाले समय में नर्मदापुरम एक विकसित इंडस्ट्रियल हब के रूप में अपनी नई पहचान स्थापित करेगा। उन्होंने जिले में बासमती चावल के उत्पादन एवं निर्यात की विस्तृत कार्ययोजना तैयार कर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। बैठक मे नर्मदापुरम विधायक डॉ. सीतासरन शर्मा, राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया, सिवनी मालवा विधायक श्री प्रेमशंकर वर्मा, सोहागपुर विधायक श्री विजयपाल सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती राधा पटेल, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती नीतू यादव, जनपद पंचायत नर्मदापुरम अध्यक्ष श्री भूपेंद्र चौकसे, श्रीमती प्रीति शुक्ला, सुश्री राजो मालवीय, श्री पीयूष शर्मा, श्री माधव अग्रवाल सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। बैठक कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा, पुलिस अधीक्षक श्री सई कृष्ण एस. थोटा, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री हिमांशु जैन, वनमंडलाधिकारी श्री गौरव शर्मा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी भी मौजूद रहे। प्रभारी मंत्री ने मोहसा हासा-बाबई क्षेत्र में प्रस्तावित फूड पार्क के लिए पूर्व में आवंटित उन भूखंडों की समीक्षा करने के निर्देश दिए, जहां अब तक कार्य प्रारंभ नहीं हुआ है। ऐसे प्रकरणों में संबंधित संस्थाओं को नियमानुसार नोटिस जारी कर आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए। बैठक में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने पर विशेष जोर देते हुए प्रभारी मंत्री ने कहा कि किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए लगातार प्रोत्साहित किया जाए तथा उनके उत्पादों के विपणन के लिए बाजार उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने प्रत्येक पंचायत में प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों की जानकारी एवं संपर्क विवरण उपलब्ध कराने के निर्देश दिए, ताकि नागरिक सीधे उनसे उत्पाद खरीद सकें और किसानों को उचित मूल्य प्राप्त हो सके।

उन्होंने प्राकृतिक एवं जैविक खेती के नियमों, प्रमाणन प्रक्रिया तथा इसके लाभों के व्यापक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए। प्रभारी मंत्री ने कृषि विभाग को विकासखंड स्तर पर प्राकृतिक खेती संबंधी प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने तथा उनके व्यापक प्रचार-प्रसार के निर्देश दिए, जिससे अधिक से अधिक किसान इन शिविरों का लाभ उठा सकें। उन्होंने उप संचालक कृषि को इस संबंध में विस्तृत कार्ययोजना तैयार कर प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। आपदा प्रबंधन की समीक्षा के दौरान प्रभारी मंत्री ने वर्षा ऋतु में संभावित बाढ़ को देखते हुए संवेदनशील एवं डूब प्रभावित क्षेत्रों का पूर्व आकलन कर विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने बताया कि जिले में अति वर्षा की स्थिति और अन्य आपदा प्रबन्धन के अंतर्गत बचाव एवं जनजागरूकता के लिए शीघ्र ही एक नवाचार प्रारंभ किया जाएगा, जिसके माध्यम से नागरिकों को आवश्यक सावधानियों एवं सुरक्षा उपायों की जानकारी दी जाएगी।

जिले में प्रारंभ हुआ मूंग उपार्जन का कार्य

नर्मदापुरम (निप्र)। जिले में समर्थन मूल्य पर मूंग उपार्जन का विधिवत शुभारंभ बुधवार को इटारसी स्थित नीलम वेयरहाउस से किया गया। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने पूजा-अर्चना के साथ खरीदी प्रक्रिया का शुभारंभ किया तथा किसानों के साथ तौल कांटों का पूजन कर स्वयं बोरी उठाकर तौल कांटे पर रखी और उपार्जन की औपचारिक शुरुआत की।

शुभारंभ के उपरांत कलेक्टर श्री मिश्रा ने उपार्जन केंद्र का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने किसानों से चर्चा कर उनकी समस्याएं सुनीं तथा अधिकारियों को निर्देश दिए कि खरीदी प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी, व्यवस्थित एवं किसान हितैषी तरीके से संचालित की जाए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि किसानों को पंजीयन, तौल, परिवहन, भुगतान अथवा अन्य किसी प्रकार की असुविधा न हो तथा प्रत्येक समस्या का मौके पर ही त्वरित निराकरण सुनिश्चित किया जाए। कलेक्टर श्री मिश्रा ने बताया कि जिले में चरणबद्ध तरीके से सभी मूंग उपार्जन केंद्र प्रारंभ किए जा रहे हैं। वर्तमान में कुछ केंद्रों पर खरीदी शुरू हो चुकी है तथा गुरुवार शाम तक जिले के सभी उपार्जन केंद्र पूर्ण क्षमता के साथ संचालित होने लगेंगे।

उन्होंने बताया कि उपार्जन केंद्रों पर भंडारण की पर्याप्त व्यवस्था की गई है। जिन गोदामों में पर्याप्त स्थान उपलब्ध है, वहीं खरीदी कराई जा रही है ताकि किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो। वर्तमान में वर्षा ऋतु को देखते हुए विशेष सतर्कता बरती जा रही है। मूंग की बोरियों को सुरक्षित रखने के लिए तिरपाल, शेड एवं अन्य आवश्यक इंतजाम किए गए हैं, जिससे किसानों की उपज सुरक्षित रहे और उसकी गुणवत्ता बनी रहे। कलेक्टर श्री मिश्रा ने कहा कि जिला प्रशासन का उद्देश्य किसानों को सरल, पारदर्शी एवं समयबद्ध उपार्जन व्यवस्था उपलब्ध कराना है। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने तौल व्यवस्था, गुणवत्ता परीक्षण, भंडारण सहित अन्य व्यवस्थाओं का भी अवलोकन किया।

कार्यपालिक मजिस्ट्रेट एवं पुलिस बल की मौजूदगी में हुआ विवादित भूमि का सीमांकन

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता को जनसुनवाई कार्यक्रम में प्राप्त आवेदन पर त्वरित कार्रवाई करते हुए सिरोंज एसडीएम श्री हरिशंकर विश्वकर्मा ने बताया है कि अनुविभाग सिरोंज अंतर्गत ग्राम सांखला/दीपनाखेड़ा में लंबे समय से लंबित एक विवादित भूमि प्रकरण का सीमांकन कार्य प्रशासन की निगरानी में संपन्न कराया गया। आवेदक गणेशराम द्वारा प्रस्तुत आवेदन के आधार पर राजस्व विभाग ने नियमानुसार कार्रवाई करते हुए सीमांकन की प्रक्रिया पूरी की। सीमांकन कार्य के दौरान किसी भी प्रकार की अप्रिय स्थिति से बचने तथा शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से कार्यपालिक मजिस्ट्रेट नायब तहसीलदार श्री मायाराम यादव और पुलिस बल की उपस्थिति सुनिश्चित की गई। प्रशासनिक अधिकारियों की देखरेख में राजस्व अमले ने संबंधित भूमि का सीमांकन किया और मौके पर उपस्थित पक्षकारों को सीमाओं की जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि सीमांकन कार्य पूरी पारदर्शिता एवं राजस्व अभिलेखों के आधार पर किया गया है।

इस दौरान भूमि की वास्तविक स्थिति का परीक्षण कर निर्धारित सीमाओं का चिन्हांकन किया गया। प्रशासन ने दोनों पक्षों से कानून व्यवस्था बनाए रखने तथा राजस्व विभाग द्वारा किए गए सीमांकन का सम्मान करने की अपील की। स्थानीय ग्रामीणों ने प्रशासन द्वारा निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण ढंग से कराए गए सीमांकन कार्य की सराहना की। अधिकारियों ने कहा कि राजस्व संबंधी विवादों के त्वरित निराकरण के लिए प्रशासन लगातार प्रयासरत है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि विवादों को कम किया जा सके और आमजन को समय पर न्याय मिल सके।

बेतवा नदी में आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण के तीसरे दिन मॉक ड्रिल आयोजित

जवानों ने दिखाए रेस्क्यू कौशल

विदिशा (निप्र)। होमगार्ड, नागरिक सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन मुख्यालय, मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुपालन में जिला विदिशा में बंगला घाट स्थित बेतवा नदी पर 29 जून से 40 होमगार्ड एवं एसडीईआरएफ (स्ड्ढश्वक्रस्न) जवानों का विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। प्रशिक्षण का उद्देश्य आपदा की स्थिति में त्वरित एवं प्रभावी बचाव कार्यों के लिए जवानों को व्यावहारिक रूप से दक्ष बनाना है।

प्रशिक्षण के तृतीय दिवस पर प्रशिक्षकों द्वारा जवानों को जल आपदाओं के दौरान किए जाने वाले रेस्क्यू कार्यों की बारीकियों से अवगत कराया गया। प्रशिक्षण में नदी, बाढ़ एवं जलभराव जैसी परिस्थितियों में बचाव कार्यों के लिए आवश्यक तकनीकों, सुरक्षा उपायों तथा आधुनिक उपकरणों के उपयोग की जानकारी दी गई। कलेक्टर के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में प्लाटून कमांडर रश्मि दुबे के नेतृत्व में एक व्यापक मॉक ड्रिल का आयोजन भी किया गया। इस दौरान नाव पलटने की स्थिति, नदी के बीच टापू पर फंसे लोगों को सुरक्षित निकालने तथा डीप डाइविंग के माध्यम से खोज एवं बचाव कार्यों का प्रदर्शन किया गया। जवानों ने विभिन्न आपदा परिस्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया और समन्वित बचाव कार्यों का सफल प्रदर्शन कर अपनी दक्षता का परिचय दिया।

मॉक ड्रिल के दौरान अपर कलेक्टर श्री अनिल डामोर एवं एसडीएम श्री क्षितिज शर्मा उपस्थित रहे। उन्होंने आपदा प्रबंधन से संबंधित उपकरणों की जानकारी प्राप्त की तथा प्रशिक्षण गतिविधियों का अवलोकन किया। अधिकारियों ने बचाव कार्यों के लिए उपलब्ध संसाधनों, उपकरणों एवं जवानों की तैयारियों का जायजा लेते हुए आवश्यक निर्देश भी दिए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से जिले में आपदा प्रबंधन तंत्र को और अधिक मजबूत बनाने तथा आपातकालीन परिस्थितियों में त्वरित एवं प्रभावी राहत एवं बचाव कार्य सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। अधिकारियों ने उम्मीद जताई कि इस प्रशिक्षण से जवानों की क्षमता में वृद्धि होगी और वे किसी भी आपदा की स्थिति में बेहतर तरीके से अपनी सेवाएं प्रदान कर सकेंगे।

बच्चों को खेलकूद सामग्री वितरित कर एवं पौधारोपण कर मनाया डॉक्टर्स डे

सीहोर (निप्र) । नेशनल डॉक्टर्स डे के अवसर पर जिला अस्पताल में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये । इस दौरान डॉ आरके वर्मा एवं आईसीयू के स्टॉफ द्वारा सीपीआर प्रशिक्षण दिया गया । इसके साथ ही सभी डॉक्टर्स ने पौधारोपण किया, शपथ ली और स्कूली बच्चों को खेलकूद सामग्री वितरित की । इस अवसर पर सीएमएचओ डॉ. सुधीर कुमार डेहरिया, सिविल सर्जन डॉ. उमेश श्रीवास्तव, आईएमए प्रेसिडेंट डॉ. भारत भूषण आर्य, सचिव डॉ. सुनीता सिसोदिया, आर.एम.ओ. डॉ. हरिओम गुप्ता, डॉ. पुष्पा कन्नोजिया, डॉ. जय परमार सहित डॉक्टर्स एवं स्टाफ उपस्थित रहे ।

विदिशा में अवैध शराब का बड़ा जखीरा जब्त

विदिशा (निप्र) । कलेक्टर विदिशा श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन तथा जिला आबकारी अधिकारी श्री विकास त्रिपाठी के मार्गदर्शन में जिले में अवैध मदिरा के निर्माण, संग्रहण, परिवहन एवं विक्रय के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत आबकारी विभाग को बड़ी सफलता मिली है । आबकारी उपनिरीक्षक संजय इवने के नेतृत्व में वृत्त विदिशा 'अ' क्षेत्र में मुखबिर से प्राप्त सूचना के आधार पर दुर्गानगर चौराहा स्थित रेमण्ड शोरूम के पीछे एक मकान पर छापामार कार्रवाई की गई ।

जल गंगा संवर्धन अभियान का समापन

वेदनखेड़ी में हर्षोल्लास से मनाया गया बावड़ी उत्सव

विदिशा (निप्र)। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के विकासखंड गंजबासौदा द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान के समापन अवसर पर वेदनखेड़ी स्थित नृसिंह मंदिर की ऐतिहासिक बावड़ी पर भव्य 'बावड़ी उत्सव' आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों एवं वरिष्ठजनों की उपस्थिति में बावड़ी पूजन, दीप प्रज्वलन एवं आरती के साथ हुआ। आयोजन के माध्यम से जल स्रोतों के संरक्षण, संवर्धन एवं पर्यावरण संरक्षण का संदेश जन-जन तक पहुंचाया गया। कार्यक्रम में शामिल हुए अतिथियों ने कहा कि 'जल संरक्षण ही भविष्य की सुरक्षा है।' उन्होंने बताया कि विकासखंड स्तर पर जल संरक्षण संबंधी गतिविधियां तीन चरणों में संचालित की गईं। उन्होंने प्राचीन जल संरचनाओं के संरक्षण एवं संवर्धन पर बल देते हुए कहा कि इन्हें सुरक्षित रखना हमारी सांस्कृतिक धरोहर और आने वाली पीढ़ियों के प्रति जिम्मेदारी है। 19 मार्च से 30 जून तक चले जल गंगा संवर्धन अभियान के दौरान परिषद की ग्राम विकास प्रस्फुटन समितियों, नवांकुर संस्थाओं, परामर्शदाताओं एवं विद्यार्थियों द्वारा जल संरक्षण के लिए विभिन्न जागरूकता एवं श्रमदान गतिविधियां संचालित की गईं। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एसडीएम श्रीमती अनुभा जैन, नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती शशि यादव, श्री देवेन्द्र यादव, नगरपालिका उपाध्यक्ष श्री संदीप ठाकुर, मुख्य नगर पालिका अधिकारी (सीएमओ), जन अभियान परिषद की जिला समन्वयक श्रीमती पूजा श्रीवास्तव, ब्लॉक समन्वयक ममता राठौर सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

अतिथियों ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान समय में जल संरक्षण सबसे बड़ी आवश्यकता है और प्रत्येक व्यक्ति को जल की प्रत्येक बूंद के संरक्षण के लिए अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। अतिथियों ने कहा कि यह केवल 'बावड़ी उत्सव' नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए जल सुरक्षा सुनिश्चित करने का जन-जागरण अभियान है। इस अवसर पर सभी उपस्थितजनों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम के दौरान बावड़ी परिसर की विशेष स्वच्छता एवं आकर्षक सजावट की गई। रंगोली, दीपों एवं फूल-मालाओं से बावड़ी को सजाया गया। विशाल वैरागी ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधिवत बावड़ी पूजन कराया, जिसके पश्चात जल संरक्षण विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई।

पीएम श्री एयर एम्बुलेंस सेवा बनी जीवनदायिनी

ढाई माह की मासूम अवनी को मिला उच्चस्तरीय उपचार का अवसर

विदिशा (निप्र)। विदिशा जिले में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाने तथा गंभीर बीमारियों से पीड़ित बच्चों को समय पर उपचार उपलब्ध कराने की दिशा में एक सराहनीय पहल की गई है। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के मार्गदर्शन एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के निर्देशन में राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) के तहत ढाई माह की मासूम बच्ची अवनी को जीवनरक्षक उपचार उपलब्ध कराने के लिए पीएम श्री एयर एम्बुलेंस सेवा का लाभ दिलाया गया है। गंजबासौदा विकासखंड के अंतर्गत आने वाले ग्राम त्योंदा निवासी श्री वीरू कुशवाह की पुत्री अवनी गंभीर हृदय संबंधी बीमारी से पीड़ित है। बच्ची को पूर्व में मेडिकल कॉलेज भोपाल द्वारा उच्च चिकित्सा संस्थान में उपचार के लिए रेफर किया गया था। शीघ्र उपचार कराने की सलाह दी गई थी। आर्थिक एवं भौगोलिक चुनौतियों के बीच परिवार के लिए यह उपचार कराना कठिन प्रतीत हो रहा था, लेकिन स्वास्थ्य विभाग एवं आरबीएसके टीम के प्रयासों ने इस परिवार को नई उम्मीद प्रदान की। जानकारी के अनुसार 29 जून को बच्ची के पिता उपचार संबंधी सहायता प्राप्त करने के लिए जिला शीघ्र हस्तक्षेप केंद्र पहुंचे। वहां सोशल वर्कर द्वारा बच्ची का पंजीयन किया गया तथा मामले की गंभीरता को देखते हुए जिला शीघ्र हस्तक्षेप केंद्र के प्रबंधक को अवगत कराया गया। जांच एवं उपलब्ध चिकित्सकीय दस्तावेजों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि बच्ची को तत्काल उच्च स्तरीय विशेषज्ञ चिकित्सा की आवश्यकता है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को तत्काल जानकारी दी गई। उनके निर्देशन में वरिष्ठ अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर बच्ची को पीएम श्री एयर एम्बुलेंस सेवा के माध्यम से गुजरात स्थित यू. एन. मेहता अस्पताल, अहमदाबाद भेजने की कार्यवाही प्रारंभ की गई। आवश्यक स्वीकृतियों एवं व्यवस्थाओं को त्वरित गति से पूरा किया गया ताकि बच्ची को समय रहते उपचार मिल सके।

देर से दफ्तर आने वालों पर एक्शन लेगी सरकार

सीएम बोले-अधिकारी समय पर ऑफिस आएं, केन-मंदाकिनी नदी जोड़ों पर यूपी सरकार से होगी मीटिंग

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों के समय पर कार्यालय नहीं पहुंचने पर नाराजगी जताते हुए मंत्रालय में बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली लागू करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि जब सरकार ने कार्यदिवस में सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक कार्यालय में उपस्थित रहने की व्यवस्था निर्धारित कर दी है, तो उसका सख्ती से पालन किया जाना चाहिए।

मंत्रालय में विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य मंत्रालय, विंध्याचल और सतपुड़ा भवन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की समय पर उपस्थिति और रवानगी दर्ज करने के लिए बायोमेट्रिक अटेंडेंस की व्यवस्था की जाए। आवश्यकता पड़ने पर नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई भी की जाए।

बड़े मंदिरों में होमगार्ड की नियुक्ति- मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि प्रदेश के प्रमुख मंदिरों में महाकालेश्वर मंदिर की तर्ज पर होमगार्ड के पद सृजित किए जाएं और मंदिर समितियों के व्यय से उनकी नियुक्ति की व्यवस्था बनाई जाए। इसके साथ ही उन्होंने अग्निवीरों को मध्य प्रदेश पुलिस के विशेष सशस्त्र बल में आरक्षक पदों पर भर्ती में 20 प्रतिशत आरक्षण देने संबंधी प्रक्रिया को भी शीघ्र पूरा करने के निर्देश गृह विभाग को दिए।

पहले वरिष्ठ अधिकारी करें आदेश का पालन- उन्होंने अधिकारियों से कहा कि समय की पाबंदी सबसे पहले वरिष्ठ अधिकारी स्वयं अपनाएं और उसके बाद अधीनस्थ कर्मचारियों की नियमित मॉनिटरिंग करें। मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार की प्राथमिकता वाली योजनाओं और कार्यों को अभियान चलाकर समय-सीमा में पूरा करने के भी निर्देश दिए।

चित्रकूट और मंदाकिनी परियोजना पर जोर- मुख्यमंत्री ने कहा कि चित्रकूट के विकास कार्यों में तेजी लाई जाए। सती अनुसुईया मंदिर परिसर, मल्टी फैसिलिटी सेंटर और गुप्त गोदावरी मंदिर परिसर के निर्माण कार्य शीघ्र पूरे किए जाएं। उन्होंने बताया कि मंदाकिनी नदी जोड़ो परियोजना को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार सहमत है और जल्द ही दोनों राज्यों के बीच बैठक कर परियोजना को अंतिम रूप दिया जाएगा।

धार्मिक स्थलों पर सुविधाएं बढ़ाने की तैयारी- मुख्यमंत्री ने अमरकंटक, चित्रकूट, ओंकारेश्वर, महेश्वर, दतिया, ओरछा और मैहर जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों पर धर्मशाला, सराय, अन्न क्षेत्र, प्याऊ, पेयजल टंकी, अस्पताल और अन्य जनसुविधाओं के निर्माण को बढ़ावा देने के निर्देश दिए। इसके लिए धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं को रजिस्ट्री शुल्क में छूट, अनुदान अथवा अन्य रियायतें देने की संभावनाएं तलाशने को कहा।

भेल की अनुपयोगी जमीन वापस लेने के निर्देश- मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड को आवंटित अनुपयोगी सरकारी भूमि वापस लेने के लिए केंद्रीय भारी उद्योग मंत्रालय से समन्वय किया जाए।

उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड के रासायनिक कचरे से मुक्त हो चुके क्षेत्र में एक भव्य स्मारक विकसित करने की कार्ययोजना तैयार की जाए। इसके लिए गुजरात के भुज स्थित संग्रहालय का अध्ययन कर प्रस्ताव तैयार करने को कहा गया।

विकास परियोजनाओं में तेजी लाने के निर्देश

मुख्यमंत्री ने चित्रकूट और ममलेश्वर के विकास के लिए आवश्यक भूमि उपलब्ध कराने, रामवन गमन पथ परियोजना एवं श्रीकृष्ण पाथेय परियोजना को समय-सीमा में पूरा करने तथा उज्जैन में नए हवाई अड्डे के निर्माण की प्रक्रिया तेज करने के निर्देश भी दिए। बैठक में बताया गया कि नए हवाई अड्डे के लिए भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है और जल्द ही निर्माण कार्य का भूमिपूजन कराया जाएगा।

लेडी डॉक्टर-नर्स से बैड टच नेता पर एफआईआर

मेडिकल कॉलेज स्टाफ बोला- गोली मारने की धमकी दी थी, डॉक्टर बोले- खतरे में हमारी जान

सागर (नप्र)। मध्य प्रदेश के सागर के बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज में बीजेपी नेता श्रीवास्तव ने महिला स्टाफ से बदसलूकी की है। बीजेपी नेता पर लेडी डॉक्टर,नर्सिंग स्टाफ को बैड टच करने और गोली मारने की धमकी देने का आरोप है। विरोध में डॉक्टर्स और नर्सिंग स्टाफ ने काम बंद कर अस्पताल के मुख्य गेट पर चक्काजाम कर दिया।

डॉक्टर्स और नर्सिंग स्टाफ ने भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्रीवास्तव की गिरफ्तारी की मां को लेकर प्रदर्शन किया। अस्पताल में सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने की मांग की। प्रदर्शन की सूचना मिलते ही पुलिस, प्रशासन और बीएमसी प्रबंधन के अधिकारी मौके पर पहुंचे। आश्वासन के बाद प्रदर्शन समाप्त हुआ। बवाल के बाद पुलिस ने भाजपा नेता के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है।

रात 2 बजे मरीज को लेकर शुरू हुआ विवाद- पीड़िता ने बताया- गुरुवार रात करीब 2 बजे लक्ष्मी तिवारी नाम की मरीज को इलाज के लिए बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज लाया गया था। मरीज के अस्पताल पहुंचने से पहले ही इलाज को लेकर लगातार फोन आने लगे थे। इलाज के दौरान मरीज के साथ आए दो लोगों ने अभद्र व्यवहार शुरू कर दिया।

पीड़िता के मुताबिक, विरोध करने पर उन्होंने नर्सिंग स्टाफ को धमकी दी। महिला स्टाफ का आरोप है कि एक व्यक्ति ने उनके साथ बैड टच किया। अस्पताल के बाहर देखकर गोली मारने की धमकी भी दी। धमकी देने वाला व्यक्ति अनिल पीपरा (अनिल श्रीवास्तव) है।

पुलिस पहुंची, लेकिन कार्रवाई नहीं होने का आरोप- महिला स्टाफ का कहना है कि घटना की सूचना रात में ही पुलिस और बीएमसी प्रबंधन को दे दी गई थी। पुलिस अस्पताल भी पहुंची, लेकिन उससे पहले अस्पताल के सुरक्षा कर्मियों ने मरीज और उसके साथ आए लोगों को बाहर भेज दिया था। स्टाफ का आरोप है कि पुलिस बिना किसी कार्रवाई के लौट गई। अस्पताल में ड्यूटी कर रही महिला कर्मचारियों की सुरक्षा खतरे में है। अगर अस्पताल में ही स्टाफ सुरक्षित नहीं रहेगा तो मरीजों का बेहतर इलाज भी प्रभावित होगा।

डॉक्टरों ने रखीं तीन प्रमुख मांगें

बीएमसी के जूडा अध्यक्ष डॉ. व्योमकृष्ण तिवारी ने कहा कि अस्पताल में तैनात महिला डॉक्टर और महिला स्टाफ खुद को सुरक्षित महसूस नहीं कर रहे हैं। अस्पताल में डॉक्टरों और पूरे स्टाफ की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए तथा पर्याप्त सुरक्षा गार्ड तैनात किए जाएं। आरोपियों को जल्द गिरफ्तार कर उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए। अस्पताल परिसर में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए प्रभावी सुरक्षा व्यवस्था लागू की जाए। अगर मांगें पूरी नहीं हुईं तो प्रदेश स्तर पर बड़ा आंदोलन किया जाएगा।

24 घंटे में कार्रवाई नहीं हुई तो प्रदेशव्यापी कार्य बहिष्कार की चेतावनी

जूनियर डॉक्टर्स एसोसिएशन मध्य प्रदेश ने महिला डॉक्टर के साथ कथित अभद्रता, मारपीट और जान से मारने की धमकी की घटना की कड़ी निंदा की है। संगठन ने कॉलेज प्रबंधन और पुलिस प्रशासन के रवैये पर सवाल उठाते हुए कहा कि इस तरह की घटनाओं से डॉक्टरों का मनोबल प्रभावित हो रहा है। जेडीए ने मांग की है कि 24 घंटे के भीतर एफआईआर दर्ज कर आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। साथ ही मामले को दबाने के आरोप में कॉलेज के डीन की जिम्मेदारी तय करने की भी मांग की गई है। संगठन ने चेतावनी दी है कि अगर तय समय में कार्रवाई नहीं हुई तो प्रदेशभर में कार्य बहिष्कार किया जाएगा।

परिवहन किराए में छूट को लेकर कमिश्नर को दिखाया आईना

दिव्यांगों को बस किराए में 50 प्रतिशत छूट नहीं, दिव्यांगजन आयुक्त ने ट्रांसपोर्ट कमिश्नर को लिखी चिट्ठी

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में परिवहन महकमे के अफसरों की मनमानी से सरकार के आदेश के बाद भी दिव्यांगजनों को बसों के किराए में 50 प्रतिशत छूट नहीं मिल रही है। सिर्फ कागजों में आदेश जारी है और बस संचालक छूट देने से मना कर रहे हैं क्योंकि कभी बसों की औचक जांच में इस ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। इसलिए दिव्यांगजन आयुक्त ने परिवहन आयुक्त को पत्र लिखकर कहा है कि सिर्फ छूट दिए जाने का आदेश ही नहीं, इसके लिए जांच पड़ताल कर दिव्यांगों को इसका लाभ दिलाने का काम भी किया जाए।

आयुक्त दिव्यांगजन डॉ. अजय खेमरिया ने परिवहन आयुक्त को लिखे पत्र में कहा है कि परिवहन विभाग द्वारा दिव्यांगजनों को बस किराए में 50 प्रतिशत छूट देने के आदेश पहले ही जारी किए जा चुके हैं, जो दिव्यांगजनों के प्रति सरकार की संवेदनशीलता को दर्शाते हैं। दिव्यांगजन आयुक्त कार्यालय को लगातार शिकायतें मिल रही हैं कि प्रदेश के कई निजी बस संचालक इन आदेशों का पालन नहीं कर रहे हैं।

दिव्यांग यात्रियों से अभद्र व्यवहार किया- शिकायतों के अनुसार कई स्थानों पर दिव्यांग यात्रियों द्वारा किराए में छूट की मांग करने पर उनके साथ अभद्र व्यवहार किया जा रहा है। इतना ही नहीं, जिन बसों में ऑनलाइन टिकट बुकिंग की सुविधा उपलब्ध है, वहां भी दिव्यांगजनों के लिए किराए में छूट का विकल्प नहीं दिया गया है, जिसके कारण उन्हें पूरा किराया चुकाना पड़ रहा है।

जेवरों से लदी दुल्हन ब्यूटी पार्लर गई फिर नहीं लौटी

जबलपुर पुलिस से बोला- मैं बाहर बैठा रहा, वो किस रास्ते से निकली नहीं पता, उसे ढूंढ दीजिए

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर जिले में शादी के महज तीन दिन बाद दुल्हन के रहस्यमय तरीके से लापता होने का मामला सामने आया है। आरोप है कि नवविवाहिता करीब तीन लाख रुपए के सोने-चांदी के जेवर पहनकर घर से निकली और फिर वापस नहीं लौटी। परेशान पति ने गोसलपुर और बरेला थाने में शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस दोनों थानों के समन्वय से उसकी तलाश कर रही है।

परिवार की रजामंदी से हुई थी शादी- गोसलपुर निवासी गौतम यादव मजदूरी करते हैं। उसने बताया कि परिवार की सहमति से उनकी शादी बरेला क्षेत्र निवासी चौहानी यादव से तय हुई थी। 21 जून को बारात बरेला गई और 22 जून को दुल्हन की विदाई के बाद वह अपने ससुराल से घर आ गई। गौतम के मुताबिक शादी के अगले दिन पत्नी ने अपनी मौसी की शादी में जाने

की बात कही, जिस पर वह उसे लेकर बुढ़ागर पहुंचे। इसके बाद उसने बंजारी माता मंदिर में पूजा करने चलने की इच्छा जताई।

स्टूडियो के बहाने गई, फिर नहीं लौटी- गौतम यादव का आरोप है कि बाजार पहुंचने पर पत्नी ने कहा कि पहले स्टूडियो से शादी की तस्वीरें ले लेते हैं। स्टूडियो पहुंचने के बाद उसने यह कहकर पति को वहीं बैठने के लिए कहा कि वह पास के ब्यूटी पार्लर से 10 मिनट में लौट आएगी। करीब आधे घंटे तक इंतजार करने के बाद भी जब वह वापस नहीं आई तो गौतम ने उसकी तलाश शुरू की। आसपास खोजबीन करने के साथ ही ससुराल पक्ष से भी संपर्क किया, लेकिन उसका कोई पता नहीं चला। इसके बाद उन्होंने पुलिस से शिकायत की।

तीन लाख के जेवर पहनकर निकली थी- गौतम का कहना है कि शादी में उनकी पत्नी को करीब तीन लाख रुपए के सोने-चांदी के जेवर दिए गए थे। इनमें पायल, बिछिया, करधनी, मंगलसूत्र, कंगन और अन्य आभूषण शामिल थे। आरोप है कि वह सभी जेवर पहनकर घर से निकली थी और अब तक वापस नहीं लौटी।

बुआ के माध्यम से तय हुआ था रिश्ता

गौतम ने बताया कि उनकी बुआ बुढ़ागर में रहती हैं। उनके माध्यम से दोनों परिवारों का संपर्क हुआ था। करीब दो माह पहले दोनों परिवार मिले, लड़का-लड़की ने एक-दूसरे को पसंद किया और परिवारों की सहमति से जून में विवाह संपन्न हुआ।

पुलिस कर रही तलाश

बरेला थाना प्रभारी संगीता सिंह ने बताया किगौतम यादव की शिकायत प्राप्त हुई है। शिकायत के अनुसार, 21 जून को उनकी शादी हुई थी और 24 जून से उनकी पत्नी लापता है। मामले में गुमशुदगी दर्ज कर गोसलपुर थाना पुलिस के साथ समन्वय बनाकर उसकी तलाश की जा रही है। पुलिस का कहना है कि महिला की तलाश के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। मामले के सभी पहलुओं की जांच की जा रही है और जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

गाडरवारा में रिटायर्ड सीएमओ निकला करोड़पति

ईओडब्ल्यू छापे में मकान-दुकान, प्लाट समेत थार, गोल्ड देखकर अधिकारी हैरान

नरसिंहपुर (नप्र)। एमपी में ईओडब्ल्यू की कार्रवाई में नगरीय प्रशासन विभाग का एक रिटायर्ड सहायक निरीक्षक करोड़पति निकला है। उसने लखनादौन सहित अन्य जगह प्रभारी सीएमओ रहते हुए लाखों-करोड़ों की बेनामी संपति अर्जित की है। शिकायत के बाद शुक्रवार सुबह गाडरवारा स्थित उसके आवास पर टीम ने दबिश दी थी।

जानकारी अनुसार जिले के गाडरवारा में शुक्रवार सुबह आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ जबलपुर की टीम ने बड़ी कार्यवाही करते हुए नगर पालिका के सेवानिवृत्त सहायक निरीक्षक योगेंद्र ढिमोले के निवास पर छापा मारा। आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने की शिकायत की जांच के बाद विशेष न्यायालय से तलाशी वारंट प्राप्त कर ईओडब्ल्यू की टीम ने सर्च ऑपरेशन शुरू किया। जिस्से क्षेत्र में सनसनी फैल गई।

गाडरवारा में करीब 15 से 20 सदस्यीय ईओडब्ल्यू टीम सुबह एमपीईबी कॉलोनी स्थित योगेंद्र ढिमोले के घर पहुंची। टीम में महिला पुलिसकर्मी भी शामिल हैं। अधिकारियों ने दस्तावेजों की जांच के साथ संपत्तियों और अन्य वित्तीय रिकॉर्ड का सत्यापन शुरू किया। कार्रवाई के दौरान घर के बाहर लोगों की भीड़ भी जुटी रही।

लग्जरी मकानों सहित करोड़ों की प्रॉपर्टी-संपत्ति मिली- डीएसपी के अनुसार जांच के दौरान आय से अधिक संपत्ति के पर्याप्त साक्ष्य मिलने पर विशेष न्यायालय नरसिंहपुर से तलाशी वारंट प्राप्त किया गया। प्रारंभिक जांच में गाडरवारा स्थित दो प्लॉटों पर निर्मित आवास, लखनादौन में एक मकान, एक खाली प्लॉट, दो कृषि भूमि, बेटे के नाम पर एक दुकान, एक कार, एक थार वाहन, तीन मोटरसाइकिलें, एक ट्रैक्टर-ट्रॉली तथा मिक्सर मशीन सहित अन्य संपत्तियों की जानकारी सामने आई है।

संपत्ति और सोने-चांदी के जेवरातों का मूल्यांकन चल रहा- ईओडब्ल्यू टीम इन सभी संपत्तियों का मूल्यांकन कर रही है। इसके अलावा घर से मिले नकदी और आभूषणों का भी आकलन किया जा रहा है। अधिकारियों का कहना है कि संपत्तियों और अन्य परिसंपत्तियों का अंतिम मूल्यांकन पूरा होने के बाद ही आय से अधिक संपत्ति का वास्तविक आंकड़ा स्पष्ट हो सकेगा।

फिलहाल ईओडब्ल्यू की कार्रवाई जारी है और देर शाम तक विस्तृत जानकारी सामने आने की संभावना है।

लखनादौन में पोस्टिंग के दौरान आय से अधिक संपति जुटाई

ईओडब्ल्यू के डीएसपी मनजीत सिंह ने बताया कि योगेंद्र ढिमोले पूर्व में लखनादौन में मुख्य नगर पालिका अधिकारी का प्रभार संभाल चुके हैं। बाद में उनका स्थानांतरण गाडरवारा हुआ था और अप्रैल 2026 में वे सेवानिवृत्त हुए हैं। उनके खिलाफ लखनादौन में पदस्थापना के दौरान आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने की शिकायत प्राप्त हुई थी, जिसकी जांच ईओडब्ल्यू द्वारा की जा रही थी।

मेरे बेटे को न्याय नहीं मिला तो सोनम जैसी औरतें अपराध करती रहेंगी

राजा रघुवंशी की मां ने कहा- उसे सुप्रीम कोर्ट जेल भेज दे

इंदौर (नप्र)। राजा रघुवंशी केस में सुप्रीम कोर्ट ने सोनम रघुवंशी की जमानत रद्द करने से इनकार कर दिया है। इसके बाद राजा की मां उमा रघुवंशी की प्रतिक्रिया आई है। उन्होंने कहा कि मैं सुप्रीम कोर्ट से गुजारिश करती हूं कि इस मामले में फैसला सुनाए और सोनम को जेल भेजे, ताकि राजा को न्याय मिल सके। मैं मोहन यादव और मोदी सरकार से सीबीआई जांच और मामले में जल्द फैसला सुनाने की अपील करती हूं। अगर मेरे बेटे को न्याय नहीं मिला तो सोनम जैसी औरतें ऐसे अपराध करती रहेंगी। वहीं, राजा के भाई सचिन रघुवंशी ने कहा कि हमें उम्मीद है कि सुप्रीम कोर्ट हमें राहत देगा। हम शुरू से ही सीबीआई जांच की मांग कर रहे हैं। पुलिस की गलतियों और जांच में कमियों के कारण हमें अभी तक न्याय नहीं मिला है।

ऐप से 'हैक' हो रहे ई-रिक्शे

चालक बोले-किस्त भरें या रोजी कमाएं? दावा- सैकड़ों वाहन प्रभावित, मैकेनिकों के पास लग रही लाइन

भोपाल (नप्र)। शहर में ई-रिक्शा चालकों की मुश्किलें लगातार बढ़ रही हैं। मोबाइल ऐप के जरिए बैटरी मैनेजमेंट सिस्टम (बीएमएस) से छेड़छाड़ कर ई-रिक्शों को बीच रास्ते में बंद किए जाने की शिकायतें सामने आ रही हैं। पिछले कुछ दिनों से शहर के अलग-अलग इलाकों में चालक अचानक वाहन बंद होने से परेशान हैं। इससे न सिर्फ उनकी रोजी-रोटी प्रभावित हो रही है, बल्कि सवारियों को भी बीच रास्ते में उतरना पड़ रहा है।

बुधवारा निवासी ई-रिक्शा चालक तनवीर मोहम्मद खान ने बताया कि बुधवार दोपहर करीब डेढ़ बजे वीआईपी रोड पर उनके ई-रिक्शे में छोटे-छोटे बच्चे सवार थे। इसी दौरान वाहन अचानक बंद हो गया। उन्होंने बताया कि रिक्शा चालू नहीं हुआ तो उसे धक्का देकर ले जाना पड़ा। बाद में लॉक खोलने के नाम पर उनसे 200 रुपए लिए गए।

तनवीर का कहना है कि एक ही दिन में उनका ई-रिक्शा चार बार बंद हो चुका है। वे बैंक की करीब आठ हजार रुपए मासिक किस्त भरते हैं, लेकिन इस तरह वाहन बार-बार बंद होने से कमाई प्रभावित हो रही है। उनका कहना है कि जब गाड़ी ही नहीं चलेगी तो बैटरी की किस्त कैसे चुकाई जाएगी।

उन्होंने दावा किया कि शहर में बड़ी संख्या में ई-रिक्शे इसी समस्या से जूझ रहे हैं। उनके अनुसार मैकेनिकों के यहां वाहनों की लंबी कतारें लगी हुई हैं। जिन लोगों को ऐप के जरिए सिस्टम संचालित करना आ गया है, वे वाहन बंद और चालू कर रहे हैं, जबकि बाकी चालक परेशान होकर इधर-उधर भटक रहे हैं।

वहीं रेतघाट पर मिले चालक फरान मोहम्मद खान ने बताया कि सवारी छोड़ने के बाद उनका ई-रिक्शा अचानक बंद हो गया। वे करीब 10 मिनट तक सड़क किनारे खड़े रहे। फरान के मुताबिक दिन में तीन से चार बार और रात में भी कई बार उनके साथ यही घटना हो चुकी है।

उन्होंने बताया कि पहले उन्होंने मुख्य एमसीबी बंद कर दोबारा चालू करने की कोशिश की, जिससे कुछ समय के लिए वाहन चल पड़ा, लेकिन थोड़ी देर बाद फिर बंद हो गया। बाद में किसी ने सिस्टम अनलॉक किया, तब जाकर ई-रिक्शा दोबारा चल सका।

गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध है बीएटी बीएमएस एप

जानकारी के अनुसार बीएटी बीएमएस ऐप गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध है। ब्लूटूथ ऑन होने पर यह ऐप आसपास मौजूद कुछ ई-रिक्शा के बीएमएस को खोज लेता है। यदि सिस्टम पासवर्ड से सुरक्षित नहीं है, तो उससे जुड़े कुछ नियंत्रण विकल्प मिल सकते हैं। पुलिस जांच कर रही है कि संबंधित ई-रिक्शा मॉडलों में सुरक्षा संबंधी क्या खामियां थीं और आरोपी ने उनका तकनीकी रूप से कैसे दुरुपयोग किया।

आपसी सहमति से बने संबंध, पीएचई के बाबू को ब्लैकमेल करने लगी नौकरानी

वीडियो दिखाकर एक करोड़ की डिमांड की तो पुलिस ने किया गिरफ्तार

अशोकनगर (नप्र)। मध्य प्रदेश के अशोकनगर जिले में हनीट्रैप का सनसनीखेज मामला सामने आया है। यहां पीएचई विभाग में पदस्थ एक बाबू ने घर पर खाना बनाने के लिए नौकरानी को रखा था। बाबू को नौकरानी लंबे समय से ब्लैकमेल कर रही थी। शिकायत के बाद पुलिस ने महिला को गिरफ्तार कर लिया है।

वीडियो वायरल करने की धमकी- गुरुवार को पीएचई विभाग में पदस्थ फरियादी मोहित मांझी (उम्र 31 वर्ष), निवासी न्यू हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी ने ऑनलाइन पुलिस से शिकायत दर्ज कराई। शिकायत में कहा कि एक महिला उसके निजी वीडियो वायरल करने और दुष्कर्म के झूठे प्रकरण में फंसाने की धमकी दे रही है। साथ ही लगातार उससे लगातार पैसे की मांग कर रही है।

पुलिस ने दर्ज किया केस- शिकायत के आधार पर पुलिस ने महिला के खिलाफ अपराध क्रमांक 408/2026 अंतर्गत धारा 308 (2) भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर जांच शुरू की। मामले की गंभीरता को देखते हुए अशोकनगर एसपी राजीव कुमार मिश्रा ने थाना प्रभारी कोतवाली को त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए। इसके बाद ब्लैकमेल करने वाली महिला को तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया।

खाना बनाने आती थी महिला- कोतवाली थाना प्रभारी रवि प्रताप सिंह चौहान के अनुसार शिकायत मिलने के बाद मामले की जांच शुरू कर दी गई है। शुरुआती जांच में ब्लैकमेलिंग और मानसिक प्रताड़ना जैसी बात सामने आई हैं। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

आपसी सहमति से बनाए संबंध

अशोकनगर पुलिस ने बताया कि महिला बाबू के घर पर खाना बनाने आती थी। कुछ दिनों बाद दोनों की आपसी सहमति से संबंध हो गए और फिर एक दिन महिला ने अश्लील वीडियो बना लिया। इसे दिखाकर वह लगातार ब्लैकमेल कर रही थी। डेढ़ साल में 3 लाख रुपए सरकारी कर्मचारी से ले चुकी है और 1 करोड़ मांग रही थी।

आगे की जांच जारी- पुलिस मामले में आगे की जांच कर रही है। कोर्ट में पेशी के बाद पुलिस महिला को रिमांड पर लेगी। साथ ही यह भी जांच करेगी कि क्या उसने किसी अन्य व्यक्ति को भी ट्रैप किया है क्या।